सत्यमेव जयते

नागरिक

अंक — 02 अवधि—छमाही वर्ष 2016

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अध्यक्षीय कार्यालय : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 58 वीं बैठक

संपादक मंडल के सदस्यगण

मुख्य संपादक

श्री राम किशोर शर्मा
पुनर्वास अधिकारी
विकलांग व्यावसायिक पुनर्वास केंद्र

संपादक

श्री नितन जैन
सदस्य-सचिव
नराकास भुवनेश्वर(के.)

श्री वेंकट राजू
हिंदी अधिकारी
सी.एस.आई.आर- आई.एम.एम.टी

श्रीमती आशाष घोष
वरि.हिंदी अनुवादक
प्रधान मुख्य आयकर कार्यलय

श्रीमती नमिता कर
वरि.हिंदी अनुवादक
केंद्रीय उत्पाद सीमा शुल्क

श्री यशवंत कुमार वर्मा
कनि. हिंदी अनुवादक
प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा

श्री सुंदर लाल साव
कनि.हिंदी अनुवादक
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं.हक.)

श्री लोकेश लाल
कनि. हिंदी अनुवादक
प्रधान महालेखाकार (सा. एवं.सा.क्षे.ले.)

श्री सुधार कु. मिश्र
कनि.हिंदी अनुवादक
केंद्रीय जल आयोग

नागरीक नागरिक NAGRIK

संयोजक

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

अंक – 3
वर्ष–2016

अनुक्रमणिका

- सचिव, राजभाषा का संदेश
- उपनिदेशक (कार्यान्वयन) का संदेश
- अध्यक्ष, नराकास का संदेश
- प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक, भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर का संदेश
- मुख्य संपादक की कलम से
- संपादकीय
- राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु जाँच बिंदु
- 58वीं बैठक का कार्यवृत्त
- राजभाषा का कार्यान्वयन : समस्याएं एवं समाधान
- सुख और दुःख
- मित्रवर मजदूर
- अभिवादन बना वरदान
- नारी जीवन
- मैं और मेरी कविता
- बंधन
- विहग की भविष्यवाणी
- प्यार का इम्तिहान
- जिंदगी तुम कब वापस आओगे
- भुवनेश्वर : पर्यावरणीय समस्याएं एवं समाधान
- राष्ट्रीय कैरियार सेवा (एन.सी.एस.): रोज़गार के अवसर के माध्यम से बेहतर आर्थिक स्थित के लिए एक पहल
- मेरा बचपन
- सुभाष चंद्र बोस

मुख्य संरक्षक

प्रो. आर.वी. राज कुमार
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
भुवनेश्वर एवं

संरक्षक

डॉ. राज कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक, एसईओसीएस एवं
प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक,

मुख्य संपादक

श्री राम किशोर शर्मा,
विकलांग अधिकारी, वीआरसीएच

संपादक

श्री नितिन जैन
सदस्य-सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अभिकल्प
श्रीमती निबेदिता पट्टनायक एवं
श्री नितिन जैन
भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

सूचना

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं एवं लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकारों के अपने हैं। इनसे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

- हकीकत
- आशा की किरण
- नराकास की गतिविधियाँ
- भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी
- सुभाष चंद्र बोस
- नकारात्मक सोच को कैसे करें सकारात्मक
- महात्मा गांधी जी का एकादश व्रत
- स्वच्छता एक मानवीय रूपांतरण
- शिक्षक दिवस
- ज्ञान वाटिका
- हमारी प्यारी हिंदी
- हिंदी और संगीत का अद्भुत संगम
- पर तुम न आएं
- कलम के आँसू-कलाम
- अनुभव
- आरज़ू
- जरा सूरत हमें दिखा जाना
- इतिहास को वापस लाएंगे
- रक्षा बंधन
- मंगलजोडी—पक्षियों के लिए स्वर्ग
- सदस्य कार्यालयों की गतिविधियाँ
- पावन नगरी के लोग
- निंदी अच्छी है
- अक्ल बाँटने लगा विधाता
- मेहनत
- प्यारी माँ
- भगवान जगन्नाथ की पतितपावन रथयात्रा
- दहेज़ प्रथा
- लैंगिक असमानता
- भारतीय सेना
- महिला सशक्तिकरण
- जिंदगी

निशुल्क वितरण के लिए

- मनु की उलझन
- माँ तेरी जैसी कोई नहीं
- माँ
- मेहनत
- भेदिए
- हँसना मना है
- क्या कहती थी तेरी ये आँखे
- दिल के करीब
- तकनीकी शिक्षा
- ऐहसास ए दर्द
- अस्तित्व की तलाश
- बूंद
- ऐ इंसान तू किस और चला जा रहा है
- मत्यु के बाद
- पिता का संदेश
- पाँच गठरियाँ
- सोशल मीडिया एक अभिशाप या वरदान
- जनता
- राजभाषा प्रश्नमंच

पत्र व्यवहार का पता :- श्री नितिन जैन, संपादक, नागरिक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर, सामंतपुरी, होटल स्वस्ति प्लाज़ा के पीछे, भुवनेश्वर—751013, दूरभाष— 0674 2576015 ई-मेल— tolicbbsr@gmail.com एवं nitin@iitbbs.ac.in

अनूप कुमार श्रीवास्तव
सचिव
Anoop Kumar Srivastava
Secretary
Tel: 23438266 Tele fax: 23438267
E-mail— secy-ol@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय,
तृतीय तल, एन.डी.सी.सी. - II भवन,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली—110001

11014/08/2016- रा.भा. (प.)

दिनांक - 11 अगस्त 2016

संदेश

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर द्वारा ई-पत्रिका "नागरिक" का प्रकाशन किया जा रहा है।

आज का युग विज्ञान और तकनीकी का युग है, जिसका प्रभाव राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी देखा जा रहा है। तकनीक के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी का वर्चस्व बढ़ रहा है जिसका प्रमाण ई-पत्रिका के रूप में हम सब के सामने है। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी ने काफी प्रगति की है, परंतु अभी भी एक लंबी यात्रा तय करनी है। इसके लिए आवश्यक है कि समय के साथ प्रचार-प्रसार के माध्यमों में भी परिवर्तन किया जाए। नराकास भुवनेश्वर द्वारा ई-पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है।

मैं ई-पत्रिका "नागरिक" के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

अनूप कुमार श्रीवास्तव

(अनूप कुमार श्रीवास्तव)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र)

संदेश

24/2/2015-क्षे.का.का.(कोल)/2666 **दिनांक**—27.07.2016

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर द्वारा अपनी पत्रिका **"नागरिक"** के माध्यम से सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में अत्यंत सराहनीय कार्य किया जा रहा है।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा इसकी उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं देता हूँ। मुझे पूरी आशा है कि भविष्य में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर द्वारा ऐसे प्रयास किए जाते रहेंगे।

(डॉ. अजय मलिक)
उप निदेशक (कार्यान्वयन)

अध्यक्ष की कलम से...

प्रिय साथियों,

आप सभी को जानकर यह प्रसन्नता होगी कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर पहली बार ई-माध्यम से अपनी छमाही पत्रिका " नागरिक" का प्रकाशन करने जा रही है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का प्रमुख उद्देश्य सदस्य कार्यालयों के बीच आपसी समन्वयन एवं सहयोग के माध्यम से भारत सरकार की राजभाषा नीतियों का अनुपालन सुनिश्चित कर नराकास भुवनेश्वर के गठन की सार्थकता सिद्ध करना है।

आज तकनीकी का युग है और हिंदी हर तरह से तकनीकी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में सक्षम है। भाषा प्रौद्योगिकी की आवश्यकतानुसार आज समय की मांग है कि सूचनाओं का आदान प्रदान भी द्रुत गति से किया जा सके। इसी क्रम में हमनें नराकास भुवनेश्वर की वेबसाइट का निर्माण करने का प्रयास किया ताकि सदस्य कार्यालयों के बीच राजभाषा के कार्यान्वयन से संबंधी सूचनाएं द्रुत गति से उपलब्ध कराई जा सके।

राजभाषा के सर्वांगीण विकास में नराकास भुवनेश्वर द्वारा ई- पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों की पुष्पित एवं पल्लवित रचनाएं और प्रखर विचार इस पत्रिका की गरिमा को अवश्य बढ़ाने में सहायक होंगे। यह पत्रिका जहाँ सदस्य कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों/ कर्मचारियों/ छात्रों की लेखन शैली को एक मंच प्रदान करती है वहीं दूसरी और पाठकों के लिए प्रेरणादयी तथा रोचक तथ्यों के साथ उनका ज्ञानवर्धन करती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका समिति के सभी सदस्य कार्यालय के कार्मिकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

राज कुमार

प्रो. आर. वी. राज कुमार
अध्यक्ष, नराकास भुवनेश्वर (के.)
निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर की ई-पत्रिका "नागरिक" के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका के प्रकाशन से नराकास भुवनेश्वर के सदस्य कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा और मौलिक चिंतन को निरंतर बढ़ावा मिलेगा।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। जिस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा अथवा राजभाषा होती है उसी प्रकार हमारे देश की राजभाषा हिंदी है। केंद्र सरकार के कार्यालयों के कर्मचारी होने के नाते हम सभी का नैतिक दायित्व है कि हम अपने कार्यालयीन कामकाज में इसका प्रयोग बढ़ाएं।

हमारा देश बहुभाषी देश है और यहाँ लगभग 1500 से अधिक बोलियाँ बोली जाती है। हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सभी भाषाओं की शब्दावली को आत्मसत करे एक सुदृढ़ भाषा के रूप में विकसित हुई है। जहाँ हिंदी हमारी संस्कृति का प्रतिक है वहीं यह सभी भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में पिरोकर कर भारत की अखंडता और अस्मिता का वर्णन करती है। हिंदी अपने गौरवपूर्ण परंपरा के कारण ही संपर्क भाषा के रूप में विकसित हुई है। आज भारत के अतिरिक्त अनेक देशों में हिंदी बोलने और पढ़ने वालों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है जो कि हमारे लिए प्रसन्नता का विषय है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर द्वारा नगर में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयास सरहानीय है। समिति के तत्वावधान में गतिविधियों को आयोजन और सदस्य कार्यालयों की सक्रिय सहभागिता निश्चित ही समिति की एक अलग पहचान स्थापित करने में अपनी अहम भूमिका निभाएगी।

राजभाषा को प्रतिष्ठित करने एवं उसके प्रचार-प्रसार में हमेशा से ही पत्रिका का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण योगदान देता है। मैं आशा करता हूँ कि इस अंक में प्रकाशित की गई सामग्री सभी पाठकों का ज्ञानवर्धन करेगी और लेखकों को और रोचकपूर्ण आलेखों को लिखने हेतु प्रोत्साहित करेगी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ई-पत्रिका "नागरिक" के निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंदी! जय हिंदी!

राज कु० सिंह

डॉ. राज कुमार सिंह
प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक एवं
सहायक प्राध्यापक, एसईओसीएस, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

मुख्य संपादक की ओर से

केंद्रीय सरकारी कार्यालयों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर की छमाही पत्रिका "नागरिक" का प्रथम ई-संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

पत्रिका का प्रकाशन बहुत ही कठिन एवं दुरुह कार्य होता है। आज का युग द्रव्य- श्रव्य संसाधन से ओत-प्रोत है। हमारा प्रदेश राजभाषा विभाग के अनुसार 'ग' क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्र में इस तरह की पत्रिका का प्रकाशन हमारे सदस्य कार्यालयों में सेवारत कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा और मौलिक चिंतन की दिशा का संकेत करता है। भारतीय संविधान के अनुसार प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं पुरस्कार राजभाषा के तीन प्रमुख स्तंभ है । पत्रिका का प्रकाशन हमारे सदस्यों कार्यालयों के रचनाकारों को अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित भी करती है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गतिविधियों को बढ़ाने के लिए हमने निरंतर प्रयास किए है। सभी सदस्य कार्यालयों की सक्रिय भूमिका ने हमारे कार्य को राजभाषा के पटल पर नई ऊँचाई प्रदान की है। नराकास,भुवनेश्वर (के.) अध्यक्ष, प्रो. आर.वी. राज कुमार की राजभाषा के प्रति प्रतिबद्धता हम सभी को नए कार्य करने हेतु प्रेरित करती है और राजभाषा के कार्यान्वयन में नए आयामों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सभी सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों का आभारी हूँ जिन्होंने अपनी-अपनी रचनाएं प्रेषित कर इस पत्रिका को रोचकपूर्ण एवं ज्ञानवर्धित बनाने हेतु असीम सहोयग प्रदान किया। साथ ही, पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए मैं आप सभी से भविष्य में इसी प्रकार के सहयोग की आशा रखता हूँ।

पत्रिका के प्रकाशन में संपादन मंडल की अहम भूमिका होती है, मैं अपने संपादन मंडल को इस कार्य के लिए विशेष आभार व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद।

जय हिंदी!!!

राम किशोर वर्मा

पुनर्वास अधिकारी एवं कार्यालय प्रमुख

विकलांग व्यावसायिक पुनर्वास केंद्र

संपादकीय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर की पत्रिका "नागरिक" का ई-संस्करण आपको सौंपते हुए आह्लादित हूँ।

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से प्रत्येक प्राणी अपने विचारों को दूसरों पर अभिव्यक्त करता है। यह मनुष्य को मनुष्यता प्रदान कर उसका यशगान बढ़ाती है। किसी भी राष्ट्र के लिए उसकी राष्ट्रभाषा अथवा राजभाषा का सर्वाधिक महत्व होता है। हमारे देश की राजभाषा हिंदी है जो अपने उद्भवकाल से ही सार्वदेशिक भाषा रही है। हिंदी ऐसी समर्थशाली भाषा है जिसमें एक ओर लाखों शब्द के भंडार है वहीं दूसरी ओर विश्वबंधुत्व की सारी अवस्थाएं मौजुद है। आज केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में हिंदी के प्रति लोगों की सजगता बढ़ी है। हिंदी मात्र भाषा न रहकर यह भारत के गौरवशाली परंपरा का भी प्रतीक है और संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करती है।

देश के प्रधानमंत्री द्वारा विदेशों के मंचों पर हिंदी में संबोधन उनका हिंदी के प्रति आगाध प्रेम को दर्शाता है और राजभाषा के प्रति सम्मान व्यक्त करता है। आज के इस प्रतिस्पर्धा के युग में देश की सभी बड़ी शक्तियाँ भारत से जुड़ना चाहती है और जनमानस से संवाद के लिए उन्होंने भी हिंदी की महत्ता को स्वीकार किया है। अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा का भारत दौरे के दौरान "नमस्ते" से अभिवादन हिंदी भाषा के प्रति उनका सम्मान व्यक्त करता है। अभी हाल ही मैं एक रिपोर्ट के अनुसार हिंदी विश्व की सबसे प्रचलित भाषा बन गई है और सबसे अधिक बोले जाने वाली का गौरव पदक हासिल कर चुकी है। आज केवल एशियाई देशों में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों में हिंदी का अध्यापन बढ़ा रहा है जो हमारे लिए गौरव का विषय है।

नराकास भुवनेश्वर सदस्य कार्यालयों में राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है और समिति विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अपना आधार बढ़ा रही है। नराकास भुवनेश्वर की वेबसाइट का निर्माण एवं ऑनलाइन रिपोर्ट पोर्टल की शुरुआत इस ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके साथ ही ई-पत्रिका में सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों की रचनाएं जैसे राजभाषा का कार्यान्वयन : समस्याएं एवं समाधान, सुख और दुःख, नारी जीवन, विहग की भविष्यवाणी, नकारात्मक सोच को कैसे करे सकारात्मक, रोज़गार के अवसर, भुवनेश्वर : पर्यावरणीय समस्याएं एवं समाधान, पावन नगरी के लोग इत्यादि सहित पुष्पित कविताएं को सम्मिलित कर पत्रिका को सूचनापरक, ज्ञानवर्धक और सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के अधीन सदस्यों कार्यालयों में आयोजित गतिविधियों को भी इस अंक में स्थान दिया गया जिससे सभी सदस्य कार्यालयों को प्रोत्साहन मिले और निरंतर आपसी सहयोग के माध्यम से हम राजभाषा के उत्थान के लिए एक नया मार्ग तैयार कर सकें।

सभी प्रबुद्ध पाठकों से अनुरोध है कि वे अपने अभिभूत विचारों से हमारा मार्गदर्शन करें। हमें आपकी प्रतिक्रिया की अपेक्षा रहेगी।

सदस्य-सचिव

नराकास भुवनेश्वर (के.)

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु जाँच बिंदु

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति (राकास) का गठन कर प्रत्येक तिमाही में इसकी बैठक आयोजित करें।
- मूल पत्राचार में हिंदी का प्रयोग वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार करें।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्यतः हिंदी में दें।
- धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी दस्तावेज़ों को अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में जारी करें।
- वेबसाइट द्विभाषी रूप में तैयार करें और समय-समय पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी अद्यतन करें।
- सभी कंप्यूटरों पर यूनिकोड सक्रिय करें।
- प्रत्येक तिमाही में एक पूर्ण कार्यदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाए।
- कार्यालयों में प्रयुक्त सभी फार्मों/ नाम पट्ट/ रजिस्टर के शीर्षक/लेखन सामग्री को द्विभाषी रूप में मुद्रित करें।
- हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त न करने वाले कार्मिकों को भाषा (प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत) का प्रशिक्षण दिलवाएं। इसके साथ ही संबंधित कर्मचारियों को हिंदी टंकण/ हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए भी नामांकित करें।
- विज्ञापनों को हिंदी और अंग्रेजी के समाचार पत्रों में एक साथ प्रकाशित करें।
- हिंदी पुस्तकों पर लक्ष्य अनुसार व्यय किया जाए। वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य हिंदी में उपलब्ध करवाया जाए।
- कार्यालय के अनुभागों का समय-समय पर राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया जाए।
- कार्यालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (राजभाषा विभाग) को तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन भेजी जाए।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में कार्यालयों प्रमुखों की उपस्थिति अनिवार्यतः सुनिश्चित की जाए।
- सेवा पंजियों में प्रविष्टियाँ द्विभाषी रूप में करें।
- राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987 में दिए गए बिंदुओं का अनुपालन सुनिश्चत किया जाए।
- कार्यालय में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन किया जाए।
- कार्यालय परिसर में राजभाषा के प्रतिकुल वातावरण के लिए "आज का शब्द" और "आज का विचार" प्रदर्शित करें।
- संस्थान में प्रयोगार्थ सभी प्रकार की नेमी टिप्पणियों को फाइलों पर मुद्रित करे और लक्ष्य को प्राप्त करें।
- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की संपूर्ण प्रोत्साहन योजनाओं को अपने कार्यालय में लागू करें।

उपर्युक्त जानकारी कार्यालय के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को दें और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करें। वार्षिक कार्यक्रम के सभी लक्ष्य गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.nic.in से डाउनलोड किए जा सकते है।

- संपादन समिति

58 वीं बैठक का कार्यवृत्त

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 58 वीं बैठक दिनांक 29.01.2016 को अपराह्न 15.00 बजे अध्यक्षीय कार्यालय "भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर" के सामंतपुरी परिसर में प्रो.आर.वी. राज कुमार, अध्यक्ष नराकास एवं निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में सदस्य कार्यालयों के 76 प्रमुखों/प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सर्वप्रथम बैठक का आरंभ करते हुए श्री नितिन जैन, सदस्य-सचिव, नराकास, भुवनेश्वर (के.) ने सभी को यह जानकारी दी कि, इससे पूर्व नराकास भुवनेश्वर (के.) की बैठक प्रधान आयकर आयुक्त की अध्यक्षता में आयोजित की जाती थी। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रो.आर.वी. राज कुमार, निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर को इस समिति का नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया है और इनकी अध्यक्षता में यह पहली बैठक आयोजित की जा रही है। बैठक के दौरान उपस्थित सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों/प्रतिनिधियों से अनुरोध किया गया कि वे सभी अपना-अपना परिचय दें। बैठक में अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ से किया गया। तत्पश्चात डॉ. राज कुमार सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष, नराकास ने सभी सदस्यों का इस बैठक में स्वागत किया और समिति की भूमिकाओं एवं इसके उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

सदस्य सचिव ने अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यसूची की मदों पर बिंदुवार चर्चा प्रारंभ की।

मद सं. 58.0 **गत बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि** :- सदस्य सचिव ने दिनांक 06.05.2015 को आयकर आयुक्त की अध्यक्षता में आयोजित 57 वीं बैठक के कार्यवृत्त को पुष्टि प्रदान करने हेतु प्रस्तुत किया। सदस्यों ने सर्वसम्मति से 57 वीं बैठक के कार्यवृत्त की पुष्ट की।

मद सं. 58.1 **नराकास भुवनेश्वर की वेबसाइट का निर्माण** :- समिति के सदस्यों को जानकारी दी गई कि नराकास भुवनेश्वर एक वेबसाइट के निर्माण की प्रक्रिया में है जिसके माध्यम से सदस्यों कार्यालयों में राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन में हो रही दिक्कतों को दूर करने में सहायता मिलेगी और आपसी जानकारियाँ द्रुत गति से सांझा की जा सकेंगी। इसके साथ ही सदस्य-सचिव ने समिति के सदस्यों को वेबसाइट लेआउट के माध्यम से वेबसाइट में पठनीय सामग्री की जानकारी दी और कहा कि सदस्य कार्यालयों से प्राप्त सुझावों के आधार पर इसे और उपयोगी बनाया जाएगा। अनेक सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों/ प्रतिनिधियों ने इस कार्य की सराहना की तथा इसे और बेहतर बनाने हेतु अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

कार्रवाई : कार्यकारी अध्यक्ष/सदस्य सचिव/सभी सदस्य कार्यालय

मद सं. 58.2 **पत्रिका का प्रकाशन** : समिति के सदस्यों को जानकारी दी गई कि नराकास भुवनेश्वर (के.) द्वारा इससे पहले "नागरिक" नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता था किंतु किन्हीं अपरिहार्य कारणों से इसके केवल दो ही अंक प्रकाशित हो सके थे। सदस्य सचिव ने अध्यक्ष महोदय एवं समिति के सदस्यों के समक्ष इसके पुनः प्रकाशन की इच्छा व्यक्त की और सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया कि वे अपने-अपने कार्यालयों के कार्मिकों की रचनाएं, कविताएं, हास्य व्यंग्य, चुटकले आदि संग्रहित कर नराकास सचिवालय को प्रेषित करें जिससे उन्हें इस पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके। इसके साथ ही सदस्य-सचिव ने जानकारी दी कि सर्वप्रथम हम पत्रिका को एक प्रयोग के रूप में ई-माध्यम से प्रकाशित करेंगे और भविष्य में इसे मुद्रित करने पर भी विचार करेंगे।

कार्रवाई – कार्यकारी अध्यक्ष/ सदस्य-सचिव/सभी सदस्य-कार्यालय

मद सं. 58.3 **सदस्य कार्यालयों का अंशदान** : अध्यक्ष महोदय को यह जानकारी दी गई कि पहले सभी सदस्यों कार्यालयों से वार्षिक अंशदान के रूप में रु. 1000/- की राशि ली जा रही थी। सदस्य-सचिव ने कहा कि आगामी योजनाओं को ध्यान में रखते हुए हमें वार्षिक अंशदान में वृद्धि करने की आवश्यकता है। तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों के प्रमुखों/प्रतिनिधियों से विचार-विमर्श कर रु. 2000 की वार्षिक अंशदान राशि निर्धारित की। सदस्य सचिव द्वारा समिति के सदस्यों को यह जानकारी दी गई कि वार्षिक अंशदान से संबंधित आँकड़े हमारी वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराएं जाएंगे जिससे अंशदान के रूप में प्राप्त आय पर पारदर्शिता बनाई जा सके।

कार्रवाई : सदस्य सचिव/ सभी सदस्य कार्यालय

मद सं. 58.4 **वार्षिक कार्यक्रम योजना** : समिति के सदस्यों को जानकारी दी गई कि सभी सदस्य कार्यालयों के लिए वर्ष भर कुछ न कुछ गतिविधियाँ आयोजित की जाती रहेंगी जिससे राजभाषा नीतियों के अनुपालन में आने वाली कठिनाइयों का समाधान हम आपसी विचार-विमर्श से कर सकें। इसके साथ ही जानकारी दी गई कि नराकास भुवनेश्वर की गतिविधियों को ध्यान में रखकर एक वार्षिक कार्यक्रम योजना तैयार किया जाएगा जिसके आधार पर हम वार्षिक कार्यक्रम आयोजित करेंगे। अध्यक्ष महोदय के अनुमोदन के उपरांत वार्षिक कार्यक्रम की सूचना सभी सदस्य कार्यालयों को परिचालित की जाएगी।

कार्रवाई : सदस्य सचिव

मद सं. 58.5 **उप-समितियों का गठन** : समिति की विविध गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए सभी की सहभागिता आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर वित्त समिति, पत्रिका प्रकाशन समिति, वार्षिक कार्यक्रम समिति एवं पुरस्कार समीक्षा समिति का गठन करने पर विचार किया गया है। सदस्य सचिव ने अध्यक्ष महोदय की अनुमति से उपस्थित सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों से आगे बढ़कर अपने-अपने दायित्वों के निर्वहन हेतु अपील की। वित्त समिति के संयोजक के रूप में श्री आर एन चाँद, हिंदी अधिकारी, महालेखाकार का कार्यालय (ले.एवं.हक.), पत्रिका प्रकाशन के समन्वयक के रूप में श्री राम किशोर शर्मा, पुनर्वास अधिकारी, विकलांग व्यवसायिक पुनर्वास केंद्र, वार्षिक कार्यक्रम समिति के समन्वयक के रूप में श्री भगवान बेहेरा, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, भौतिकी संस्थान एवं पुरस्कार समीक्षा समिति के समन्वयक के रूप में श्री असीफ जक्की, सहायक निदेशक, पोस्ट मास्टर जनरल का कार्यालय को नियुक्त किया गया और उनसे अनुरोध किया गया कि वे उपस्थित सदस्य कार्यालयों में से अपनी-अपनी समिति के सदस्य चुन लें और आवश्यता अनुसार कार्रवाई करें।

कार्रवाई : सदस्य सचिव/ समिति के संयोजकगण

मद सं. 58.6 **सदस्य कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्ट की समीक्षा** – समिति के सदस्यों को जानकारी दी गई कि बहुत ही कम सदस्य कार्यालयों से छमाही रिपोर्ट प्राप्त हुई है। उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की अनुपस्थिति में सदस्य-सचिव ने सदस्यों कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्ट की समीक्षा की और उन्हें राजभाषा नियमों के अनुपालन हेतु बेहतर सुझाव प्रदान किए और सभी से अनुरोध किया कि जिन कार्यालयों ने अभी तक छमाही रिपोर्ट न भेजी हो वे सभी अपने-अपने कार्यालयों की छमाही रिपोर्ट यथाशीघ्र भेज दें जिससे उनका समेकन कर उपनिदेशक (कार्यान्वयन) को समीक्षा हेतु भेजा जा सके।

कार्रवाई : सदस्य सचिव/सभी सदस्य कार्यालय

अध्यक्ष महोदय एवं अतिथियों का अभिभाषण : अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में नराकास भुवनेश्वर (के.) के निवर्तमान अध्यक्ष के कार्यों की सराहना की और कहा कि नराकास आपसी समन्वयन का मंच है। इस मंच के माध्यम से हम आपसी

विचार विमर्श कर राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन के लिए एक दूसरे को सहयोग प्रदान कर सकते हैं। अध्यक्ष महोदय ने इसके साथ ही कहा कि आज हमारी आवश्यकता है कि हमें सारी जानकारियाँ एक मंच पर मिलें, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हमने नराकास भुवनेश्वर (के.) की वेबसाइट के निर्माण के बारे में विचार किया है। हमने वेबसाइट में जो सामग्री दी है उससे निश्चित तौर पर आप सभी लाभान्वित होंगे और इस मंच की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी। तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्य कार्यालयों से आपसी सहयोग के माध्यम से एक दूसरे की सहायता करने पर बल दिया और कहा कि हम वर्ष भर विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से नगर में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने में अपनी प्रतिबद्धता को निभाएंगे। अध्यक्ष महोदय ने जानकारी दी कि अगले दो सप्ताह के भीतर ही नराकास की वेबसाइट का शुभांरभ करेंगे जिससे राजभाषा संबंधी सारी सूचनाएं आप सभी के पास द्रुत गति से पहुँच सकें।

इस अवसर पर उपस्थित प्रो.बी.के. मिश्र, निदेशक, सी.एस.आई.आर-आई.एम.एम.टी ने अपने संबोधन में कहा कि यह एक बहुत अच्छा मंच है जिसके माध्यम से हमें बहुत लाभ मिल सकता है। नराकास भुवनेश्वर के माध्यम से हमें राजभाषा नीतियों को अपने कार्यालयों में क्रियान्वित करने में सहायता मिल सकेगी और हम सभी अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन कर पाने में सक्षम हो सकेंगे। प्रो.मिश्र ने कहा कि इस बैठक में कार्यालय प्रमुखों के उपस्थित होने से उन्हें न केवल राजभाषा संबंधी नीतियों की जानकारी होती है बल्कि उनके दायित्वों से भी उन्हें अवगत कराया जाता है।

सदस्य कार्यालयों से प्राप्त सुझाव : श्री आर.एन.चाँद, हिंदी अधिकारी, महालेखाकार का कार्यालय (ले.एवं.ह.) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सदस्य कार्यालयों में प्रत्येक तिमाही कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। नराकास भुवनेश्वर के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों में कार्यशालाओं के आयोजन के बजाय इसे नराकास सचिवालय में ही आयोजित किया जाए या सदस्य कार्यालयों में आयोजित कार्यशालाओं में उनके प्रतिनिधियों को शामिल किया जाए। इसके साथ ही श्री विजय कुमार महापात्र ने कार्यालय में प्रयोग होने वाले द्विभाषी फार्म को भी नराकास की वेबसाइट में भी सांझा करने हेतु अपील की।

बैठक के अंत में केंद्रीय उत्पाद सीमा शुल्क कार्यालय की श्रीमती नमिता कर ने उनके कार्यालय द्वारा तैयार किए गए वार्षिक कार्य कैलेंडर को प्रदर्शित किया। इस अवसर पर अनेक सदस्यों ने अपनी पत्रिका भी सभी सदस्य कार्यालयों को वितरित की। सदस्य-सचिव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक संपन्न हुई।

- संपादन समिति

⇒ **राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है। - अवनींद्रकुमार विद्यालंकार।**

⇒ **हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है। - बाबूराम सक्सेना।**

⇒ **समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है। - कृष्णस्वामी अय्यर।**

⇒ **हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है। - शंकरराव कप्पीकेरी।**

⇒ **अकबर से लेकर औरंगजेब तक मुगलों ने जिस देशभाषा का स्वागत किया वह ब्रजभाषा थी, न कि उर्दू। -रामचंद्र शुक्ल।**

राजभाषा का कार्यान्वयन : समस्याएं एवं

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश की राजभाषा के लिए बड़े-बड़े मनीषियों, बुद्धिजीवियों, विचारकों, चिंतकों द्वारा काफी चिंतन किया गया कि इस देश की राजभाषा क्या हो? विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए तथा राष्ट्र स्वाभिमान एवं अन्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इस देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा हिंदी को राजभाषा बनाने हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। सर्वसम्मत के साथ संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया। तभी से सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए विभिन्न नियम, अधिनियम, आदेश, संकल्प जारी किए जाते रहते हैं ताकि राजभाषा के कार्यान्वयन को संबल प्राप्त हो। कार्यान्वयन की दिशा एवं दशा को सुनिश्चित करने के लिए संसदीय राजभाषा समिति का भी गठन किया गया है जो केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, स्वायत्त निकायों, अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण कर राजभाषा के प्रयोग को सुनिश्चित करवाती हैं।

देश की राजभाषा के रूप में हिंदी ही क्यों – अक्सर लोगों द्वारा हिंदी को ही राजभाषा के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता पर प्रश्न उठाया जाता है। इसके साथ यह भी कहा जाता है कि क्या कोई अन्य भारतीय भाषाएं हिंदी का स्थान नहीं ले सकती हैं? इसे सीधे कहा जा सकता है कि हमारा देश एक श्रेष्ठ गणतांत्रिक देश है। परतंत्र की बेड़ियों से मुक्त होने के बाद हमारे देश को भी संविधान निर्माण की आवश्यकता पड़ी क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र के लिए तीन महत्वपूर्ण चीज़ें अनिवार्य होती है – राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान और राष्ट्र भाषा। किसी भी राष्ट्र के लिए, जिस प्रकार उसके राष्ट्र ध्वज तथा राष्ट्र गान का होना आवश्यक है उसकी प्रकार सरकारी प्रयोजनों के लिए तथा जन मानस से संवाद करने के लिए भाषा की आवश्यकता भी अनिवार्य होती है। क्योंकि कोई भी देश बिना किसी भाषा के विकसित नहीं हो सकता है। महात्मा गांधी जी ने कहा था कि – "बिना राष्ट्रभाषा के राष्ट्र गूंगा होता है"। संविधान की अष्टम सूची में कुल 22 भारतीय भाषाएं शामिल है। सभी भारतीय भाषाओं की अपनी- अपनी विशेषता है और अपनी-अपनी पहचान है। हमारे देश के प्रत्येक राज्यों में हजारों बोलियाँ बोली जाती है। इस देश की सबसे बड़ी विशेषता अनेकता में एकता, विविधता में एकरूपता और भिन्नता में समानता है । हम अलग-अलग हो कर भी एक है । हमारी जाति भिन्न है, हमारा धर्म भिन्न है, हमारी संस्कृति भी भिन्न है फिर भी हमारी अंतः चेतना एक है। भाषा भिन्न होकर भी एक ही समान भाव उत्पन्न करती है। हिंदी इन सभी भाषाओं से भिन्न है क्योंकि यह देश के अधिकांश जन मानस द्वारा उनके दैनिक जीवन की गतिविधियों के लिए उपयोगी होती है। हिंदी भारतीय की अस्मिता की द्योतक है। संस्कृत से उपजी सभी भारतीय भाषाओं में हिंदी का स्थान श्रेष्ठ है और यह इसकी असली उत्तराधिकारिणी है। आज हिंदी विश्व की सबसे अधिक लोकप्रिय भाषा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कर जा चुकी है। विदेशी कंपनियों को भी यह बात समझ में आ गई है कि अगर भारत जैसे बहुभाषी देश में अपना व्यवसाय स्थापित करना है तो वहाँ की सबसे समृद्ध भाषा हिंदी को अपनाना होगा तभी हम भारत जैसे उन्नतशील देश में अपना व्यवसाय जमा पाएंगे। उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक हिंदी ही सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। हिंदी सिर्फ भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा, राज्यभाषा न बनकर अब वह अपने पैर विदेशों में भी पसारने में सफल हो चुकी है।

सरकारी कार्यालयों में हिंदी – संविधान निर्माताओं द्वारा हिंदी को इस समृद्ध देश की राजभाषा बनाने के लिए संविधान में हिंदी संबंधी भाग V, VI, XVII अनुच्छेद बनाए गए जिससे केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों, मंत्रालयों, अधिनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों आदि में हिंदी के प्रयोग का प्रचार-प्रसार बढ़े और इसका कार्यान्वयन हो सकें। इसमें राजभाषा अधिनियम की धारा 8(2) के अधीन वर्ष 1976 में बनाए गए "नियम 1976" अधिक महत्वपूर्ण है। इसी के अधीन संपूर्ण भारत को तीन क्षेत्रों में क, ख एवं ग में बाँटा गया है और इसी तर्ज पर विभिन्न राज्यों की संकल्पना को ध्यान में रखकर राजभाषा विभाग हिंदी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम के माध्यम से लक्ष्य निर्धारित करता है जिसके अनुपालन की जिम्मेदारी कार्यालय प्रमुख को दी जाती है। सरकारी कार्यालयों में राजभाषा की ओर तैयार की गई मानसिकता से हमेशा यह प्रश्न उठता है कि क्या हिंदी को वह स्थान मिल पाया जिसकी वो हकदारनी थी? यह आज भी हिंदी अपने ही देश में रानी की जगह दासी बनी हुई है? राजनीतिक परिप्रेक्ष्यों के मकड़ जाल में इसे फँसाकर इसका क्या भला हो रहा है? क्या हिंदी को कार्यान्वित करने के लिए किसी दृढ़ निश्चय की आवश्यकता है? बात तो स्पष्ट है किसी भाषा को कार्यान्वित करने के लिए केवल नियमों, अनुदेशों

और अधिनियमों पर ही निर्भर नहीं होना चाहिए उसके लिए संकल्पनिष्ठ होना भी अनिवार्य है। राष्ट्रीय भावना और स्वाभिमान के प्रति प्रतिबद्धता की जरूरत होती है, मानसिकता और इच्छा शक्ति की अपेक्षा होती है। जब तक हमारे अंदर यह इच्छा शक्ति नहीं होगी तब तक राजभाषा नीति के अंतर्गत सभी प्रावधानों के उपलब्ध होने पर भी संघ की घोषित राजभाषा को वह सब कुछ नहीं मिलेगा जिसकी वो हकदारनी है। संविधान में राजभाषा उपबंधों के होते हुए भी आज भी सरकारी कार्यालयों में हिंदी की स्थिति बहुत संतोषजनक नहीं है। स्वतंत्रा प्राप्त के छह दशकों के बाद भी सरकारी कार्यालों में लोगों को हिंदी की क्षमता पर विश्वास नहीं हो पाया है। हमारे मन में यह बात स्थाई रूप से घर कर गई है कि अगर हम अंग्रेजी नहीं अपनाएंगे तो हम वैज्ञानिक तथा तकनीकी परिप्रेक्षयों में पिछड़ जाएगा और देश का विकास कभी संभव नहीं हो पाएगा। मैं उन संकीर्ण चिंतकों से यह पूछता हूँ कि क्या हम चीन, जापान, फ्रांस, रुस जैसों देशों से किसी भी रूप में सक्षम है जिन्होंने अपनी भाषा को अपनाकर विश्व में अपनी अलग पहचान बनाई है। हमें सर्वप्रथम अपनी भाषा का अस्तित्व समझना होगा। इस बात पर भारतेंदु हरिशचंद की वह पंक्तियाँ याद आ जाती है –

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटन न हिय को शूल।

अगर वास्तव में हमें हिंदी को सरकारी कार्यालयों में कार्यान्वित करना है तो हमें भी कमालपाशा की भाँति निर्णय लेना होगा। इस पर थोड़ा ऐतिहासिक पहलुओं पर चिंतन करते हैं। यह विदित है कि दीर्घकालीन परतंत्रता के बाद वर्ष 1923 में छोटा सा देश तुर्की आजाद हुआ। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद उसके शासन का दायित्व उसके राष्ट्रपति अतातुर्क कमालपाशा पर पड़ा। उस छोटे से देश की भाषा तर्कीश थी जिसे वर्षों की गुलामी के कारण विकसित होने का मौका प्राप्त नहीं हो सका। उसकी तुलना में विदेशी भाषा ऐरेबिक काफी समृद्ध थी और लोगों के दैनिक कार्यों में धड़ले से प्रयोग की जा रही थी। कमालपाशा के सामने सवाल था कि स्वतंत्र राष्ट्र की राजभाषा क्या हो? कम विकसित स्वभाषा तर्कीश अथवा परिपक्व ऐरेबिक। सबके मन में तर्कीश को लेकर संदेह था कि क्या ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, विज्ञान में तर्कीश कार्यान्वित करना उचित होगा। विदेशी भाषा में कार्य कर रहे पदाधिकारियों को तर्कीश में कार्य करने में हिचक तो थी ही, अपनी भाषा की अभिव्यक्ति-क्षमता पर भी भरोसा नहीं था। कमालपाशा ने भाषा-विमर्श के लिए अपने राष्ट्र के मंत्रियों, प्रशासकों, बुद्धिजीवियों, कूटनीतिज्ञों, विचारकों और भाषाविदों को बुलाकर सलाह लेना उचित समझा।

समृद्ध थी और लोगों के दैनिक कार्यों में धड़ले से प्रयोग की जा रही थी। कमालपाशा के सामने सवाल था कि स्वतंत्र राष्ट्र की राजभाषा क्या हो? कम विकसित स्वभाषा तर्कीश अथवा परिपक्व ऐरेबिक। सबके मन में तर्कीश को लेकर संदेह था कि क्या ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, विज्ञान में तर्कीश कार्यान्वित करना उचित होगा। विदेशी भाषा में कार्य कर रहे पदाधिकारियों को तर्कीश में कार्य करने में हिचक तो थी ही, अपनी भाषा की अभिव्यक्ति-क्षमता पर भी भरोसा नहीं था। कमालपाशा ने भाषा-विमर्श के लिए अपने राष्ट्र के मंत्रियों, प्रशासकों, बुद्धिजीवियों, कूटनीतिज्ञों, विचारकों और भाषाविदों को बुलाकर सलाह लेना उचित समझा। काफी विचार-विमर्श के बाद यह तय हुआ कि यदि तर्कीश को स्वाधीन राष्ट्र तुर्की की राजभाषा बनाना अनिवार्य हो तो इसे तकनीकी और भाषाई तौर पर विकसित करने में कम से कम 10 वर्ष का समय तो लग जाएगा। राष्ट्रपति कमालपाशा को विदेशी भाषा के पक्षधरों की नियत समझ आने लगी थी। उन्होंने अपने संबोधन में कहा- मुझे बहुत खुशी है कि आप जैसे राष्ट्र के नीति निर्धारकों ने अपनी मातृभाषा तर्कीश को राजभाषा के रूप में अपनाने का निर्णय लिया है। भले ही इसे विकसित करने में आप लोगों को 10 वर्षों की जरूरत पड़े आप लोगों की सलाह मुझे मंजूर है किंतु आप लोग केवल इतना जान ले कि वह 10 वर्ष का समय कल सुबह सूरज उगने के साथ समाप्त हो जाएगा और कल से ही सारे देश का कामकाज तर्कीश भाषा में होगा जिसे स्वीकार है वे इस देश की राष्ट्रभाषा के विकास हेतु मेरा साथ दे और जिन्हें यह स्वीकार नहीं वे इस राष्ट्र को छोड़कर जा सकते है और इस प्रकार तर्कीश अपने देश प्रेमी शासक के कारण दस वर्षीय षडयंत्र में फँसने से बच गई। हिंदी इसी प्रकार के पंद्रह वर्षीय षड़यंत्र में फँसी हुई है जो लाख प्रयासों के बावजूद भी आज तक निकल नहीं पा रही है। इसे राजनीतिक षड़यंत्र से निकालने के लिए हमें एक जुट होकर कार्य करना होगा, अपनी मानसिकता को बदलने की संकल्पना करनी होगी तब ही शायद हम भी अन्य देशों की भांति अपनी राजाषा में कार्य करने में सक्षम हो पाएंगे। हमें स्वयं भगीरथ बनकर भाषा की गंगा को धरती पर उतारना होगा, जब तक यह प्रतिबद्धता मन में नहीं उपजेगी तब तक जितने भी प्रयास कर लिए जाए वे सब अपने उद्देश्य में कभी भी सफल नहीं हो पाएंगे और इसी तरह प्रशिक्षण अवधि को अगले और 10 वर्षों तक बढ़ाते चलेंगे और हिंदी का विनाश लीला रचते चलेंगे।

श्री नितिन जैन
भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

सुख और दु:ख

हम-
यह जानकर
बहुत सुखी हैं
कि दुनिया के ज्यादातर लोग
हमसे भी ज्यादा दु:खी हैं

पिता-
इसलिए दु:खी है-
कि बेटा कहना ही नहीं मानता,
बेटे का दु:ख-
कैसा बाप है
बेटे के ज़ज्बात ही नहीं जानता

माँ –
इसलिए दु:खी है-
कि जवान बेटी
रात को घर देर से आती है
बेटी का दु:ख
शक की सुई-
हमेशा उसी के सामने आकर
क्यों रुक जाती है

पति-
इसलिए दु:खी है-
कि -उसकी पत्नी
स्वयं को समझदार
और उसे बेवकूफ़ मानती है
उसकी मां को-
उससे ज्यादा वह जानती है

पत्नी का दु:ख
उसका पति
अभी तक भी
अपनी कमाई
अपने मां-बाप पर लुटा रहा है
उसे अपने बच्चों का भविष्य
अंधकारमय नज़र आ रहा है

मालिक-
इसलिए दु:खी है-
कि-नौकर
हराम की खा रहा है

नौकर का दु:ख-
जी-तोड़ मेहनत के बाद भी
घर नहीं चल पा रहा है
ये भी दु:खी हैं
वो भी दु:खी हैं
और हम

यह जानकर बहुत सुखी हैं
कि-दुनिया के ज्यादातर लोग
हमसे भी ज्यादा दु:खी हैं

आलोक शर्मा, कर सहायक
कार्यालय प्रधान आयकर आयुक्त-2,

मित्रवर मजदूर

श्री सुशान्त कुमार महपात्र
टी.जी.टी. संस्कृत,के,वि.नं-१

चाँद से भी शीतल तेरा मन मजदूर !
पौरुष है सघन, सूरज से भी अग्रसर
रात व दिन में तुझे क्या अन्तर
सकल निर्माणों के कारण; मित्रवर! विश्वात्मा तुम हो सबके आधार ॥
पसीने में खून बहता गया तेरा
बन गई बंजर जमीन उर्वरा
मानव को सहारा, दिया फिर किनारा
रहा बेसहारा मझधार में तू ; हाय ! विजन, निराश्रित, निराधार ॥
पीस गया तू चलते इस पथ पर
पिघल गये तेरे अस्थि व पंजर
चुस गये चतुर खटमल व मच्छर
यथापूर्व तू रहा उपेक्षित; हाय ! अनुपम, विसर्जित बारम्बार ॥
पारग विश्वकर्मा तू बन सका था
बल प्रबल जब बाजूओं में भरा था
पत्थर, मिट्टी से जूझते न जाने
बन गया पत्थरसा शरीर तेरा; हाय ! अपने नीयत में तू सदा बरकरार ॥
रह सकें ईश्वर कहीं किसी के अन्दर
जीवन हो जिसका निर्मल गंगा की धार
'कर तब आगे' तुम सिखाते हो धरा पर
छिपा पीछे कर्म में सन्यास; हाय ! अल्हड, निहायत ईमानदार ॥
असार है संसार पार करने का पतवार
कर्म ही पूजा निरन्तर जीवन का आधार
न कोई मांग, न हो फिर कभी अधिकार
काले अक्षर भैंस बराबर; हाय ! तुमसा बना कौन समझदार ॥
खुद के लिए वे मूर्ख जीते स्वार्थ कूट-कूट भरा
त्याग ही तेरा भोग है, प्रेम है तेरा नारा
पर स्मृतियाँ सबकी गूंजती ,चिल्लाती
अपना एहसास निःशंक दिलाती ; हाय ! भूला विसरासा गया प्रणवाक्षर

अभिवादन बना वरदान

आप शायद मानें या न मानें, पर हमारे जीवन में छोटे से छोटे कार्य भी हम पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि आप जब भी किसी से मिलें, पूरे जोश से मिलें, हमेशा दूसरों की मदद करें और जो काम करें पूरी ईमानदारी से करें। फिर देखिए आपके जीवन में कैसे नए-नए रास्ते खुलते चले जाते हैं। इसी बात को प्रमाणित करती है यह प्रेरक कहानी, जो यह बताती है कि आपका अच्छा व्यवहार आपके लिए कितना महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। यह कहानी मुझे व्हाट्स एप्पस से मेरे एक मित्र ने भेजी थी। मुझे यह कहानी इतनी पसंद आई कि मैं आप सभी के साथ इसे शेयर कर रहा हूँ, क्योंकि क्या पता यह किसके दिल को छू जाए और उसका जीवन बदल जाए।

ये कहानी एक ऐसे व्यक्ति की है जो एक फ्रीजर प्लांट में काम करता था। वह दिन का अंतिम समय था और सभी लोग घर जाने को तैयार थे। तभी प्लांट में एक तकनीकी समस्या उत्पन्न हो गयी और वह उसे दूर करने में जूट गया। जब वह कार्य पूरा किया, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। लाईटें बुझा दी गईं, दरवाजे सील हो गये और वह उसी प्लांट में कैद हो गया। बिना हवा व प्रकाश के पूरी रात आइस प्लांट में फंसे रहने के कारण वहां उसकी कब्रगाह बनना तय था।

लगभग आधे घण्टे का समय बीत गया। तभी उसने किसी को दरवाज़ा खोलते पाया। क्या यह एक चमत्कार था? उसने देखा कि दरवाज़े पर सिक्योरिटी गार्ड टार्च लिए खड़ा है। उसने उसे बाहर निकलने में मदद की। बाहर निकल कर उस व्यक्ति ने सिक्योरिटी से पूछा — आपको कैसे पता चला कि मैं भीतर हूँ?

गार्ड ने उत्तर दिया — सर, इस प्लांट में 50 लोग कार्य करते हैं पर सिर्फ एक आप हैं जो मुझे सुबह आने पर "हैलो" और शाम को जाते समय "बाय" कहते हैं। आज सुबह आप ड्यूटी पर आए थे पर शाम को आप बाहर नहीं गए। इससे मुझे शंका हुई और मैं देखने चला आया।

वह व्यक्ति नहीं जानता था कि उसका किसी को छोटा सा सम्मान देना कभी उसका जीवन बचाएगा। याद रखे, जब भी आप किसी से मिलें तो उसका गर्मजोशी और मुस्कुराहट के साथ अभिवादन करें, हो सकता है कि यह अभिवादन आपके लिए कभी वरदान साबित हो।

श्री शशि रंजन
लेखापरीक्षक
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्वतट रेलवे

नारी जीवन

हजारों सालों की तपस्या,
पुण्यफल है नारी,
सौ-सौ क्षणों की
साधना का पुरस्कार है नारी,
बेशुमार आराधना का
दिव्य आशीर्वाद है नारी,
कौन कहता है नारी का जीवन
न्यूनतम से न्यून
अनचाहा, बिन ढूंढ़ा ?
फिर कौन लिखता है
नारी के लिए हर पल
अनगिनत श्लेषपूर्ण कविता ?
नारी नहीं जानती
उसके जन्म का विचित्र रहस्य,
नारी नहीं समझती
अपनी ताकत, अपना ऐश्वर्य,
कैसे वो बन गई प्राणवन्त उत्स
अनंतमय शक्ति का।
नारी नहीं जानती
वही है सारा लालित्य,सारा लावण्य
और सारे दिव्य चेतना का मधुर मल्हार।
अपने खून, मांस और
धमनी, स्नायुकोष का
अविकल प्रतिलिपि की तरह
अपने शरीर से जन्म देकर
नवागत शिशु को
घर के आँगन में खिलाती है।
जीवन का अपूर्व झंकार
रंगों का वैचित्र लेकर
भर देती है समाज के कण-कण में।
कौन कहता है वह तुच्छ है?
कौन कहता है नारी का जन्म
नरक से भी हीन ?
अपने नाभि में कस्तुरी
मन में असीम शक्ति ,
वह चाहती तो कर सकती
अंतरिक्ष परिक्रमा ,
भेद सकती है अगम्य पाताल,
लाँघ सकती है द्विलोक, भूलोक
उसकी मंगलमय साँस
सारे अशुभ को करती है शुभ
सारे अमंगल को करती है सुवासित,
धरती में भर देती है सुगंध अमृत का
ये मत सोचो आसानी से मिलता है
नारी जन्म
एक बार नारी के जन्म पाने के लिए
करनी पड़ती है कठोर साधना,
जंगल में एक पैर में खड़ा होकर
ऊर्ध्व को हाथ उठाके, आग का वलय
जला के,
तूफान, प्रभंजन तथा
झंजा बात को सामना करके,
सावन की बारिश में भीगकर
गीले वस्त्र पहन के
वज्र ,दामिनी वज्राग्नि की गर्जना से
बिन डरे, आँख मूंद कर ,
हाथ जोड़ कर प्रभु को सुमरन करके,
करना पड़ता है एकाग्र साधना
तो फिर मिलता है पुण्य नारी जन्म,
क्योंकि सहस्र सालों की
साधना का पुण्यफल है नारी
अनगिनत आराधना का
ऐकांतिक आशीर्वाद है नारी।

* * *

कवयित्री (ओडिया) - डॉ सरोजिनी षडंगी
अनुवाद - डॉ उर्मिमाला आचार्य

मैं और मेरी कविता

श्रीमती महिमा सिन्हा,
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिंदी),
जवाहर नवोदय विद्यालय, खोर्द्धा

मैं और मेरी कविता
अधूरे स्वप्न को खोज़ते
अक्सर प्रतीत होते हैं।
शायद ये ज़िंदगी के मधुर ख्वाबों को
बिखेरने से रोकने के लिए
बादल बनकर छायी है।
फिर भी मेरी ज़िंदगी की पहचान
तो अधूरी बनकर मुझमें समायी है
मत रोकना उसे कोई।
मैं और मेरी कविता .....।

*****

बंधन

वह कौन सा है बन्धन
जिसे मैं नहीं पाती हूँ तोड़
मैं उड़ना चाहती हूँ आसमान में
लेकिन नहीं पाती हूँ उड़
चाहती हूँ बहुत कुछ करना
उन्मुक्त,स्वतंत्र, निश्चिंत भाव से
पर चाहकर भी नहीं पाती हूँ कुछ कर
मैं सोचती हूँ ये जो बन्धन है
क्या वह समाज का है
कुल का है या घर-परिवार का है
नहीं शायद मेरा स्वयं का है
जिसे मैं नहीं पाती हूँ तोड़
न जाने कौन सा बन्धन है
जिसे मैं चाहकर भी नहीं पाती हूँ तोड़
नहीं पाती हूँ तोड़.....

प्रियंका
स्नातकोत्तर शिक्षिका- हिन्दी
केन्द्रीय विद्यालय नंबर - 1

विहग की भविष्यवाणी

एक समय की बात है कि दो संतान जिनकी माँ उन्हें बचपन में ही छोड़कर स्वर्गवासी हो गई थी। पिता थे, परंतु उन्हें अपने व्यापार से जितना लगाव था, उतना बच्चों से नहीं।

छोटा पुत्र माथुर को वह बुद्धु समझकर उसकी उपेक्षा करते थे। बड़े पुत्र जिगना को वे स्नेह करते थे। उनकी सोच थी कि यह व्यापर में समृद्धि लाएगा।

माथुर को पिता की उपेक्षा तो सहनी ही पड़ती थी कभी – कभी मार-पीट तक की नौबत पहुँच जाती थी। पर वह बेचारा सब कुछ सहन कर लेता था। वह केवल यही समझता था कि पिता जी को अधिक काम होने की वजह से कुछ हैरान रहते हैं और इसी कारण उनका व्यवहार ऐसा है।

एक दिन उनके पिता ने दोनों को एक मेले में भेजा। जिगना को दस और माथुर को दो स्वर्ण मुद्राएँ दी और कहा कि देखें, तुम इससे क्या कमा कर लाते हो। जिगना तो मेले में चला गया और वहाँ सब पैसे खर्च करके घर वापस आ गया।

माथुर को उसके पिता ने बहुत डांटा – फटकारा। जब उन्हें मालूम हुआ कि यह तो जंगल में रहा है तब तो वे और भी क्रोधित हुए। माथुर ने कहा कि मैंने वन में पक्षियों की भाषा सीखी है। अब तो उसके पिता के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने कहा – "मुझे बेवकूफ बनाता है। भला पक्षियों की भाषा भी कोई सीख सकता है ? अच्छा, अगर जानते हो तो बताओ कि वृक्ष पर बैठी हुई चिड़िया क्या कह रही है ?"

माथुर ने कहा, "पिताजी, मैं चाहता हूँ कि आप इसे न पूछें, क्योंकि आप क्रोध से भर उठेंगे और साथ ही आपको विश्वास भी नहीं होगा। पर वह नहीं माना और उसने दो कोड़े माथुर को लगा दिए। माथुर ने और कोई रास्ता न देखकर बताया, "इनके कथनानुसार मैं एक दिन राजा बनूँगा। जिगना को मेरे सईस की जगह नौकरी करनी पड़ेगी और आपको मेरे हाथ धुलाने के लिए लोटे में पानी और तौलिया लेकर खड़ा होना पड़ेगा।

व्यापारी बर्दाश्त न कर सका। उसका क्रोध नियंत्रण से बाहर हो गया और वह तब तक माथुर को कोड़ों से मारता रहा जब तक कि वह बेदम होकर गिर न गया।

एक दिन व्यापारी ने दोनों को अपने एक व्यापारी मित्र के पास भिजवा दिया और कहलाया कि "इन दोनों को आपके यहाँ इस आशा से भेज रहा हूँ कि ये तरक्की करे। जिगना बड़ा समझदार है। यह अपने जिंदगी में कामयाब रहेगा। इसे किसी जगह काम पे लगा दो। माथुर जाहिल, निकम्मा और मूर्ख है। इसे कहीं छोटे काम, सफाई आदि के काम में लगा दें।"

दोनों व्यापारी के यहाँ पहुँच गए। व्यापारी अपने सामने किसी को बुद्धिमान नहीं समझता था। उसने दोनों को परखना चाहा। दोनों को दो फावड़े और दो टोकरियाँ देकर पहाड़ की चोटी से मिट्टी लाने के लिए कहा। उसने यह भी कहा कि, "एक टोकरी के बदले में एक सोने की मोहर मिलेगी।

दोनों बड़ी मुश्किल से चोटी तक पहुँचे। कठोर चट्टान देखकर जिगना तो बैठ गया लेकिन माथुर ने हिम्मत नहीं हारी। वह खोदने में लगा रहा। उसे देखकर जिगना भी खोदने लगा। चट्टान खुदने पर उन्होंने देखा कि उसके छिद्रों में चिड़ियों ने अपने घोंसलें बना रखे हैं। उनमें अनगिनत अंडे और बच्चे भरे हुए हैं। उसी समय अम्बर में चिड़ियाँ आकर चहचहाने लगीं। माथुर ने कहा, "जिगना खोदना बंद कर दो। चिड़ियाँ कह रही हैं कि उनके बच्चों को नुकसान होगा तो ठीक नहीं होगा।

जिगना बोला – "फिर तुमने मूर्खता की बात शुरु की। अपना काम करते रहो। यह और कहीं अपना घोंसला बना लेंगी। अंडे टूटते है तो टूटने दो। बच्चे मरते हैं तो मरने दो। हमें तो अपने काम से मतलब है।" वह निर्दयता से उन अबोध और बेसहारा जीवों पर प्रहार करता रहा। शाम को दोनों टोकरी में मिट्टी भरकर निवास की ओर चलें। कुछ ही दूर चले थे कि असंख्य पक्षियों ने जिगना को घेर लिया और अपनी चोंचों से प्रहार करना शुरु कर दिया। वह गिर पड़ा, उसकी टोकरी

घाटी में लुढ़कती हुई गिर गई। जिगना भी पैर फिसल जाने से लुढ़कने लगा और एक क्षण की देर भी उसके लिए घातक बन सकता था पर माथुर ने संभाल लिया। रास्ते में दोनों विश्राम करने के लिए बैठ गए। माथुर को नींद आ गई। जिगना ने इस मौके का पूरा फायदा उठाया। वह उसकी टोकरी लेकर चला गया। निवास पर पहुँच कर उसने व्यापारी से कहा-माथुर तो बहुत ही निकम्मा और जाहिल है। उसने तो कोई काम ही नहीं किया। अभी भी वहीं पड़ा सो रहा है।

व्यापारी ने उसे एक सोने की मुद्रा पुरस्कार में दी। उसने जिगना से पूछा कि, "क्या तुम जहाज का काम जानते हो ?

जिगना ने उत्तर दिया- "मैन जहाजों के हर काम से वाकिफियत रखता हूँ। इसके सिवा दिशाओं, मौसम और वायु संबंधी ज्ञान भी मुझे है।" बहुत अच्छे, तो कल हमारा जहाज विदेश जा रहा है। तुम्हें उसके साथ जाना होगा। मैं तुम्हें कप्तान का सलाहकार नियुक्त करता हूँ।

इधर अंधेरा हो जाने पर घबराया हुआ माथुर आया। व्यापारी तो असंतुष्ट था ही उसने माथुर की मरम्मत की और उसे अर्धरात्रि को ही घर से निकाल दिया।

माथुर सर्दी की उस भयानक रात में एक पेड़ के नीचे ठिठुरता रहा। वह सोचने लगा कि जब इसने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया है तो जिगना के साथ तो न जाने क्या किया होगा। क्योंकि मैंने टोकरी भिजवा दी थी। जिगना तो बेचारा अपनी टोकरी से ही हाथ धो बैठा था। पता नहीं बेचारा कहाँ किस स्थिति में होगा।

प्रभात हुआ। माथुर समुद्र की ओर काम की खोज में गया। एक जहाज एक जगह जाने के लिए खड़ा था। उसने उसी में नौकरी कर ली। इतने में उसकी नज़र जिगना पर पड़ी। उसने देखा कि वह कीमती कपड़े पहने कप्तान के साथ घूम रहा है। उसे यह देखकर हर्ष हुआ परंतु विस्मय भी कम न हुआ। जिगना से तो उसे पूछने की हिम्मत न हुई क्योंकि उसने तो माथुर को देखने के पश्चात भी अनदेखा जैसा व्यवहार किया। जहाज के एक नौकर से उसे मालूम हुआ कि यह जहाज के काम में बहुत होशियार है। इसलिए उसे जहाज के कप्तान का सलाहकार बनाया गया है।

माथुर विचार करने लगा कि जिगना तो जहाज के बारे में कुछ भी नहीं जानता है। उसे इस तरह धोखा नहीं देना चाहिए था। झूठ का व्यापार अधिक दिनों तक नहीं चलता है।

कप्तान ने जिगना की सलाह लेकर जहाज का लंगर उठा दिया। परंतु यह क्या ! जहाज को मौसम के कारण बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा और काफी हानि भी उठानी पड़ी।

कप्तान ने शीघ्र ही जिगना के वास्तविक ज्ञान का पता लगा लिया और उसको साधारण मजदूरों के साथ काम पर लगा दिया।

इसी बीच कप्तान को एक मल्लाह ने बताया कि जहाज में एक ऐसा नौकर है जो पक्षियों की भाषा जानता है। कप्तान ने तुरंत उसे बुलाकर अपना सलाहकार नियुक्त कर लिया। अब समस्त कार्य माथुर के इशारे पर होने लगे। जहाज बिना किसी विघ्न – बाधा के गंतव्य स्थान पर जा पहुँचा। कप्तान ने माथुर को पुरस्कार भी दिया।

माथुर, कप्तान के अनुरोध के बाद उसी देश में रह गया। जिगना भी माथुर के साथ जहाज से उतर पड़ा।

इस राज्य का राजा बहुत ताकतवर और धनवान था। पर कौवों के उत्पात के कारण वह बहुत परेशान था। तीन कौवें दिनभर उसके आस-पास चक्कर काटते हुए कांव-कांव करते रहते थे। रात को भी राजा के शयनागार की खिड़की पर बैठकर चिल्लाते रहते थे। प्रयत्न के बाद भी न तो भगाए ही जा सके और न कोई उन्हें मार सका।

हारकर राजा ने घोषणा करवा दी कि जो कोई इन कौवों से उन्हें छुटकारा दिलाएगा, उसके साथ वे राज कुमारी की शादी कर देंगे और उसे राज्य का स्वामी बना देंगे।

जिगना, माथुर के रोकने के बाद भी न माना और राजा से आज्ञा लेकर कौवों को भगाने के अनेकों प्रयास किए पर असफल रहा। राजा ने उसे दूसरे दिन फाँसी पर लटकाने का आदेश दे दिया। माथुर को यह सुनकर बड़ा धक्का लगा। उसने जिगना के प्राण बचाने का निश्चय किया।

वह राजा के पास पहुँचा और कौवों को भगा देने का अपना निश्चय बताया। कौवों की बोली वह जानता था। उनकी बात सुनकर उसने उस राजा की परेशानी दूर कर दी। कौवे चले गए। राजा प्रसन्न हुआ। माथुर ने उसी समय राजा से प्रार्थना की कि जिगना को प्राण दंड न दिया जाए।

राजा ने कहा कि हमारे देश के नियमानुसार जिसे आदेश के बाद भी प्राणदंड नहीं दिया जाता उसे शाही अस्तबल में सईस बनकर रहना होता है।

जिगना को अस्तबल में भेज दिया गया। उसका जीवन घोड़ों की सेवा करते ही व्यतीत हुआ। राजा ने राजकुमारी की शादी माथुर के साथ कर दी और अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। प्रसन्नता के साथ कई वर्ष व्यतीत हो गए। अब माथुर राजा बन गया। एक दिन वह घूमने के लिए निकला। मार्ग में एक दुर्बल बूढ़े ने बड़ी ही दीन भाषा में उससे नौकरी की प्रार्थना की।

राजा माथुर ने उसे उस महल में भिजवा दिया। रात में भोजन के बाद माथुर को हाथ धुलाने के लिए वही नौकर आया। माथुर ने उसके सजल नैन देखकर पूछ- "बूढ़े, क्यों रो रहे हो ?" बूढ़े ने कहा, "महाराज, मेरा एक बेटा चिड़ियों की बोली जानता था। एक दिन उसने चिड़ियों को बोलते सुनकर कहा था कि वह राजा बनेगा और मैं रजत पात्र में जल लेकर उसके हाथ धुलाऊँगा। मैं तो अपना काम कर रहा हूँ। लेकिन न जाने मेरा माथुर कहाँ होगा ?

"मैं ही आपका माथुर हूँ, पिताजी।" और वह बूढ़े के पैरों से लिपट गया।

श्री अशोक कुमार
महालेखाकार (सा. एवं.सा.क्षे.ले.परि.

उनकी याद

प्रदीप कुमार जांगिड़
क्षेत्रीय आयुर्वेदिक अनुसन्धान केंद्र

दिल के इक कोने से उठती
न जाने कैसी है उनकी याद,
कुछ याद करने की कोशिश में
सब कुछ भुलाती उनकी याद।
चले थे वो हमसफ़र बनकर,
राह - ए - अज़नबी बनाती उनकी याद
देखें डाल के नजरें, नजरों में उनकी
लेकर हर पल ये फ़रियाद।
इक कशिश सी लिए दिल में
चली आयी है उनकी याद,
इक जख्म जो बना है सीने में
राहत सी दिलाती उनकी याद।
किये थे जो वादे हमने
उन्हें दोहराती हुई उनकी याद
मन के तारों से खेलती
इक तरन्नूम सा छेड़ती उनकी याद।

प्यार का इम्तिहान

आज कॉलेज का 15 वां दिन था, विवेक का कमरा छोटा था लेकिन उनके ख्वाब और हौसलें बहुत बुलंद थे। उसने अपनी पुरानी साइकिल उठाई और कॉलेज की तरफ रवाना हो गया। रास्ते में सोच रहा था कि आज वह मोनिका के सामने से नहीं गुजरेगा क्योंकि जब भी वह मोनिका के सामने जाता है तो उसकी धड़कनें तेज़ हो जाती हैं। सुनसान रास्ते में मोनिका अकेली कॉलेज जा रही थी, घबराहट में विवेक ने जोर से पैडल मारना शुरू कर दिया पर मोनिका के सामने जाते ही साइकिल का चैन फंस गया। क्या हुआ विवेक? मोनिका ने मुस्कुराकर पूछा। कुछ नही बस चैन फंस गया। विवेक ने कांपते हुए स्वर में कहा। चलो पैदल ही चलते हैं, मोनिका ने सहारा देते हुए कहा। विवेक के पास और कोई उपाय नही था, संकुचाते हुए कहा - ठीक हैं। कॉलेज के 20 मिनट की यात्रा के दौरान दोनों एक-दूसरे के बहुत करीब आ गए । मोनिका के चंचल व्यवहार ने विवेक के दिल में दबे प्यार के बीज को अंकुरित कर दिया। धीरे-धीरे उन दोनों की दोस्ती बढ़ने लगी। दूरियां नजदीकियों में तब्दील होने लगी और एक दिन विवेक ने मोनिका को प्रपोज कर दिया। मोनिका भी विवेक को बहुत पसंद करती थी, उसने भी उसे खुले मन से स्वीकार कर लिया।

कॉलेज पूरा होने के बाद विवेक ने मुंबई में ही छोटे कर्मचारी के रूप में एक बहुत बड़ी कंपनी में ज्वानिंग ले लिया। जबकि मोनिका दिल्ली में अपने मां बाप के घर से उसे घंटो भर फोन पर बातें करती थी। लेकिन धीरे-धीरे मोनिका का फोन आना बंद हो गया। विवेक भी जब कभी भी फोन करता था तो फोन काट दिया जाता था या फिर लंबे समय तक घंटिया बजती रहती।

विवेक भी व्यस्तता के कारण उनसे मिल न सका लेकिन उसने मोनिका के बारे में जानने के लिए पूरी कोशिश की। वह मोनिका के हर रिश्तेदार से मिला लेकिन किसी को भी मोनिका कहाँ हैं उसकी जानकारी नहीं थी। इस बात को पूरे 7 साल हो गए थे। एक दिन विवेक ऑफिस से बाहर ही निकला ही था कि सामने सड़क पर खड़े एक गुब्बारे वाले के पास एक महिला अपने छोटे बच्चे के साथ खड़ी थी। उसका बेटा गुब्बारे खरीदने के लिए जिद्द कर रहा था पर वह मना कर रही थी।

विवेक को उस महिला का चेहरा कुछ जाना पहचाना लगा। उसने अपनी कार को रोका और गौर से देखा तो वह अवाक रह गया, वह महिला कोई और नहीं मोनिका थी और वह बच्चा उसी का बेटा था। उसके मन में कई सारे सवाल उत्पन्न हो रहे थे। कार को सड़क किनारे रोक कर वह मोनिका के नजदीक जाकर खड़ा हो गया।

एक पल के लिए तो मोनिका विवेक को सामने देखकर हैरान रह गयी लेकिन बाद में उसने अपने आपको संभालते हुए औपचारिकता के लिए पूछा- हैलो, कैसे हो विवेक ? जिंदा हूँ। विवेक ने कड़वे लहज़े में जवाब दिया। उसके जहन में पिछले कई सालों से जो सवाल शूल की भांति चुभ रहा था वह आज बाहर निकल ही आया। मोनिका तुम बिना बताएं कहां चली गयी थी? मैंने तुम्हे कहाँ-कहाँ नही ढूंढा।

मोनिका ने विवेक की इस बात का जवाब देना मुनासिब नहीं समझा और अपने बेटे के पास जाकर कहा- "सोहम बेटा यह विवेक अंकल हैं इन्हें हैलो कहो।" सोहम ने मीठी मुस्कान के साथ "हैलो" कहा। उसकी मुस्कान को देखकर

विवेक अपनी कड़वाहट भूल गया। उसने गुब्बारें वाले से एक बड़ा गुब्बारा खरीदकर उसके हाथ में थमा दिया।

मोनिका सोहम की उंगली पकड़कर अब सड़क के दूसरी छोर पर चलनी लगी। सामने के मल्टी टेरीस्ट में ही उसका फ्लेट था । विवेक भी उसके पीछे-पीछे बार-बार एक ही रट लगा रहा था जिससे परेशन होकर मोनिका भड़क गयी। देखो विवके, अब हमारे बीच ऐसा कुछ भी नही है; जैसा तुम चाहते थे । कहीं मेरे पति ने देख लिया तो मेरी गृहस्थी बर्बाद हो जायेगी। प्लीज़ यहां से चले जाओ। मोनिका मुंह फेरते हुए अंदर चली गयी।

विवेक को जरा सा भी अंदेशा नहीं था कि इतने बरसों बाद मोनिका मिलेगी वो भी इस हालात में। मोनिका भी उस वक्त को याद कर रही थी जब उसके चाचा जी एक बड़े कंपनी के एमडी मोहन अग्रवाल का रिस्ता लेकर आये थे । उस वक्त मोनिका असमंजस में थी कि किसे चुने।

मोहन के सामने विवेक की औकात फूटी कौड़ी की भी नही थी। मोहन के पास पुरखों की जायदाद के साथ एक बड़े उद्योग की कमान थी। वह मोनिका के सारे सपनों को पूरा कर सकता था जिसे वह दिन-रात देखा करती थी। जबकि दूसरी ओर विवेक के पास उस वक्त रहने के लिए खुद का एक कमरा भी नहीं था। काफी सोच विचाकर अंत में मोनिका ने प्यार के बदले पैसे को चुना और परिवार सहित मुबई में जा बसी।

एक दिन जब मोनिका मार्केट से आयी तभी चौकीदार ने उसे एक लेटर दिया और कहा कि मैडम यह एक साहब आपके लिए छोड़कर चले गये हैं। मोनिका ने कांपते हुए उस लेटर को हाथ में लिया और अंदर जाकर पढ़ने लगी जिसमें विवेक ने अपने जज्बातों को उकेरा था।

“मोनिका, पता नहीं क्यों मैं चाहकर भी तुमसे नफरत नहीं कर पाया । तुम्हारे जाने के बाद भी मुझे हमेशा ऐसा लगा कि तुम मेरे साथ हो। तुम्हारे साथ वो बिताये हुए पलों को याद करके मैं अपने सारे गम भूल जाता हूँ। गलती मेरी भी हैं कि मैंने अपनी जिम्मेदारी निभाने के चलते तुम्हे ढूंढने का कोई प्रयास नहीं किया। मैं तुम्हे आज भी उतना ही चाहता हूँ जितना कल चाहता था। भगवान से दुआ करता हूं कि अगले जन्म में तुम्हे मेरा साथी जरुर बनाए।”

मोनिका ने लेटर के नीचे देखा, जिसमें उसी कंपनी का पता लिखा था जिसमें उनके पति काम करते थे। दूसरे दिन सुबह-सुबह मोनिका ने अपने पति से झिझकते हुए पूछा- क्या आप विवेक पाटिल को जानते है?

क्यों नहीं भला एक नौकर अपने बॉस को कैसे भूल सकता है। वह हमारी कंपनी के नये सीईओ हैं बहुत ही होनहार और काबिल हैं। मोहन ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा और मोनिक यह शब्द सुनकर शर्मसार हो गई।

ज़िन्दगी तुम कब वापस आओगे ॥

ज़िन्दगी तुम कब वापस आओगे ॥

जा रहे हो सूना कर मेरे घर आँगन को,
कितने आधे अधूरे गिले सिकवे....
उम्मीदों के साये में बंधे हुए हैं; कि
कब तुम खरे सोने की तरह निखरकर लौटोगे ।

ज़िन्दगी तुम कब वापस आओगे ॥

अपना घोंसला छोड़ चले हो,पंख अपना खोल चुके हो;
जाना है अपनी मंजिल की ओर, खुदा करें;
खूब कामयाबी तुम्हें मिलें,
इस बेवजह जिंदगी से....
जब तुम अपने जीने की वजह ढूँढ़ लोगे,
तब तो लौट के वापस जरूर आओगे न...!!

ज़िन्दगी तुम कब वापस आओगे ॥

भूली बिसरी है यादें पुरानी, अल्हड़पन की किस्से सुहानी
आँखें बिछाये बैठी हूँ; पतझड़ मौसम के बहारों में, न जाने तुम कब आओगे,
इस सूखे पेड़ की हरियाली तब छायेगी
जब...!! तुम बारिश बन कर आओगे,

ज़िन्दगी तुम कब वापस आओगे ॥

निबेदिता पट्टनायक
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भुवनेश्वर

भुवनेश्वर : पर्यावरणीय समस्याएं एवं समाधान

डॉ मनीष कुमार, वैज्ञानिक
खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान

मंदिरों का शहर – भुवनेश्वर अर्थात् ईश्वर का आलय, को हाल ही में विभिन्न सूचकों के आधार पर भारत सरकार के उच्च प्राथमिकता कार्यक्रम के अंतर्गत "स्मार्ट सिटी" के रूप में चयनित किया गया है जो स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि भारत के प्रमुख शहरों में हमारा शहर अग्रणी है । भुवनेश्वर, ओडिशा राज्य की राजधानी है तथा जनसंख्या की दृष्टिकोण से सबसे बड़ा शहर है। सन 2011 के जनगणना के अनुसार भुवनेश्वर की आबादी 8 लाख से अधिक है।

ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में सन 1948 में भुवनेश्वर को कटक के स्थान पर राजधानी के रूप में प्रतिस्थापित किया गया। 1946 में जर्मन वास्तुकार ओटो कोनिग्स्बेर्गेर ने आधुनिक शहर जमशेदपुर और चंडीगढ़ के साथ-साथ भुवनेश्वर शहर का भी डिजाइन किया। लिंगराज मंदिर की भूमि आधुनिक स्वत्रंत भारत के सुनियोजित शहरों में से एक है और पूर्वी भारत में आर्थिक और धार्मिक महत्व का एक केंद्र के रूप में उभर रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और एजुकेशन हब होने के कारण प्राचीन शहर भुवनेश्वर देश के सबसे तेज़ी से विकसित शहरों में से एक है।

भुवनेश्वर शहर के भौतिक परिवेश जैसे जमीन और इसका उपयोग, जलवायु (वतावरण का तापमान, वर्षा इत्यादि), जलीय परिस्थिति तथा जैविक संसाधन में विगत कुछ सालों में काफी तेज़ी से बदलाव आया है। यहाँ के बुर्जुगों से अकसर सुनने को मिलता है कि भुवनेश्वर शहर का पर्यावरण कुछ दशकों से विभिन्न मानव गतिविधियों के कारण बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। जलवायु परिवर्तन विशेषकर वैश्विक तापन के कारण भी भुवनेश्वर का पर्यावरण में बदलाव आया है। गर्मियों में दिन और रात के दौरान तापमान में इज़ाफा देखा जा रहा है। इस परिस्थिति का असर लोगों के स्वास्थ्य और रहन सहन पर भी पड़ रहा है। वर्षा के अधिकांश भाग मानसून की तुलना में चक्रवात की वजह से होने के कारण भुवनेश्वर में निचले इलाकों के अधिकांश भू भाग में जल भराव हो जाता है जिसके कारण बहुत प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं- विशेषकर स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं। भूमि के ऊपर बेतहाशा भवन एवं निर्माण कार्य के कारण भूमि में जल संचयन कम गया है जिसके फलस्वरूप शहर के प्रमुख क्षेत्रों में भूजल स्तर करीब एक मीटर नीचे चला गया है । इसके अलावा वायु और जल प्रदूषण की समस्या दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है । प्रदूषण का मुख्य कारण शहर की तीव्र गति से वृद्धि है जिसके फलस्वरूप परिवहन, उद्योग, जनसंख्या वृद्धि, गहन बिजली/लकड़ी/कोयला का उपयोग गतिविधियाँ प्रमुख है। ओडिशा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, भुवनेश्वर की रिपोर्ट ने प्रदूषण के लिए 88 उद्योगों की पहचान की है जिनमें से 16 उद्योग हवा प्रदूषण और 34 उद्योग हवा और पानी प्रदूषण फैलाने की श्रेणी में आते हैं । साथ ही साथ शहरीकरण ने वृक्ष आच्छादन क्षेत्र को भी बुरी तरह से प्रभावित किया है। नए भुवनेश्वर क्षेत्र की तुलना में अभी भी पुराने भुवनेश्वर का सुनियोजित विकास नहीं हो पाया है जिसके फलस्वरूप उस क्षेत्र में अधिक पर्यावरणीय आधारित समस्याओं का समाना करना पड़ता है। शहर के विकास के साथ-साथ कचरे की समस्याएं भी प्रदूषण के हालात को बद से बदतर कर रहा है। इन सब प्रदूषणों तथा पर्यावरणीय समस्याओं के दुष्परिणाम से लोगों के रहन सहन की गुणवत्ता पर बुरा

असर दिख रहा है। यही नहीं पशु एवं पक्षी तथा अन्य जीव जंतु भी इन पर्यावरणीय समस्याओं का मार झेल रहे हैं तथा यथाशीघ्र इन समस्याओं का निदान अत्यंत आवश्यक है।

स्मार्ट सिटी के अंतर्गत भुवनेश्वर शहर को पर्यावरणीय हरित स्थान बनाने के लिए कुछ मुख्य सुझाव इस प्रकार हैं :

1. शहरी योजना के अंतर्गत पर्यावरण को एक महत्वपूर्ण थीम के रूप में प्राथमिकता प्रदान करना।

2. भुवनेश्वर शहर के निवासियों में पर्यावरण के लिए जागरूकता एवं संवेदनशीलता को बढ़ाना तथा पर्यावरण के संरक्षण एवं सुरक्षा में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करना।

3. भुवनेश्वर शहर के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों के लिए सूक्ष्म पर्यावरणीय क्षेत्रीय योजना एवं उनका कार्यान्वयन।

4. पर्यावरण प्रदूषकों का निरंतर मूल्यांकन एवं उनका प्रबंधन।

5. क्लीन एवं ग्रीन भुवनेश्वर के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पर्यावरणीय गतिविधियों जैसे वृक्षारोपण, समुचित अपशिष्ट प्रबंधन, सामुदायिक परिवहन प्रणाली का विस्तार, प्रदूषण नियंत्रण प्रणाली को कार्यान्वित करना इत्यादि।

6. भुवनेश्वर में पर्यावरण प्रबंधन के लिए विश्व स्तरीय सर्वश्रेष्ठ प्रबंधन प्रथाएं (बेस्ट मेनेजमेंट प्रॉकटिसेस) को अपनाना।

7. "पाल्यूटर्स पे सिद्धांत को अंगीकार करना अर्थात प्रदूषण फैलाने वालों प जुर्माना लगाना तथा उस पैसे का उपयोग पर्यावरणीय समस्याओं के निदान के लिए करना।

8. वैज्ञानिक चिंतन तथा वैज्ञानिक कार्य (रैशनल थिंकिंग एवं वर्क) को बढ़ावा देना।

हमें पूरा यकीन है कि हमारा भुवनेश्वर शहर न केवल अपनी सांस्कृति, धार्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक पहचान को सजोएँ रखेगा बल्कि स्मार्ट सिटी के अंतर्गत "हरित शहर" के रूप में विकसित होकर चिरकाल तक पहचाना जाएगा।

डॉ.मनीष कुमार, वैज्ञानिक
खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान

पर्यावरण है हम सबकी जान,
इसलिए करो इसका सम्मान

प्रकृति का मत करो शोषण
सब मिलकर बचाओं पर्यावरण

जहाँ न पेड़-पौधें हैं, न चिड़िया हैं
न हरियाली है, वहाँ जीवन एक बोझ है

राष्ट्रीय कैरियर सेवा (N.C.S.): रोज़गार के अवसर के माध्यम से बेहतर आर्थिक स्थिति के लिए एक पहल

रोज़गार पिछले दो दशकों में विकास के एजेंडे में एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरा है। विकसित देशों में, लगातार उच्च और बढ़ती बेरोज़गारी दर ने रोज़गार सृजन के लिए नए सिरे से चिंताओं को जन्म दिया है जबकि कई विकासशील देशों में उत्पाद रोज़गार गरीबी उन्मूलन के लिए एक साधन के रूप में देखा जाता है।

रोज़गार सृजन एलपीजी (उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण) की नीतियों का सीधा उद्देश्य नहीं है लेकिन यह समझा जाता है कि उच्च विकास दर और बड़े निर्यात रोज़गार वृद्धि के लिए नेतृत्व करेंगे। एक महत्वपूर्ण तरीका है जिसके माध्यम से व्यापार और निवेश उदारीकरण नौकरियों की उच्च विकास दर के लिए नेतृत्व कर सकें। प्राथमिक वस्तुओं का विनिर्माण करने के लिए और आधुनिक सेवाओं से निर्यात आधार में एक बदलाव होगा। इन तत्वों के व्यापार और निवेश करने के लिए, तकनीकी परिवर्तन, टिकाऊ आजीविका, मैक्रो नीति, उद्यमशीलता विकास, कौशल विकास, सक्रिय श्रम बाजार की नीतियों, सामाजिक सुरक्षा, कार्यदशा और गरीबी में कमी की शर्तों से संबंधित हैं।

आईटी क्षेत्र का योगदान, सॉफ्टवेयर उद्योग सहित, रोज़गार की दिशा में इस समय अभी भी छोटा है लेकिन इसका महत्व दोनों आंतरिक और बाहरी में बढ़ रही है। हालांकि उम्मीद है कि यह विस्तार के अप्रत्यक्ष प्रभाव प्रत्यक्ष रोज़गार के इन अनुमानों में परिलक्षित से भी बड़ा होगा। "योजनाकारों का मानना है कि असली मुद्दा यह है कि "डिजीटल डिवाइड " को कम करने की नीति पर पर्याप्त ध्यान अब तक नहीं दिया गया है। तकनीकी 'डिवाइस' बहरहाल, अकेले आईटी के उपयोग के लिए ही सीमित नहीं है। इस प्रक्रिया को व्यवस्थित बनाने और विशेष रूप से प्रोत्साहित करने, उत्पादकता को बढ़ाने से प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण क्षेत्रों और गतिविधियों जिनमें गरीब और अर्द्ध बेरोज़गारों नियुक्त हो, गरीबी उन्मूलन के लिए उत्पादक रोज़गार सृजन करना महत्वपूर्ण होगा ।

रोज़गार की समस्या का एक हिस्सा हमेशा से आपूर्ति और श्रम की मांग के गुणात्मक पहलुओं के बीच एक बेमेल परिणाम रहा है: मांग अपेक्षित कौशल और कार्यकर्ताओं के साथ श्रमिकों की अनुपलब्धता के कारण अधूरी रह गयी है या अर्द्ध बेरोजगारों की कौशल की कोई मांग की है। समस्या अनिवार्य रूप से दो प्रकार है: भारतीय कर्मचारियों की संख्या का एक बड़ा हिस्सा कम कौशल है और कई कौशल ऐसे है जो मांग में नहीं हैं। इस प्रकार श्रम बल का एक निश्चित हिस्सा रोज़गार नहीं पाता है।

देश में 978 रोज़गार कार्यालय और विश्वविद्यालय रोज़गार एवं परामर्श केंद्र कार्यरत हैं। बेरोज़गार लोगों का जीवित पंजीयन रजिस्टर लगभग 4 करोड़ है जो नौकरी चाहने वाले हैं। हर साल लगभग 50 लाख नए पंजीकरण होते हैं। जबकि यह नेटवर्क प्रतिवर्ष लगभग 4 लाख लोगों के लिए ही प्लेसमेंट प्रदान करा पाता है। रोज़गार कार्यालय (रिक्तियों की अनिवार्य अधिसूचना) अधिनियम, 1959 इन रोज़गार कार्यालयों को वैधानिक शक्ति देता हैं। ऐसे सभी प्रतिष्ठानों जिससे 25 या इससे अधिक कर्मचारियों को रोज़गार की संभावना है इस प्रावधान के तहत आते हैं। रोज़गार कार्यालयों के रिक्त पदों की अधिसूचना अनिवार्य करने की जरूरत को वैधानिक सहायता प्रदान करता है। श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय (डी.जी.ई.) रोज़गार कार्यालयों में संचालन के लिए नीतिगत ढांचा प्रदान करता है इन्हें राज्य सरकारों द्वारा संचालित किया जाता है। इन वर्षों में, इस समस्या में वृद्धि हुई है नौकरी चाहने वालों को उचित नौकरी और रोज़गार प्रदत्ताओं को सही उम्मीदवार नहीं मिलते हैं।

वर्ष 2013 के दौरान मंत्रालय ने राज्य सरकारों के साथ एक सलाहकार समिति बनाई और आई.टी. मॉडल पर काम करने के लिए श्रम बाजार की मांग और बढ़ती युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा करने का फैसला किया है। रोज़गार की मांग करने के अलावा आज के युवाओं की शिक्षण, प्रशिक्षण, इंटर्नशिप, कौशल विकास पाठ्यक्रम, व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, कैरियर परामर्श और मार्गदर्शन और विभिन्न सरकारी योजनाओं से संबंधित जानकारी की बहुत आवश्यकता है। युवाओं की कैरियर एवं नियुक्ति आकांक्षाओं की पूर्ति करने के लिए अन्य देशों की काया पलट को आधार में ले कर नेशनल एम्पलॉयमेंट सर्विस को नेशनल कैरियर सर्विस (एनसीएस) में परिवर्तित करने के लिए सिफारिश की गई हैं। जहाँ वे युवाओं के कैरियर और रोज़गार की आकांक्षाओं को पूरा कर सुविधाओं और सेवाओं की एक व्यापक लाभ उठा सकें। तदनुसार एक कार्य समूह का गठन किया गया जिसने रोज़गार से संबंधित सेवाओं की जांच और प्रक्रियाओं के पुनर्गठन में व्यापक उपयोग के साथ भारत में स्थापित किया जा सकता है ।

मिशन मोड परियोजना 150 करोड़ रुपए के बजट के साथ आरंभ की गई जिसे बाद में 292 करोड़ कर दी गई है। मौजूदा सभी रोज़गार कार्यालय, कैरियर से संबंधित सेवाओं के रूप में परिवर्तित होंगे और कैरियर परामर्श और व्यावसायिक मार्गदर्शन गतिविधियाँ जो आज की आवश्यकता हैं और किसी अन्य एजेंसी द्वारा प्रदान नहीं किया जा रही हैं, सरकारी और निजी संस्थानों द्वारा प्रदान किया जाएगा। परियोजना का मुख्य उद्देश्य सही कैरियर के विकल्प प्रदान करना है ताकि वे सक्रिय रूप से एक उत्पादक और कुशल कार्यबल का गठन कर सकें। एन.सी.एस पोर्टल प्लेसमेंट के लिए अन्य प्रणालियों की विविधता से प्रासंगिक जानकारी प्रदान करता है। परियोजना शिक्षा, रोज़गार और प्रशिक्षण के बारे में जानकारी के लिए विभिन्न मांगों और युवाओं की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो जाएगा।

राष्ट्रीय कैरियर सेवा 2015 से संचालित की जा रही है। कौशल विकास पाठ्यक्रम, प्रशिक्षु, इंटर्नशिप, कैरियर परामर्श, आदि सभी रोज़गार से संबंधित सेवाओं के बारे में जानकारी प्रदान करना मुख्य उद्देश्य है। यह उम्मीद है कि एनसीएस सभी हितधारकों, भागीदारी के आधार पर करने के लिए सुलभ हो जाएगा और कॉल सेंटर / हेल्पडेस्क द्वारा और सीएससी (कॉमन सर्विस सेंटर) आदि के लिए मुख्य हितधारकों जैसे नए नोड्स के नेटवर्क के माध्यम से समर्थित सेवाओं की बड़ी संख्या प्रदान करना एनसीएस में शामिल हैं:

बेरोज़गार उम्मीदवारों जिनकों नौकरी की तलाश है या कैरियर परामर्श चाहिए

उम्मीदवारों जिनको व्यावसायिक या व्यापार के मार्गदर्शन की जरुरत हो

अनपढ़, ब्लू कॉलर श्रमिक जो कि रोज़गार की तलाश में हो

विकलांगों, पूर्व सैनिकों, वरिष्ठ नागरिकों, आदि के साथ

नियोक्ता उपयुक्त उम्मीदवारों की माँग

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिनांक 20 जुलाई, 2015 को आयोजित 46 वें भारतीय श्रम सम्मेलन में एनसीएस वेब पोर्टल www.ncs.gov.in का शुभारंभ किया। श्रम और रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार की एन.सी.एस. परियोजना है जो भारत में सबसे बड़े रोज़गार मंच के रूप में देखा जा रहा है। भारत के लोगों को अपने भाग्य को हाथों में लेने के लिए अपने भाग्य और वैश्विक क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा करने के लिए तथा अपने आपको सक्षम करने के लिए भारत सरकार की तीन महत्वपूर्ण पहल "कौशल भारत", "मेक इन इंडिया" (जो रोज़गार के अवसर पैदा करेगा तथा जो लाएगा शुभारंभ सामने कुशल मानव शक्ति को) और "डिजिटल इंडिया" (जो विशाल बहुमत के लिए इंटरनेट और प्रौद्योगिकी की शक्ति लाएगा)। एनसीएस एक ऐसा मंच है जहां यह सब एक साथ आते है। नौकरी चाहने वालों, नियोक्ताओं, सलाहकारों, प्रशिक्षकों और प्लेसमेंट संगठनों को एक मंच में एकत्रित करता है।

ओडिशा का पहला कैरियर केंद्र पहले से ही विकलांग व्यावसायिक पुनर्वास केंद्र (वी.आर.सी.एच) भुवनेश्वर में स्थापित

किया है और कार्यात्मक कर दिया गया है। पोर्टल आधार-आधारित प्रमाणीकरण के माध्यम से सभी लिंक और पंजीकरण ऑनलाइन और निः शुल्क है। इसके अलावा आधार कार्ड संख्या, पैन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट, नरेगा जॉब कार्ड तथा मतदाता पहचान कार्ड का उपयोग करके नौकरी साधक के रूप में रजिस्टर कर सकते हैं।

नौकरी चाहने वालों के लिए अब 3000+ कैरियर विकल्प एनसीएस प्लेटफार्म पर 53 प्रमुख उद्योग क्षेत्रों से उपलब्ध विकल्पों के माध्यम से फैसला कर सकते हैं। नौकरी चाहने वालों के भी एक उपयोगकर्ता के अनुकूल तरीके से उद्योग प्रवृत्तियों की पहुंच है। जो लोग ऑनलाइन रजिस्टर करने में असमर्थ हैं, वे मॉडल कैरियर सेंटर, वी.आर.सी.एच., भुवनेश्वर में स्थित केंद्र पर जाकर खुद को रजिस्टर और रोज़गार के अवसर, कैरियर परामर्श, रोज़गार मेलों और विभिन्न अन्य रोज़गार से संबंधित सेवाओं के सभी प्रकार की सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं। सरकार कैरियर केन्द्रों में रोज़गार कार्यालयों और विश्वविद्यालय रोज़गार सूचना परामर्श केंद्र बदल रहा है। नियोक्ता अब प्रतिभा देशव्यापी सफेद कॉलर कार्यकर्ताओं को नीली कॉलर कार्यकर्ताओं से कर्मचारियों की संख्या के डाटाबेस के माध्यम से देख कर उनके संगठनों के लिए सबसे उपयुक्त ढूँढ़ सकते हैं। (मंगलवार से रविवार प्रातः 8.00 बजे से संध्या 8.00 बजे तक टोल फ्री हेल्पलाइन (1800-425-1514) भी उपलब्ध है जो पंजीकरण के दौरान आने वाली कठिनाइयों को दूर करने अथवा अन्य प्रश्नों का जवाब देने में सक्षम है। मौजुदा केंद्र एक बहुभाषी कॉल सेंटर है।

31 मार्च 2016 तक सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में कुल 3,59,42,253 जॉबसीकर पंजीयन कर चुके हैं, जिन में से 1,22,580 ओडिशा से पंजीकृत किए गए हैं तथा 9,29,902 नियोक्ता पंजीयन कर चुके हैं जिसमें ओडिशा राज्य के कुल 23,415 हैं। कुल 28,060 रिक्तियाँ पोर्टल अधिसूचित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त 1270 परामर्शदाता, 27301 कौशल- प्रदताओं को भी पंजीकृत किया गया है। कुल मिलाकर, रोज़गार लक्ष्य के मात्रात्मक पहलुओं, चुनौतियाँ और उन्हें पूरा करने की आवश्यक रणनीतियों की भयावहता को बड़े पैमाने पर विश्लेषण किया गया है । वहाँ क्या बेरोजगारी की मात्रात्मक परिमाण है और नए रोज़गार के अवसरों का किस क्रम क्या प्रयासों का सभी के लिए रोज़गार, साथ ही विस्तार प्रदान करने के लिए समय की अवधि में उत्पन्न करने की आवश्यकता होगी। इसका समय-समय पर निरंतर आकलन किया गया है - दर और आर्थिक विकास, नीतियों और कार्यक्रमों की शर्तें - इन आवश्यकताओं को पूरा करने की जरूरत होगी। इन प्रयासों के परिणाम सामने आए हैं। हालांकि, रोज़गार आवश्यक परिमाण उम्मीद से कुछ हद तक कम रह गया है। एक ही समय में, यह उचित तर्क दिया जा सकता है कि उत्पन्न रोज़गार अभी भी कम होता है यदि विश्लेषण में इन प्रयासों को लक्षित और रणनीतियों और नीतिगत पहलों का विकास नहीं किया गया।

जे. पद्मनाव राव
यंग प्रोफेशनल, एस.सी.सी
विकलांग व्यावसायिक पुनर्वास केंद्र
(वी.आर.सी.एच.)
गंडमुंडा भुवनेश्वर.

मेरा बचपन

- धनु मुर्मु

बचपन के दिन सुहावने थे। बचपन में मुझे सारा संसार उल्लासमय आनंददायक लगता था। कोई न कोई मुझे गोद में उठाकर पुचकार लेता था । मैं किसी न किसी के गोद में होता था। मैं जब कोई गलती करता था तब माँ मुझे नहीं डाटती थी बल्कि प्यार से समझाती थी। जब मैं रोता था तब मेरी माँ ही मेरे मुरझाए चेहरे पर मुस्कुराहट लेकर आती थी। उनके प्यार और ममतामयी स्पर्श को पाकर मैं अपने सारे दुःख भूल जाता था। जिसकी आंचल की छांव में मैं अपने आप को सुरक्षित महसूस करता था और अपने सारे ग़म भूल जाता था लेकिन जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती गई मेरी माँ, मेरे पिता, मेरे भाई-बहनों से मेरा प्यार और सम्पर्क टूटता गया । चिंता बढ़ती गई । सांसारिक मामलों में परेशानियाँ, चिंताएँ आने लगीं । रात में अंधकार से डरकर जिस माँ की गोद में बैठता था और जिसकी बाहें पकड़कर सोता था, वह दिन बदलने लगा । भगवान से जो सम्पर्क सूत्र था वह भी टूटता गया । मैं अपनी दुनिया में खो गया । लेकिन मैं वही बचपन चाहता हूँ जो चिंतामुक्त होता है । न खाने की चिंता, न पीने की, न सोने की, न पैसा कमाने की, न जीने की, न मरने की चिंता, न ही कोई जिम्मेदारी होती है । बस खेलता- नाचता रहता है । बच्चा सदैव अज्ञान और निष्कपटता की दुनिया में जीता है । हम अपना बचपन स्वर्गिक वातावरण में बिताते हैं। बीते दिनों की मधुर यादें अभी तक मुझे पुलकित करती है और मैं सोचता हूँ कि अगर फिर से वही बचपन कभी आता तो मैं अपनी माँ की गोद में फिर से बैठ पाता।

****

***** जो दूसरों को जानता है, वह विद्वान है । जो स्वयं को जानता है वह ज्ञानी है ।**

***** वास्तविक असफलता वही है जब आप अपनी गलतियों से नहीं सीखते ।**

***** अच्छा काम करना अच्छी बातें करने से बेहतर है ।**

***** क्रोध के आने से बुद्धि नष्ट हो जाती है ।**

***** प्राय: सामयिक निर्णय नहीं लेना ही असफलता का मुख्य कारण होता है ।**

***** जीवन का उद्देश्य अपने मूल्यों को साबित करना नहीं है बल्कि उन्हें जीना है ।**

हक़ीकत

स्वपनों में विचरती हुई मैं, स्वयं अपना जीवन खोजती हूँ
अपने जीवन के सुखद क्षणों में, दुखद क्षणों में इस को जीवन खोजती हूँ।
कैसा है ये जीवन जो पास रहकर भी स्वयं से अपरिचित है, अनजान है
और स्वपनों में विचरती हुई मैं, स्वयं अपना जीवन खोजती हूँ।

कभी ज़िंदगी की शाम अधूरी प्रतीत होती है
सर्वत्र है दुख की कालिमा यही अनुभूति होती है।
प्राप्त करके जीवन में इक सौंदर्य, इस जीवन को मधुर बनाना चाहती हूँ
पर कहाँ है ये जीवन, अबोध – सा बचपन, इसकी परछाइयों में सिमट जाना चाहती हूँ।

मेरी मनोकामना है यही ईश्वर इस जीवन में,
स्वयं को कर सकूँ समर्पित, तेरे गीतों में तेरी बंदगी में।
मेरी हर धड़कन परिचित होना चाहती है
हे ईश्वर ! तेरी मौजुदगी, संजीदा कर जाती है मुझे।
मेरे निर्बोध से जीवन में हर जगह नीरसता नज़र आती है मुझे।
स्वपनों में विचरती हुई मैं, स्वयं अपना जीवन खोजती हूँ
जीवन के प्रत्येक क्षणों में अपना बचपन खोजती हूँ।

श्रीमती महिमा सिन्हा, स्नात्तकोत्तर
शिक्षिका (हिंदी), ज.न.वि. खोर्द्धा

** जीवन में गिरता हर इंसान है, जो दोगुने दम से उठता है, सफलता उसके कदम चूमती है।

** कार्यकुशल व्यक्ति के लिए धन और यश की कभी कमी नहीं होती ।

आशा की किरण

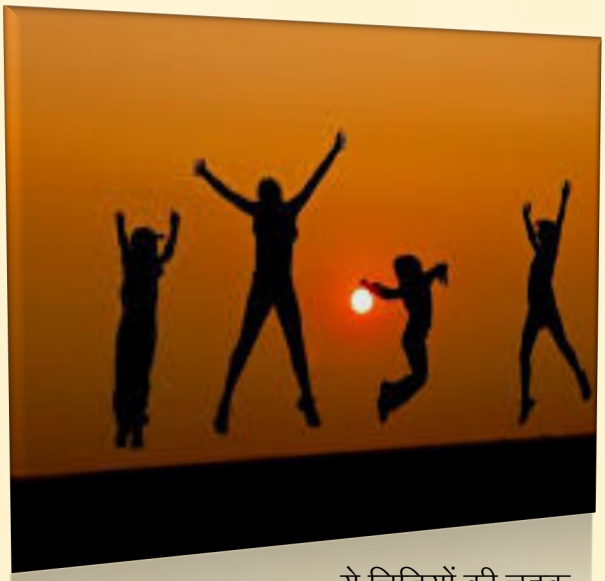

ये चिड़ियों की चहक
ये गुलाब की महक
जब सागर की मोती
आसमान की
हवा पे लहराएँगे।
सारे जहाँ से सरगम लेकर
शूरमा सजाएँगे
गर्दिश में तारें
रहें या न रहें
नई किरण जगाएंगे।
इंद्रधनुष से रंग लेकर
जीवन में रंग लाएंगे
उम्मीद के प्यासे पनघट पर
नई सुबह लाएंगे।

चाँद सितारों से किरणें लेकर
सपने सजाएँगे
बागों की कलियों से
दर्द चुराकर
मुस्कान भर जाएँगे।
ये सौगंध हमारा
होगा दूर अँधेरा
जब आशा की किरणें
सारे जग में
सब पे चमकाएँगे।

श्री दिलीप कुमार बाड़त्या,
टी.जी.टी (हिंदी),ज.न.वि. खोर्धा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गतिविधियाँ

वेबसाइट का लोकार्पण, हिंदी कार्यशाला एवं प्रतियोगिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 26.04.2016 को राजभाषा नीति का कार्यान्वयन : समस्याएं एवं समाधान" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के संस्थान प्रेक्षागृह में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. आर.वी. राज कुमार, अध्यक्ष नराकास एवं निदेशक भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री एस.के. पंडा, उप महा निदेशक राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र एवं सम्मानीय अतिथि के रूप में डॉ.आर.एन.बेहेरा, वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र उपस्थित थे।

कार्यशाला के दौरान नराकास भुवनेश्वर (के.) की वेबसाइट www.tolicbbs.nic.in का लोकार्पण भी किया गया। सदस्य-सचिव श्री नितिन जैन ने वेबसाइट की सामग्रियों और इसमें दिए ऑनलाइन पंजीकरण पैनल संबंधी जानकारी सांझा की।

कार्यशाला में श्री आर.एन.चाँद, राजभाषा अधिकारी, महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी) ने राजभाषा नीति का परिचय, श्री हरिराम पंसारी, सदस्य-सचिव नराकास (उपक्रम) ने हिंदी से संसाधित उपकरण एवं यूनिकोड एक परिचय, श्री नितिन जैन, सदस्य-सचिव नराकास (के.) ने ऑनलाइन तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने तथा राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए सुझाव दिए।

कार्यशाला के अंत में सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में श्री निहार रंजन पंडा, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर को प्रथम, श्री दिलीप कुमा दास, खादी ग्रामोद्योग को द्वितीय एवं श्री अभिषेक कुमार, महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी) को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके साथ ही डॉ. मनीष कुमार, आई.एम.एम.टी एवं श्री सुरेश चंद्र महापात्र, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय को सांत्वना पुस्कार प्राप्त हुआ।

पाँच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर के तत्वावधान में सी.एस.आई.आर—आई.एम.एम.टी भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 13-17 जून 2016 को पाँच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में सदस्य कार्यालयों के लगभग 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षणदाता के रूप में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के क्षेत्रीय कार्यालय के डॉ. आर.बी.सिंह, उपनिदेशक एवं श्री राकेश कुमार पाठक, सहायक निदेशक उपस्थित थे।

कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता सी.एस.आई.आर—आई.एम.एम.टी भुवनेश्वर टी के निदेशक प्रो. बी.के. मिश्र ने की। उन्होंने इस कार्य के सफल आयोजन की कामना के साथ सदस्य कार्यालयों की सक्रियता पर संतोष व्यक्त किया गया।

नराकास भुवनेश्वर की गतिविधियाँ

वेबसाइट का लोकार्पण, कार्यशाला एवं प्रतियोगिता

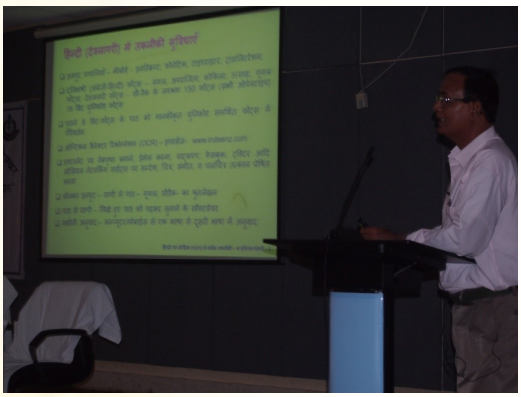

नराकास भुवनेश्वर की गतिविधियाँ

पाँच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी

भाषा के द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है । अपनी बात कहने का और दूसरों की बात समझने के लिए भाषा सबसे सशक्त साधन है । मनुष्य इस पृथ्वी पर आकर जब अपना होश संभालता है तो सबसे पहले वह भाषा अपनी माँ से सीखता है। उस भाषा को हम मातृभाषा कहते हैं । विभिन्न जगहों पर विभिन्न भाषाएँ बोली जाती है। आमतौर पर जिस देश में सरकारी कामकाज जिस भाषा में होता है उस भाषा को ही उस देश की राष्ट्रभाषा कहा जाता है। वैसे तो भारत देश में करीब 1622 भाषाएँ बोली जाती है पर हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है। 14 सितंबर 1950 को हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा घोषित किया गया था । उस समय यह निर्णय लिया गया था कि संविधान लागू होने के 15 वर्ष बाद भी हिंदी भाषा को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया जायेगा । इसका मतलब कि सन 1965 तक भारत की राजभाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा को मान्यता दी गई थी। उसके बाद हिंदी भाषा को भारत की राजभाषा कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ। हिंदी भाषा बेहद सरल और सुबोध भाषा है। इसमें जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। इस भाषा के माध्यम से किसी भी बात को बहुत सरल तरीके से समझा और समझाया जा सकता है । अंग्रेजी भाषा में एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं । अंग्रेजी भाषा में किसी शब्द का अर्थ इस बात पर निर्भर करता है कि आप उस शब्द का कहाँ प्रयोग करते हैं। परंतु हिंदी भाषा में इस प्रकार की कोई समस्या नहीं है। हिंदी भाषा में प्रत्येक शब्द का अपना एक अलग अर्थ होता है। इसलिए हिंदी भाषा बेहद सरल और सुबोध है। परंतु आज के समय में हिन्दुस्तान में न जाने किस कारण से अंग्रेजी भाषा का बोलबाला है । लोग अंग्रेजी भाषा बोलने में गर्व महसूस करते हैं। उन्हें हिंदी बोलने में झिझक महसूस होती है। जो व्यक्ति अंग्रेजी भाषा बोलता है उसे ज्यादा तवज्जों दी जाती है। सभी सरकारी कार्यालयों में ज्यादातर काम अंग्रेजी भाषा में होते है । सभी जगहों पर सूचनापट अंग्रेजी भाषा में लगे रहते हैं विद्यालयों में अंग्रेजी भाषा को महत्व दिया जाता है। मैं यहाँ पर किसी भी प्रकार से अंग्रेजी भाषा का अपमान नहीं करना चाहता यद्यपि मैं यहाँ पर अंग्रेजी भाषा का भारत देश में वर्चस्व बताने का प्रयास कर रहा हूँ ।

अंग्रेजों ने विश्व के लगभग सभी देशों पर राज किया है। जहाँ-जहाँ अंग्रेजों का राज था वहाँ-वहाँ आज के समय में अंग्रेजी भाषा बोली जाती है। इसलिए अंग्रेजी भाषा को दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा कहा जाता है। यदि हमें किसी दूसरे देश के व्यक्ति से कुछ भी वार्तालाप करना हो तो हमें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना जरूरी है। हाँ मैं यह मानता हूँ कि हम हिन्दुस्तानियों को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है ताकि हम दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सके पर इसका अर्थ यह कतई नहीं है की हम अपनी हमारी खुद कि भाषा को महत्व न दें । उसे बोलने में अपने आप को छोटा समझें। दुनिया में कई ऐसे देश हैं जहाँ पर सभी सरकारी कार्य उनकी खुद की भाषा में होता है । इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं है बल्कि उन्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान है पर वो लोग अपनी भाषा को ज्यादा सम्मान करते हैं और अधिक तवज्जों देते हैं । वो अपनी भाषा को बोलने में गर्व महसूस करते हैं। तो फिर हम क्यों नहीं करतें? हिन्दुस्तानी अपनी भाषा को बोलने में झिझक क्यों महसूस करते हैं, क्यों हम गर्व के साथ हिंदी भाषा को बढ़ावा नहीं देतें, क्या हमारी भाषा इतनी कमजोर है कि हमें किसी

कि हमें किसी दूसरे की भाषा को अपनाना पड़ रहा है। मेरा मानना है कि हमारे पास हमारी खुद की अपनी भाषा है। हमें किसी दूसरे की भाषा को अपनाने की कोई जरूरत नहीं है। हिंदी भाषा हमारी अपनी पहचान है। हमें किसी और की पहचान के सहारे जीने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब विश्व के अन्य देश अपनी भाषा में पढ़कर उन्नति कर सकते है। तो हम क्यों नहीं ?

हमें हिंदी भाषा को बढ़ावा देना चाहिए। हमारे सारे सरकारी कामकाज हिंदी भाषा में किये जाने चाहिए। अदालतों का कार्य हिंदी में होना चाहिए। प्राथमिक स्तर से स्नातक स्तर तक हिंदी को अनिवार्य कर देना चाहिए। सभी अंतर्राष्ट्रीय पत्र-व्यवहार हिंदी में होना चाहिए। इससे हिंदी भाषा का प्रचार होगा।

भारत देश विविधता में एकता को दर्शाता है और हिंदी को लोगों के बीच बढावा देने से यह भाषा भारतवासियों में एकता बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अंततः मैं यही कहना चाहूँगा कि हिंदी भाषा हमारी खुद की अपनी भाषा है, यह हमारी संस्कृति है। हमें इसे अपनाने में गर्व महसूस करना चाहिए।

श्री अजय सिंह मीणा
बी.टेक छात्र, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

हिन्दी की विशेषताएँ एवं शक्ति

1. संसार की उन्नत भाषाओं में हिंदी सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है
2. हिंदी सबसे अधिक सरल एवं लचीली भाषा है।
3. हिंदी दुनिया की सर्वाधिक तीव्रता से प्रसारित हो रही भाषाओं में से एक है।
4. वह एक मात्र ऐसी भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवादविहीन है।
5. हिंदी विश्व भाषा बनने की पूर्ण अधिकारी है।
6. हिंदी का शब्दकोष बहुत विशाल है और एक-एक भाव को व्यक्त करने के लिए सैकड़ों शब्द मौजूद हैं।
7. हिन्दी लिखने के लिये प्रयुक्त देवनागरी लिपि अत्यन्त वैज्ञानिक है।
8. हिन्दी बोलने एवं समझने वाली जनता पचास करोड़ से भी अधिक है।
9. हिंदी दुनिया की दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।
10. हिन्दी का साहित्य सभी दृष्टियों से समृद्ध है।
11. हिन्दी आम जनता से जुड़ी भाषा है तथा आम जनता हिन्दी से जुड़ी हुई है। हिन्दी कभी राजाश्रय की मोहताज नहीं रही। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम की वाहिका और वर्तमान में देशप्रेम का अमूर्त-वाहन।
12. भारत की सम्पर्क भाषा और राजभाषा है हिंदी।

- इंटरनेट से साभार

सुभाष चंद्र बोस

सुभाष चंद्र बोस जब भी कभी हम देखें उन्हें,

हमें अपने से लगने लगते हैं।

वह शूरवीर वह देशभक्त, वह नेताजी कहलाते है।

मर मिट गए वे देश के खातिर, तनिक नहीं घबराए

अपने राह पर सदा चले, कभी नहीं डगमगाए।

धर्म-अधर्म के लिए चिर संघर्ष, लिखा था उनके नसीब में

भर दिया पूरे भारत में हर्ष, ना भेद किया अमीर-गरीब में।

माटी के सपूत थे वे, माटी उनको प्यारी थी

ना देवी देवता न माता पिता, भारत माता उनको न्यारी थी।

आज़ादी के युद्ध में वे एक प्रमुख सेनानी थे

धन दौलत के भले न हो,मान सम्मान के धनी थे वे।

रग रग में उनके खून नहीं, अग्नि की धारा बहती थी,

जय भारत जय धरती माता, यही उनकी जुबान कहती थी।

आज यह देश स्वाधीन है, पर फिर भी यह अधीन है,

ना मुगल राज ना ब्रिटिश सरकार के हाथों ,

परन्तु दुराचार एंव भ्रष्टाचार के हाथों।

अम्रिता पति
छात्रा, कक्षा - बारहवीं
केन्द्रीय विद्यालय न0 1,

नकारात्मक सोच को कैसे करे सकारात्मक

आकर्षण का सिद्धांत (Law of Attraction) कहता है कि हम जो भी सोचते हैं उसे अपने जीवन में आकर्षित करते हैं फिर चाहे वह चीज़ अच्छी हो या बुरी।

उदाहरण के लिए :- अगर कोई सोचता है कि वो हमेशा परेशान रहता है, बीमार रहता है और उसके पास पैसों की कमी रहती है तो असल जिंदगी में भी ब्रम्हांड घटनाओं को कुछ ऐसे सेट करता है कि उसे अपनी जिंदगी में परेशानी, बीमारी और तंगी का सामना करना पड़ता है। वहीं दूसरी तरफ अगर वो सोचता है कि वो खुशहाल है, सेहतमंद है और उसके पास खूब पैसे हैं तो LOA की वजह से असल जिंदगी में भी उसे खुशहाली, अच्छी सेहत और समृद्धि देखने को मिलती है।

हम जो सोचते हैं, वो बन जाते हैं- **भगवान गौतम बुद्ध**

हम वो हैं जो हमें हमारी सोच ने बनाया है, इसलिए इस बात का ध्यान रखिये कि आप क्या सोचते हैं। -

स्वामी विवेकानन्द

जो लोग LOA मानते हैं वे समझते हैं कि सकरात्मक सोचना कितना जरूरी है। वे जानते हैं कि हर एक नकरात्मक विचार जीवन को सकारात्मकता से दूर ले जाता है और हर एक सकरात्मक विचार जीवन में खुशियां लाती है और किसी ने कहा भी है, "अगर इंसान जानता कि उसकी सोच कितनी पावरफुल है तो वो कभी नेगेटिव नहीं सोचता" पर क्या हमेशा सकरात्मक सोचना संभव है? यहीं पर काम आते हैं हमारे लेकिन, किन्तु, परन्तु.... दोस्तों, वैसे तो ये शब्द ज्यादातर नकारात्मक वाक्य में उपयोग होते हैं। उदाहराणार्थः- आप लोगों को कहते सुन सकते हैं..... मैं सफल हो जाता लेकिन..... सब सही चल रहा था किन्तु.....इत्यादि। परन्तु इन शब्दों का प्रयोग नकारात्मक वाक्य के अंत में करके उन्हें हम सकारात्मक में बदल सकते हैं, जैसे :- जैसे ही आपके मन में विचार आये, "दुनिया बहुत बुरी है तो आप इतना कह कर या सोच कर रुके नहीं, तुरंत एहसास करें कि आपने एक नकरात्मक वाक्य बोला है इसलिए तुरंत सावधान हो जाएं और वाक्य को कुछ ऐसे पूरा करें- दुनिया बहुत बुरी है, लेकिन अब चीजें बदल रही हैं बहुत से अच्छें लोग समाज में अच्छाई का बीज बो रहे हैं और सब ठीक हो रहा है।" कुछ और उदाहरण देखते है-

मैं पढ़ने में कमजोर हूँ, लेकिन अब मैंने मेहनत शुरू कर दी है और जल्द ही मैं पढ़ाई में भी अच्छा हो जाऊँगा।

मेरा बॉस बहुत ..... है, पर धीरे-धीरे वे बदल रहे हैं और उनको ज्ञान भी बहुत है, मुझे काफी कुछ सीखने को मिलता है उनसे।

मेरे पास पैसे नहीं हैं, लेकिन मुझे पता है मेरे पास बहुत पैसा आने वाला है, इतना कि मैं सिर्फ न अपने बल्कि

अपनों के भी सपने पूरे कर सकूँगा।

मेरे साथ हमेशा बुरा होता है, लेकिन मैं देख रहा हूँ कि पिछले कुछ दिनों से सब अच्छा ही हो रहा है और आगे भी अच्छा ही होगा।

मेरे बच्चे की शादी नहीं हो रही, परन्तु अब मौसम शादियों का है भाग्य ने उसके लिए बहुत ही बेहतरीन रिश्ता सोच रखा होगा, जो जल्द ही तय होगा।

यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात है यह महसूस करना कि कब आपके मन में एक नकरात्मक विचार आया है और तुरंत सावधान होकर इसे "लेकिन" लगा कर सकरात्मक में बदल देना और यह आपको सिर्फ तब नहीं करना जब आप किसी के सामने बात कर रहे हो। सबसे अधिक तो आपको यह अकेले रहते हुए अपने साथ करना है, आपको अपनी सोच पर ध्यान देना है, सचेत रहना है कि आपका विचार सकारात्मक है या नकारात्मक? और जैसे ही नकारात्मक विचार आये आपको तुरंत उसे सकारात्मक में बदल देना है। और एक चीज आप इस बात की चिंता न करें कि आपने "लेकिन" के बाद जो लाइन जोड़ी है वह सही है या गलत, आपको तो बस एक सकारात्मक वाक्य जोड़ना है और आपका अर्धचेतन मन ही उसे सही मानेगा और ब्रह्माण्ड आपके जीवन में वैसे ही अनुभव प्रस्तुत करेगा।

श्री यशवंत वर्मा
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे

महात्मा गांधीजी का एकादश व्रत

प्रगति के पथ पर चलते-चलते आज समय इक्कवीसवीं शताब्दी में पदार्पण कर चुकी है। विज्ञान और तकनीकी के बल पर मानव आज उन्नति के शीर्ष स्थान पर मंडन कर रहे हैं। लेकिन व्यक्ति विशेष की नैतिकता की मृत्यु होने लगी है जिसके लिए देश में अराजकता आध्यात्मिक अवक्षय, राजनैतिक अस्थिरता आदि समस्या दिन भर दिन बढ़ती जा रही है। मनुष्य अनुशासन विहीन होता जा रहा है। अनुशासन ही जीवन की सफलता की कुंजी है। ये नहीं है कि इस बार में कुछ किया नहीं जा रहा है लेकिन नतिज़ा निराशाजनक है। इसलिए देश की इस दुःखद घड़ी में देशवासियों को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के एकादश व्रत का पालन करना चाहिए। महात्मा गांधी जी की एकादश व्रत निम्न प्रकार हैं-

1) अहिंसा 2) अस्वाद 3) अपरिग्रह 4) अभय 5) शरीर श्रम 6) सत्य 7) ब्रह्मचर्य 8) स्वदेशी 9) अस्तेय 10) अस्पृश्यता निवारण 11) सर्वधर्म सम्मभाव आदि अनुशासन को अपनाकर अपने जीवन को प्रतिफलित करना चाहिए।

1. अहिंसा—प्रथमतः हमें अहिंसा की राह पकड़ी चाहिए। सत्य ही परमेश्वर है। उनके साक्षात्कार का एक ही मार्ग और एक ही साधन अहिंसा है। बगैर अहिंसा के सत्य की खोज़ असंभव है।
2. अस्वाद— मनुष्य स्वाद जब तक जीभ से रसों को जीते। तब तक ब्रह्मचर्य का पालन अति कठिन है। भोजन केवल शरीर पोषण के लिए है। स्वाद या भोग के लिए नहीं है।
3. अपरिग्रह— सच्चे सुधार की निशानी परिग्रह बुद्धि नहीं बल्कि विचार और इच्छा पूर्वक परिग्रह कम करना उनकी निशानी है। ज्यों-त्यों परिग्रह कम होता है, सुख और सच्चा संतोष बढ़ता जाता है। सेवा शक्ति बढ़ती है।
4. अभय— जो सत्य परायण रहना चाहे वह न तो जात बिरादरी से डरे, न सरकार से डरे, न चोर से डरे, न बिमारी या मौत से डरे, न किसी के बुरा मानने से डरे।
5. शरीर श्रम— जो खुद मेहनत न करें, उनका सिर्फ खाना ही एक उद्देश्य है क्या। जिनका शरीर श्रम कर सकता है उन स्त्री—पुरुषों को अपने रोजमर्रा के सभी कार्यों को खुद करना चाहिए और बिना हित-लाभ को ध्यान में रखकर दूसरों की भी सेवा करनी चाहिए।
6. सत्य— सत्य ही परमेश्वर है। सत्याग्रह, सत्य विचार सत्य वाणी, सत्य कर्म सब उसके अंग मात्र है। जहाँ सत्य है वहाँ शुद्ध ज्ञान है। जहां ज्ञान है, वहाँ आनंद ही आनंद है।
7. ब्रह्मचर्य—ब्रह्मचर्य का अर्थ है ब्रह्मा की—सत्य खोज़ में चर्चा। अर्थात संबंध रखने वाला आचार। इस मूल अर्थ में से सर्वेन्द्रिय संयम का विशेष अर्थ निकलता है।

8. स्वदेशी—अपने आस पास रहने वालें की सेवा में ओत-प्रोत हो जाना स्वदेशी धर्म है। जो निकट वाला की सेवा छोड़कर दूर वालों की सेवा करना को दौड़ता है और अपना देश का खाना, पहनना छोड़कर दूसरों का अनुकरण करता है, वह स्वदेशी को भंग करता है। इसमें जातीयता भाव नष्ट हो जाती है।

9. अस्तेय (चोरी न करना) - दूसरों की चीज़ को उसकी इजाज़त के बिना लेना तो चोरी ही है लेकिन मनुष्य अपनी कम से कम जरुरत के अलावा जो कुछ लेता या संग्रह करता है वह भी चोरी ही है।

10. अस्पृश्यता निवारण—छुआ छूत हिंदू धर्म का अंग नहीं है बल्कि उसमें घुसी हुई सड़न है, वहम है, पाप है। उसका निवारण करना प्रत्येक हिंदू का धर्म है, कर्तव्य है। आज कल जाति भेद की जो घिनौनी हरकतें हो रही हैं इसे खत्म करना सबका लक्ष्य होना चाहिए।

11. सर्वधर्म सम्भाव— जितनी इज्जत हम अपने धर्म की करते हैं उतनी ही इज्जत हमें दूसरों के धर्म की भी करनी चाहिए। जहाँ यह वृत्ति है वहाँ एक दूसरे से धर्म की विरोध हो ही नहीं सकता है। हमेशा प्रार्थना यही की जानी चाहिए की सब धर्म में पाये जाने वाले दोष दूर हों।

आज देश, समाज और पृथ्वी जिस संकट कि गुज़र रहे है। गांधी जी के एकादश व्रत से न केवल देश, देशवासी और पृथ्वीवासी एक बढ़ते हुए सकंट से बच पाएंगे बल्कि भविष्य की आने वाली पीढ़ी को भी एक नया मार्ग मिल जाएगा।

कमला नायक
ब.ले.प.अ. (सेवानिवत्त)

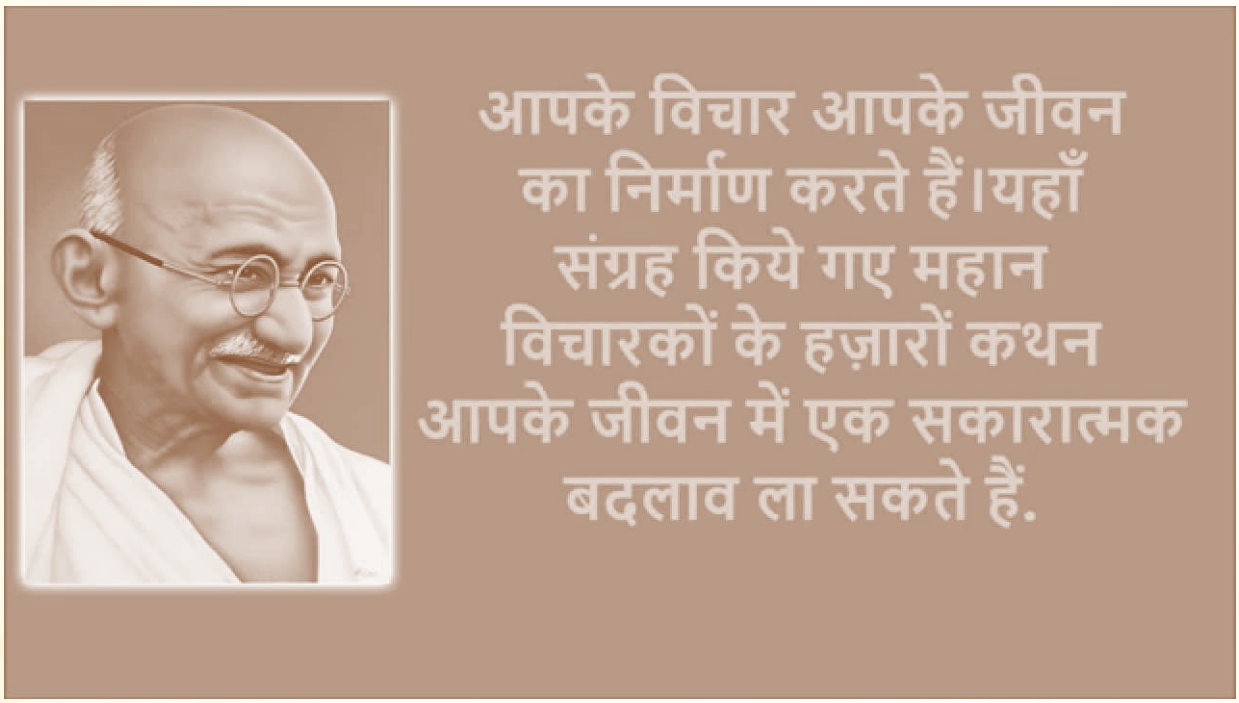

स्वच्छता : एक मानवीय रूपान्तरण

"दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार
तरुवर ज्यों पत्ता झड़े,बहुरि न लागे डार"॥

सन्त कबीरजी के इस दोहे से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस संसार में मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है, जो अति मुश्किल से प्राप्त होता है। वृक्ष से पत्ते एक वार झड़ जाने से जैसे वे पुनः शाखा में नहीं लगते हैं वैसे ही यह मानव शरीर बार-बार नहीं मिलता। शरीर नश्वर है,जीवनावधि बहुत छोटा है, परंतु करने के लिए बहुत कुछ है; और धर्म पालन का एक मात्र साधन इस शरीर को स्वस्थ रख पाना ही सबसे महत्वपूर्ण काम होता है। क्योंकि "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्"। कर्म सम्पादन के लिए एक स्वस्थ शरीर की आवश्यकता होती है। शास्त्र में भी यही अर्थ उपलब्ध है —"यावत् स्वस्थो ह्ययं देहः यावन्मृत्युश्च दूरतः ; तावदात्महितं कुर्यात् प्राणान्ते किं करिष्यति"। अर्थात् जब तक यह शरीर स्वस्थ है और मृत्यु बहुत दूर में है तब तक अपना हित साधन कर लेना चाहिए; नहीं तो मृत्यु के उपरान्त कुछ भी करना सम्भव नहीं। इस प्रसंग में शारीरिक तथा पारिपार्श्विक स्वच्छता की बात अवश्य आती है।

नाम और रूप से ही हर एक का परिचय स्वतन्त्र रूप से प्राप्त होता है। पर यह नाम रुपधारी स्थूल शरीर स्वयं कुछ नहीं कर पाता है। श्रीमद्भगवद्गीतामें(३-४२) इस विषयमें लिखा गया है-"इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ; मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः"। शरीर को चलाने के लिए आवश्यक है पञ्च कर्मेन्द्रिय और पञ्च ज्ञानेन्द्रिय। उन्हें फिर परिचालित करने हेतु मन की भूमिका अत्यन्त जरूरी है। मन में नित्य निरन्तर संकल्प और विकल्पात्मक कार्य करने का चिन्तन चलता रहता है। कार्य सम्पादन हेतु एक स्थिर और निर्णयात्मक सिद्धान्त में उपनीत होने के लिए बुद्धि भी अनिवार्य है। बुद्धि के ऊपर आत्मा है। उपनिषद् में उल्लिखित है- "आत्मानं रथिनं बिद्धि,शरीरं रथमेव च"। अर्थात् शरीर एक रथ है और आत्मा उस रथ का सारथि है। इसलिए यह शरीर तीन रूप में होता है - यथा स्थूल,सूक्ष्म और कारण। तो इन सबको लेकर ही शरीर निर्मित है एवं शारीरिक सुस्थता इन पर निर्भर करती है। जैसे किसी वस्त्र का व्यवहार से वह धूल मैल से आच्छादित हो जाता है और इसे साफ कर पुनः उपयोग में लाया जा सकता है वैसे ही बारम्बार व्यवहार से अन्य कई लोगों तथा परिवेश और परिस्थितियों के साथ संसर्ग में आने से यह शरीर कदाचित् दूषित हो जाता है। इसे स्वच्छ रखना, एक सुसंस्कार देना ही हमारा प्रथम और परम कर्तव्य है। बाह्य स्वच्छ्ता के साथ-साथ आभ्यन्तर स्वच्छता भी बेहद जरूरी है। बाह्य स्वच्छता की सुरक्षा सम्यक् स्नान, शौच, आहार, आचार, विहार, निद्रादि सत् जीवनचर्या के ऊपर निर्भर करती है। आभ्यन्तर स्वच्छता के लिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि जैसे आष्टाङ्ग योग साधनाएं आवश्यक है। भावना और विचार में गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए सर्वप्रथम आहार पर ही बल देना चाहिए। "आहारशुद्धौ चित्तशुद्धिः"। आहारकी शुद्धता पर मन की शुद्धता निर्भर करती है। कहा भी गया है -जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन ; जैसा पीये पानी वैसी बनी वाणी। इसमें अति गुप्त रूप में भावना छुपी रहती है, जो भोजन और पानी के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक संक्रमित हो कर कार्य करने को अन्तःप्रेरणा

देती है।

इस संसार में ऐसा कोई भी नहीं है जो बिना कुछ काम किये एक क्षण भी जीवन जी सकता है। यह कार्य सबसे पहले मन के अन्दर भावनात्मक व सूक्ष्म रूप में प्रलीन रहता है। यही वाणी के रूप में प्रकट होता है जो पुनः स्थूल रूप में शारीरिक कार्य के माध्यम से सामने उभर आता है। अतः कर्म का बीज रूप भावना ही महत्वपूर्ण है जो प्रत्यक्ष, परोक्ष सर्वविधक फल प्रदान करने का आदि कारण स्वरूप है। हर कार्य के अन्तर्हित भावना ही सर्व नियंत्रक है। कौन क्या काम करता है यह जितना महत्वपूर्ण नहीं है; कैसे या फिर किस उद्देश्य से करता है यह विषय अत्याधिक ध्यातव्य है। एक चिकित्सक के द्वारा व्यवहृत चाकू से किया गया चीर-फाड़ करने का कार्य कितना भी कष्टप्रद क्यों न हो वह सादर ग्रहणीय होता है; पर एक खुनी के हाथ में स्थित एक चाकू निश्चय ही भयानक और सर्वादौ त्याज्य होता है। इसलिए लक्ष्य प्राप्ति से अधिक गुरुत्वपूर्ण है कार्य साधन हेतु अपनाया गया उपाय, तौर-तरीका या माध्यम। सर्वजन हित साधन के उद्देश्य से जब कोई भी काम ग्रहण किया जाता है तब वह निःसन्देह सर्वजनाद्दत होता है।

सर्वप्रथम भावना में सुसंस्कार लाने के लिए सर्वाविधक प्रयत्न करना चाहिए। भावना जब शुद्ध,पूत,पवित्र,स्वच्छ,निर्मल हो जाती है तब सकल कर्म यज्ञ के रूप में तथा ईश्वर की उपासना के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। सर्वत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसी समद्दष्टिपूर्ण विचार राज करने लगता है। अकारण मैत्री भाव सबके साथ उत्पन्न होने लगता है। हर एक का चरित्र श्रीराम मय बन जाता है। अतः शास्त्र में यह उपलब्ध है कि- ईश्वर लकड़ी में,पत्थर में या मिट्टी में नहीं रहते बल्कि भावना में ही स्थित है। अतः भाव या सोच ही सबका मूल कारण है। पुनः कहा गया है कि – "यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी"। अर्थात् मनुष्य को भावना के अनुसार सफलता प्राप्त होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि बाह्य स्वच्छता के साथ-साथ आभ्यन्तर स्वच्छता अधिक आवश्यक है। उभय अन्योन्याश्रय सम्बन्ध से पारस्परिक अनुबन्धित है। एक पवित्र, भक्तिपूत धार्मिक स्थल पर भगवान् निवास करते हैं लेकिन उसके विपरीत एक अस्वच्छ वातावरणयुक्त, अशान्त, अपवित्र स्थल पर सामान्यतया भूत या प्रेत जैसा कोई भी निवास करना पसन्द करता है ईश्वर नहीं। आजकल यह दिखाई देता है कि हमारे चारों ओर परिवेश तथा पर्यावरण अधिक मात्रा में प्रदूषित हो गये हैं जो पूर्णतया मनुष्य का कुभावानाओं से प्रेरित इच्छाकृत है। पंचमहाभूत के अन्तर्गत पृथिवी, आकाश, जल, वायु भी इस प्रदूषण से मुक्त नहीं है। परिणामतः संपूर्ण प्राणी जगत् बुरी तरह से प्रभावित हो गया है। मानसिक विकारग्रस्त स्वार्थान्ध मनुष्य पारस्परिक विभेदपूर्ण दृष्टि तथा हिंसात्मक मार्ग को परित्याग कर एक विवेकपूर्ण, संवेदनशील प्राणी के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करना चाहिए। सबकी स्वच्छता से ही संसार का सामूहिक कल्याण हो सकता है। सामान्यतः पत्थर पुनः संस्कारित हो कर खाने योग्य एक सुन्दर पात्र का रूप ले लेता है। महामूल्यवान हीरे का भी आविष्कार उसी उपाय से सम्भव होता है। अतः विचार व भावना में बारंबार संस्कार लाने से चरित्र में ईश्वरीय सत्ता का प्रकट होता है। क्योंकि स्वच्छता ही ईश्वरत्व का सन्निकट है।

अब यह समय का आह्वान है कि हर एक को इसके प्रति गम्भीरता से जागरूक होना पड़ेगा और सचेतनता के साथ-साथ आशु समाधान के लिए शीघ्रातिशीघ्र कदम उठाना पड़ेगा। स्वयं या पारिपार्श्विक अवस्था खराब होने से प्राणी मात्र शारीरिक व मानसिक असन्तुलित एवं व्याधिग्रस्त हो जाता है और जीवन का उद्देश्य

पूरा करने में मानव असफल हो जाता है । पारमार्थिक चिन्तन और कार्यों से दूर हो कर पशु से भी बदतर जिन्दगी जीने के लिए वह बाध्य हो जाता है। फलस्वरूप सामाजिक अवस्था भी बिगड़ जाती है ।

व्यक्ति चरित्र का परिवर्तन से ही सामाजिक चरित्र का परिवर्तन लाना सम्भव होता है । एक संयमित, सुनियन्त्रित,सुश्रृंखलित जीवन ही सामाजिक परिवर्तन लाने में सक्रिय भूमिका निर्वाह कर सकता है। बाल्यावस्था से ही पितृमातृदत्त संस्कार से परिष्कृत होने में एक शिशु प्राथमिक स्तर पर समर्थ होता है। अनन्तर विद्यालय में सहपाठियों के साथ और शिक्षकों के तत्वावधान से एक विद्यार्थी जीवनादर्श के विषयों पर अवगत होता है। सद्ग्रन्थों का अध्ययन तथा सत्संग करने से परवर्ती जीवन में आदर्श के पथ पर चलने में वह समर्थ होता है। सद्ज्ञान की प्राप्ति से वैराग्य भावना तथा विवेक का ज्ञान भी उदय होना चाहिए। आध्यात्मिक पथ पर नित्य नियमित चलने के लिए उसे अभ्यासरत होना चाहिए। इन्द्रिय-विषयगत प्रवृत्ति से दूर रहकर निवृत्ति के मार्ग पर जीवन व्यतीत करने के लिए सतत प्रयत्नशील होना चाहिए। मन से अच्छे विचार पूर्वक शास्त्र समर्थित साधु-आचरण करना चाहिए। नियत अभ्यास के द्वारा अस्थिर व सदा चल चञ्चल मन के ऊपर नियन्त्रण रखना चाहिए । यह मन हमेशा विक्षिप्त रहता है और असत्य, अज्ञानान्धकार पूर्ण आवरण से आवृत्त रहता है । अतः सत्य का आविर्भाव संभव हो नहीं पाता है । प्रेयमार्ग त्याग कर श्रेयमार्ग पर चलने हेतु साधनारत होना आवश्यक है। सकल दुःखों की निवृत्ति और सुखों की प्राप्ति ही जीवन का ध्येय होना चाहिए । एक सुस्थिर शान्त मन के द्वारा ही उचितानुचित विचारक्षम मानव स्वचरित्र को परिमार्जित, परिष्कृत कर पाने में समर्थ होता है। क्योंकि अस्थिर व दूषित जल में कभी भी कुछ प्रतिविम्बित नहीं हो पाता है ।

व्यक्ति स्तर पर बाह्याभ्यन्तर भाव को परिष्कृत करने का मार्ग को अहरह प्रशस्त करने के लिए जागरूकता के साथ अभ्यासरत रहना चाहिए । जिससे क्रमशः चरित्र और व्यक्तित्व के भाग्याकाश में एक रूपान्तरण का नवीन भास्कर उदय होगा । जिसके उज्ज्वल आभा से सामूहिक जीवन सकारात्मक व सटीक दिशा में प्रभावित हो पायेगा। फलस्वरूप मन, वचन व कर्म में रूपान्तरण अवस्था को प्राप्त करने में सभी समर्थ होंगे। यन्त्रवत् स्वयं चालित, हर व्यक्ति सार्वजनीन मांगलिक महायज्ञ में आत्मसमर्पणात्मक व त्यागपूत आहूति प्रदान कर पायेगा एवं समग्र धरातल पर नित्य स्वर्गीय आनन्द तथा शान्ति का वातावरण विराजमान हो सकेगा ।

श्री सुशान्त कुमार महापात्र
टी.जी .टी.संस्कृत,के. वि.नं-१

शिक्षक दिवस

श्रीमती आशा घोष
कार्या.प्रधान मुख्य आययकर आयुक्त.भुवनेश्वर

सरस्वती के वाहक शिक्षक को पूजें, हम मान करें
अंधकार के दीपक शिक्षक का हम सब सम्मान करें।
यह महान या वह महान
सबके भीतर में मूल ज्ञान
उस ज्ञान पिता के लिए आज आओ
कुछ तो हम दान करें।
सरस्वती के वाहक शिक्षक को पूजें, हम मान करें
अंधकार के दीपक शिक्षक का हम सब सम्मान करें।
सर्वोच्च राष्ट्रपति के पद पर
है प्रतिष्ठित शिक्षक महान
उनके जन्म दिवस पर
हम सब आज जयन्ती गान करें।
सरस्वती के वाहक शिक्षक को पूजें, हम मान करें
अंधकार के दीपक शिक्षक का हम सब सम्मान करें।

ज्ञान वाटिका

विद्यालय है ज्ञान वाटिका
कक्षा इसकी क्यारी
छोटे-छोटे फूल हैं बच्चें
करते हम रखवारी ॥
माली ज्यों नन्हे पौधौं को
सिंच-सिंच हर्षाए
वैसे ही छात्रों की सफ़लता
पर शिक्षक इतराए
अजब-गजब किस्से इनके हैं
बोली इनकी न्यारी
छोटे-छोटे.....।
हिन्दी,संस्कृत,गणित,भूगोल
इनको सदा पढ़ाते
नये-नये शिक्षण विधियों को
हरदम हम अपनाते
इनकी ज्ञान बढाएंगे हम
ये संकल्प हमारी
छोटे-छोटे.....।
पढ़ लिखकर आगे बढ़ जाना
देश का नाम बढ़ाना
अपने प्रिय तिरंगे को
विश्व भर में फहराना
ज्ञान का दीप जलाए रखना
इतनी सी चाह हमारी
छोटे-छोटे.....।

श्री मानस कुमार पाणिग्राही
प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय नं – 1

हमारी प्यारी हिंदी

आओ हम तुम्हें बताएं कहानी हिंदुस्तान की
हिंदी भाषा की और हिंद के शान की ॥

हिंदुस्तान तो था सोने की चिड़िया, लूट लिया विदेशी शिकारियों ने
खत्म कर दिया अस्तित्व इसका, पहनाकर बेड़ियां गुलामी ने ।
हिंदी भाषा के बल पर, फिर एक बार उठाया मशाल
दहला दिया विदेशियों को, हर तरफ मच गया बवाल ।

हिंदी भाषी भाई-भाई, नारा लगा जब हर तरफ,
दौड़ पड़े सैकड़ों नर – नारी, लेने प्रतिशोध हर तरफ ।
मचा दी धूम हिंदी ने, मिलाय सबका मन,
साहित्य की जुबानी, कहने लगे प्यारे वतन ।

हिंदी भाषा के कारण जान गए, एक –दूसरे का प्रण
ठान ली लेकर रहेंगे स्वतंत्रता, भले चले जाए प्राण ।
दी कुर्बानी सैंकड़ों ने हिंदी को बचाने में,
आज उसी हिंद के वासी, हैं दूर भागते हिंदी से ।

क्या भूल गए सब, उन सैकड़ों की कुर्बानी को,
क्यों आज हैं सर रहे, विदेशी भाषा की गुलामी को ।

आओ प्रेम से अपनाएं, अपनी भाषा हिंदी
शिखर पर पहुँचाएं इसे, बनाकर माथे की बिंदी ।
यही कामना करें हम कि न करे विदेशी भाषा की गुलामी,
श्रद्धापूर्वक करें आह्वान, हर एक के हृदय में बसाएं हिंदी ॥

जय हिंद ..... जय हिंदी.....

श्रीमती नमिता कर
केंद्रीय उत्पाद, सीमा शुल्क एवं सेवा कर

हिन्दी और संगीत का अद्भुत संगम

हरप्रीत कौर
केन्द्रीय विद्यालया नं – 1

संगीत कला को भावाभिव्यक्ति का सबसे सरल एवं मनोरंजक माध्यम माना गया है। इस कला को इस योग्य बनाने में हिन्दी भाषा का अतुलनीय स्थान रहा है । हिन्दी भाषा में रचित कविता, दोहे, गीत आदि संगीत द्वारा अभिव्यक्त होकर ही अपने अर्थ को सार्थक कर पाते हैं । संगीत के मुख्य सात स्वर जिन्हें संगीत की दोनों पद्धतियों में सर्वसम्मति से लिया गया है, सा रे ग म प ध नि हिन्दी वर्णमाला के ही हैं। संगीत का जो आनंद हिन्दी गीतों में प्रकट होता है , वह अंग्रेजी भाषा रचित गीतों से कदापि प्राप्त नही हो सकता है। संगीत को प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक एक स्थायी एवं जीवन्त रुप प्रदान करने में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। संगीतज्ञों, विद्वानों द्वारा स्थानीय एवं संस्कृत भाषा में रचित ग्रंथ आज हिन्दी में अनुवाद करके ही साधारण मनुष्य के समझने योग्य हुए हैं। संगीत रत्नाकर, नाट्यशास्त्र ग्रंथ इस बात के साक्ष्य हैं जो कि हिन्दुस्तानी एवं दक्षिणी दोनों पद्धतियों के आधार ग्रंथ हैं। संगीतकला का चाहे वह शास्त्रीय पक्ष हो या क्रियात्मक दोनो को सहेजकर रखने में हिन्दी भाषा का योग्दान है। एक कविता जब स्वर प्राप्त कर गुंजित होती है तब उस कविता में निहित रस एक अंजान व्यक्ति को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। संगीत को हृदय स्पर्शी बनाने एवं स्थायित्व प्राप्त करने में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, वहीं हिन्दी को भी संगीत स्पर्श करते ही मनोरंजक एवं रसपूर्ण बना देता है ।

पर तुम ना आए

एम. हेमलता राव
पीएचडी छात्रा, विद्युत अभियांत्रिकी विद्यापीठ
भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर

ऋतु आई ऋतु गयी
कभी बरखा तो कभी बहार
फिर पतझड़ फिर बसंत.....
पर तुम ना आए

वो पहली बारिश की बूंदें
जिसमें तन मन भीगे
वो कलियों का मुस्काना
जो रोम रोम पुलकित कर दे
सावन आया देखो .....
पर तुम ना आए

वो झूले रह गये सूने
कलियाँ फूल बनकर मुरझा गये
बसंत बन गया फिर से पतझड़
वो पतियों की सरसराहट लगे जैसे कोई रेगिस्तान हो आसपास
सूनी आँखें ताकती रहीं रास्ता .....
पर तुम ना आए

राह चलते हर मुसाफिर से पूछा
गगन में उड़ते पंछी से पूछा
हर दिन उगते सूरज से पूछा
हर रात खिलते चाँद से मैंने पूछा
क्या तुमने उसको देखा ?
फिर भी तुम ना आए

हर तरफ निराशा है
फिर भी एक आशा है, मन कहे
बसंत फिर आएगा
वो सावन के झूले फिर पड़ेंगे, वो फूल फिर खिलेंगे,
वो पंछियों का चहचहाना, वो सूरज की रोशिनी, वो चाँद की चांदनी
देखो तनिक बाहर कोई आया है !

"कलम के आसूं-कलाम"

सीखकर उड़ना जो उड़ गयें परिन्दें
लौट कर फिर नीड़ को नहीं आते ॥
इस कदर डूब रहें सितारे अपनें
दोस्त भी अब तज़रीह करने नहीं आते॥
बदलता है मौसम भी मिज़ाज़ अपना ऐसे
दस्तों पर बादल,परबतों पर बवंडर नहीं आते॥
मांएँ भी लगी है शायद रिवाज़ों से डरने
छोड़कर माँ को नवज़ात नहीं जाते॥
कुछ तो राज़ है वीरानी-ए-खण्डहरों में
छोड़कर चमग़ादड़ जो उन्हें नहीं जाते॥
तौबा तो नहीं की है इश्क से हमने
लुटने को हम पर संगदिल नहीं आते॥
अपने दुष्कर्मों का समंदर जो मथ रहे
पीने को विष बारहा 'शंकर' नहीं आते॥
(तजरीह-मशविरा दस्त-रेगिस्तान बारहा- बार बार)

" अनुभव"

पानी से नहीं बुझतें सुलगते शोले,
जब आग बड़ी होती हैं ॥
थक जाते है तारें भी कर-कर के रोशनी,
जब रात बड़ी भी होती है ॥
दीवारों से भी नहीं रूकती आवाजें,
जब बात बड़ी होती है ॥
जीत को मोहताज़ नहीं रहती बाज़ियां,
जब साथ लड़ी जाती है ॥
छींटे मारने से ताज़ा नहीं होती तस्वीरें,
जब यादें सभी जाती है ॥
आसानियों से मयस्सर नहीं होती मंजिलें,
जब राह बड़ी होती है ॥
अकेले ही निकलते है परिन्दें गगन में,
जब उड़ान बड़ी होती है ॥
पिघल के दरिया हो जाते है परबत,
जब आह बड़ी होती है ॥
पत्थर का सीना तोड़कर उग आते है पौधें
जब चाह बड़ी होती है ॥
पानी से नहीं बुझते सुलगते शौलें
जब आग बड़ी होती है ॥

"आरजू "

तू बरस- बरस इस कदर
मैं पूरा भीग जाऊं!!
तू मुझ में उतर जाये
और मैं तुझ में डूब जाऊं !!
रख दें, ये ज़ाम लबों पर मेरे
कही तरसता न रह जाऊं!!
जब से मिले है तेरे इशारें
मन करता है बहक जाऊं!!
आ मिल जा मुझ में,मैं उमर सा
तुझ में बीत जाऊं!!
अहसास मेरे अमावस सें
ख्याल तेरे पूनम से
मैं होकर चांद तेरी यादों में ढल जाऊं!!
क्यूं है मग़मूम,ला जहर अश्कों का मुझे पिला दें,
कि मैं आज 'शंकर' से बिस्मिल हो जाऊ

शंकर लाल भैरवा
भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

जरा सूरत हमें दिखा जाना

दुनिया से , दुनिया से मुख तू मोड़ चला, ज़रा सूरत हमें दिखा जाना।
इक सपना लेके रातों में, तू माँ को दरश दिखा जाना॥

तेरी राहें देखतें-देखतें ही ,सांसों की डोरी टूट गयी।
तुझे प्यार हमारा मिल न सका, मेरी किसमत ऐसे फूट गयी।
अब सबर नहीं है ओ .....
अब सबर नहीं है लाल मेरे, तुम आकर धीर बँधा जाना।
दुनिया से, दुनिया से मुख तू मोड़ चला, जरा सूरत हमें दिखा जाना ॥

दुनिया के सफर में बढ़ते हुए, घरवालें छोड़े रोते हुए।
अब तू तो बेटा चल दिए, दुनिया के सफर में सोते हुए।
अब क्या करना है हम सबको ओ .....
अब क्या करना है हम सबको, तुम आकर हमें बता जाना।
दुनिया से .....सूरत हमें दिखा जाना ॥

जब राख में मिल जाये लाश मेरी, हो जाये मैय्यत दफ़न मेरी।
जब तुझसे जुदा मैं हो जाऊँ, गहरी नींद में सो जाऊँ।
तब दरश दिखाना हो तुमको ओ.....
तब दरश दिखाना हो तुमको , तुम आकर मुझे जगा जाना।

दुनिया से, दुनिया से मुख तू मोड़ चला, जरा सूरत हमें दिखा जाना।
इक सपना लेके रातों में, तू माँ को दरश दिखा जाना ॥
दुनिया से .....सूरत हमें दिखा जाना ॥

इंद्र सिंह धाकर
बी.टेक छात्र
भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

इतिहास को वापस लाएंगे.....

अपने इन प्यारे छात्रों को
ऐसी पाठ पढ़ाएँगे ।।
तक्षशिला, नालन्दा के इतिहास को वापस लाएंगे ।
अनवरत अध्ययन के द्वारा
अपना ज्ञान बढ़ा करके
नए-नए शिक्षण विधियों को
कक्षा में अपना कर के
शिक्षा और परीक्षा के
इस बोझ को दूर भगाएँगे ।
तक्षशिला.....।
ऐसी शिक्षा होगी कि
सब छात्रों को रोजगार मिले
अनपढ़ रहे न कोई अब
सबको शिक्षा का अधिकार मिले
छात्रों के मन में अब ऐसी
ज्ञान की ज्योति जलाएँगे
तक्षशिला.....।
कला और विज्ञान सभी कुछ
मातृभाषा में पढ़ा करके
सहज करेंगे शिक्षण को हम
नवाचार अपना करके
छात्र और शिक्षक के निश्चित
अच्छे दिन अब आएंगे
तक्षशिला, नालन्दा के इतिहास को वापस लाएंगे ।

रागिनी कुमारी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका- हिन्दी
केन्द्रीय विद्यालय नं- 1 कटक

रक्षाबंधन

रक्षाबंधन आई, रक्षाबंधन आई
भाई बहनों का अटूट प्यार है लाई।
बहनों ने दीप-तिलक से है थाली सजाई
आरती करके भाईयों को राखी पहनाई।
रेशम की धागों से बहनों ने प्रेम मोती सजाई,
राखियों की चमक में अपनी प्रेम छलकाई।
बांधकर कलाईयों में राखी बहनों के मन हर्षाई,
देखकर बहनों का प्यार भाई ने अश्रू छुपाई।
रेशम की डोरी ने बढ़ाई प्रेम की गहराई,
बहनों की होती हैं दुआए, खुश रहे सदा मेरा भाई।
रक्षाबंधन आई, रक्षाबंधन आई
भाई बहनों का अटूट प्यार है लाई।

सरिता वर्मा
(भाईः- श्री यशवंत वर्मा

मंगलाजोडी – पक्षियों के लिए स्वर्ग

MANGALAJODI- The Birds Paradise !

मंगलाजोड़ी, ओडिशा राज्य के खुर्दा जिले के टांगी ब्लॉक के अंतर्गत आनेवाल एक बहुत पुराना गांव है जो भुवनेश्वर से 75 कि.मी की दूरी पर बहरामपुर की ओर जाने वाले रास्ते पर चिल्का झील के उत्तरी किनारे से लगा हुआ एक विशाल दलदली क्षेत्र है। यह क्षेत्र (लगभग 10 sq.km) मुख्य रूप से एक ताज़ा पानी वाला क्षेत्र है, जो ईख बेड के मध्य काटे गए चैनलों के जरिए चिल्का झील के खारे पानी के साथ जुड़ा है। कई चैनल जो इस हरियाली के मध्य क्रिसक्रास रूप में स्थित हैं, वे हजारों जल पक्षियों, प्रवासी और निवासी पक्षियों के आश्रय गृह हैं। पीक सीजन में यह आर्द्रभूमि तकरीबन 3,00,000 से अधिक पक्षियों की मेजबानी करती है। इस जगह की यात्रा करने के लिए अक्तूबर से मार्च तक सबसे अच्छा समय होता है। यह क्षेत्र एक महत्वपूर्ण वैश्विक जलपक्षी निवास स्थान है। यह 54.823 ° एन 26.184 ° ई और 53.755 ° एन 26.332 ° ई के मध्य स्थित है।

.यह छोटा सा मछुआरों का गांव, कुछ दिनों पहले तक बाकी दुनिया के लिए अनजान था। यहाँ तक कि ओडिशा के लोगों में से बहुतों को इसके बारे में पता नहीं है। ओडिशा और पास के राज्य पश्चिम बंगाल से कुछ पक्षी फोटोग्राफरों ने जब सैंकड़ो प्रजाती के पक्षियों की तस्वीरों को मंगलाजोडी की दलदली भूमि पर क्लिक किया और सामाजिक नेटवर्क साइटों पर दिखाया, तो पूरे भारत और विदेशों से पर्यटकों की भीड़ इस छोटे से गांव में उमड़ पड़ी और इसे पक्षियों का हॉटस्पॉट बना दिया। हाल ही में इस दलदली भूमि को एक "**महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र (आईबीए)**" **(Important Bird Area- IBA)** घोषित किया गया है।

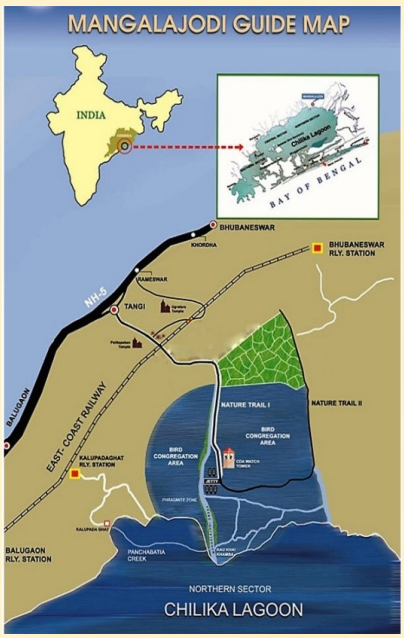

एक बड़े, व्यावसायिक पैमाने पर पानी पक्षियों के अवैध शिकार में ग्रामीणों की भागीदारी की वजह से मंगलाजोड़ी कभी "शिकारियों का गांव" के रूप में प्रसिद्ध था। यहां तक कि अंडों को भी नहीं बख्शा जाता था। "जंगली उड़ीसा" नामक संस्थान के श्री नंदकिशोर भुजबल ने अकेले ही अपने दम पर इन भक्षकों (शिकारियों) को रक्षक (संरक्षक) बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर काम करने के कारण, "जंगली उड़ीसा" ने पक्षियों के अवैध शिकार के इस व्यापार की गतिशीलता में अंतर्दृष्टि प्राप्त की और शिकारी बने रक्षक की मदद से पक्षी संरक्षण के लिए 'श्री महावीर पक्षी सुरक्षा समिति' नामक एक समिति, वर्ष 2000 में बनाई गई थी।

कई लड़ाइयों और वर्षों के विवेचना के बाद, आखिरकार इन गांववालों का शिकार छुड़वाना संभव हो पाया तथा उन्हें यह आशा दी गई कि मंगलाजोड़ी दलदल उनके लिए पर्यटन क्षेत्र के रूप में एक स्थायी और शांतिपूर्ण आजीविका प्रदान करने की क्षमता रखता है। तत्कालीन शिकारियों द्वारा आज सक्रिय रूप से गश्त किया जाता है और पक्षी शिकारियों से उनके दलदल और पक्षियों की सुरक्षा की जाती है। प्रकृति की गोद में पले-बढ़े ये लोग आज पक्षियों की आबादी की निगरानी करते हैं, वन विभाग के साथ समन्वय रखते हैं, अनुसंधान में सहायता करते हैं तथा दलदल में बर्डिंग दौरे के दौरान पर्यटकों को चारों ओर की सैर करवाते हैं।

श्री प्रमोद कुमार धल
केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क एवं सेवा कर

सदस्य कार्यालयों की गतिविधियाँ

नवोदय विद्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा

सी.एस.आई.आर-आई.एम.एम.टी में आयोजित हिंदी पखवाड़ा

आयकर आयुक्त का कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा एवं खुला मंच प्रतियोगिता

केंद्रीय उत्पाद सीमा शुल्क में हिंदी पखवाड़ा का पुरस्कार वितरण एवं गृह पत्रिका कोर्णाक का लोकार्पण

सदस्य कार्यालयों की गतिविधियाँ

भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर में आयोजित हिंदी पखवाड़ा

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, उत्खन्न शाखा में आयोजित हिंदी पखवाड़ा

भारतीय तटरक्षक में आयोजित हिंदी पखवाड़ा

प्रधान मुख्य आयकर कार्यालय में आयोजित खुला प्रश्नमंच

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा का दृश्य

सदस्य कार्यालयों की गतिविधियाँ

केंद्रीय जल आयोग में आयोजित कार्यशाला

एनएसएसओ में आयोजित हिंदी कार्यशाला

भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर में आयोजित हिंदी कार्यशाला

मुख्य आयकर आयुक्त में आयोजित हिंदी कार्यशाला

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला

मुख्य आयकर आयुक्त में आयोजित हिंदी कार्यशाला

एजी कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला

सदस्य कार्यालयों की गतिविधियाँ

खादी ग्रामोद्योग आयोग में आयोजित हिंदी कार्यशाला

राष्ट्रीय प्रसार एवं मल्टीमीडिया अकादमी में आयोजित हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम

एसटीपीआई में आयोजित हिंदी कार्यशाला

प्रधान निदेशक, लेखा परीक्षा, पूर्व तट रेलवे में आयोजित हिंदी कार्यशाला

कृषिरत महिला संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला

संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी

भा.प्रै.सं. भुवनेश्वर में आयोजित हिंदी कार्यशाला

भारतीय खान ब्यूरो में आयोजित हिंदी कार्यशाला

पावन नगरी के लोग.....

जून 2013, उत्तराखंड में आए महाप्रलय से केवल जन, धन की हानि ही नहीं हुई बल्कि हमारे धार्मिक आस्थाओं की भी क्षति हुई है। वहां मदद के लिए कई लोग जुटे हुए थे उन्हीं लोगों में से कुछ ऐसे थे जो केवल अपना मतलब साधरहे थे। मेरे परिचित में से जो दर्शन को गए थे वहां की कुछ ऐसी घटनाओं का इस प्रकार वर्णन कर रहा हूँ -

नहीं वो दाउद इब्राहीम नहीं था, वो पावन नगरी का आदमी था।

जिसने मुझसे पद्रह सौ रुपये मेरे बच्चे को पानी पिलाने के लिए मांगे थे।

बेबसी में पैसों की कोई फिक्र नहीं थी, किसी तरह बेटा बच जाता।

परंतु वो भला आदमी पैसा लेकर भाग गया, मेरे बेटे ने मेरे नजरों के सामने दम तोड़ दिया।

नहीं वो दाउद इब्राहीम नहीं था, वो पावन नगरी का आदमी था।

नहीं वो बिड़ला, पोस्को, जिंदल एस्सार जैसे लुटेरे नहीं थे, वे पावन नगरी के बनिये थें।

जिन्होनें मुझसे बिस्कुट के एक पैकेट के बदले दो हजार रुपए मांगे थे।

भुखमरी मे दस हजार भी मांगते तो दे देता, मैं दो-दो हजार के बिस्कुट खा कर जिंदा हूं।

पानी हर तरफ था मगर उस पानी में लाशें भी सड़ रही थी

इसलिए मैनें पांच सौ रूपये में एक लिटर पानी खरीदकर प्यास बुझाई।

जो जिंदा इंसानों को लूट रहे थे, वो लाशों को कैसे छोड़ देते।

मेरी नजरों के सामने लाशों को लूटा जा रहा था।

लाशों की तलाशी हो रही थी, पैसे, मोबाइल, जेवर नोच कर,

ये वहशी दूसरी लाशेां को अपना शिकार बना रहे थे।

नहीं वो दाउद इब्राहीम नही था, वो पावन नगरी का आदमी था।

मैने भी एक महापाप किया हैं,

एक लाश की पैकेट से मोबाइल निकाल कर फोन करने की कोशिश की।

पाप करके भी नेटवर्क नहीं मिल पाया।

कैसे घर वालों को बताता कि गुड्डा चल बसा केवल मै जिंदा हूँ।

मैंने सरकार को गालियां दी है जीवन भर,

मगर जब मुसिबतों में देशवासियों का लुटेरा रूप देखा,

तो अब गालियां किसको दूं, वोट देने वालों में लुटेरे भी हैं, कातिल भी।

नहीं वो दाउद इब्राहीम नहीं था, वो पावन नगरी का आदमी था।

मुसीबतो को पहाड़ टुटता है तो इंसानों का असली चेहरा नजर आता है।

लुटेरे और कातिलों के चेहरे से मुखौटा हट जाता हैं।

और आम लोगों के बीच भगवान भी नजर आता है।

मैने उन्हें भी देखा जो स्वयं भुखे रहकर अंजान लोगों की मदद कर रहे थे।

मैंने उन्हें भी देखा जो अपनी जान की बाजी लगाकर बेसहारा लोगों को बचा रहे थे।

नहीं वो साधु-संतो जैसे नहीं दिख रहे थे, वे पावन नगरी के आदमी थे।

श्री तेन्द्र राम
प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे

निंदा..... अच्छी है !

लोमड़ी को अंगूर न मिला तो भाई अंगूर ही खट्टा हो गया। इसमें अंगूर की निंदा करके लोमड़ी ने अपने मन को समझा लिया कि कमी उसके अंदर नहीं बल्कि अंगूर के अंदर है इसलिए तो उसके हाथ नहीं आया। निंदा करने का उपयोग भी बहु प्रयोजनीय है यथा – अपनी कमी छिपाने के लिए, हर्ष मनाने के लिए, अपनी भड़ास निकालने के लिए..... इत्यादि।

इस रूप में तो 'निंदा' एक साधन बन गई है अपना उल्लू सीधा करने का। जब कोई व्यक्ति विशेष किसी की निंदा के ज़रिए आपका ध्यान पाना चाहे और इस मौके पर आप उतना उत्साहित नहीं होते जितना वह उम्मीद करता है तो उसका मुँह लटक जाता है। वह जितनी बार किसी की निंदा के मार्फत आपसे बात की शुरुआत करना चाहता है और यदि आप उसी उत्साह से ध्यान नहीं देते तो उतनी बार वह अपने आप को आपसे अपमानित पाता है।

उदाहरणार्थ- कार्यालय के ही एक कर्मचारी महोदय किसी अन्य कर्मचारी की बुराई के साधन का उपयोग करते हुए मुझसे यह अपेक्षा कर रहे थे कि मैं उछलकर उनके पास जाऊँ और अपना कान उन्हें सुपुर्द कर दूँ। परंतु ऐसा न होने पर उनका चेहरा उतर- सा गया। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। यह क्रिया – प्रतिक्रिया दो बार और हुई तब उनका अदना – सा मुखड़ा देखते ही बनता था। उन्होंने मेरी इस हरकत से थोड़ी रुष्टता जताई, इस बात पर मुझे भी दया आ गई। पर अगली बार मैंने उन्हें मनचाहा अवसर प्रदान करने का सोचा। वह व्यक्ति भी कहाँ मानने वाला था, फिर से उसने प्रयत्न किया और जैसे ही मैं सकारात्मक रवैया अपनाते हुए उसे सुनने की इच्छा प्रकट की, उस व्यक्ति का चेहरा मानो खिल – सा गया। जैसे उसकी जीत हो गई। उसने कहा कि वह अधिकारी चरित्रहीन है। मैंने पूछा कैसे ? उसने कहा कि हमारे विभाग की सबसे सुंदर महिला को उसने फंसा रखा है जबकि वह स्वयं विवाहित है।

मुझे इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ और न ही आगे यह कथा सुनने की इच्छा हुई पर मैं समझ गया कि यह निंदा द्विप्रयोजनार्थ है। एक तो ध्यानाकर्षण हेतु और दूसरा अपने मन की भड़ास निकालने हेतु। वह व्यक्ति इसलिए उस अधिकारी की निंदा कर रहा था क्योंकि वह स्वयं को उस अधिकारी के स्थान पर रखना चाह रहा था जो कि संभव न हुआ जिससे उसे ग्लानि हो रही थी और वह अपनी भड़ास निकालना चाह रहा था।

इसलिए देखा जाय तो 'निंदा' सिर्फ अर्थ में ही बुरा है लेकिन प्रयोजन में इसका कोई सानी नहीं है। यह व्यक्ति के जलते हुए हृदय को शांत करता है, भीड़ को उत्सुक कर अपनी ओर खड़ा करता है, आपको आनंद प्रदान करता है, निंदित व्यक्ति को अपनी ऐब को सुधारने का अवसर देता है आदि – आदि। फिर आप कैसे कह सकते हैं कि 'निंदा' बुरी चीज़ है ?

मैंने उस व्यक्ति से यह पूछ दिया कि वह खूबसूरत महिला उससे ही क्यों फंसी ? आपसे क्यों नहीं ? उस व्यक्ति ने त्वरित उत्तर दिया "मैं भला क्यों फंसाऊँ" ? मुझसे क्यों फंसेगी ? मैं क्या चरित्रहीन व्यक्ति हूँ ? (उसने झल्लाते हुए कहा।) मैंने कहा, दूसरों के मामलों में झाँकना, किसी से किसी की निंदा करना; क्या चरित्रवान व्यक्ति का काम हो सकता है ? इतना सुनते ही वह व्यक्ति मुझ पर दाँत पीसते हुए वहाँ से उठकर चला जाता है।

मैं यह सोचता हूँ कि हमारे स्वभाव का एक छोटा अंश दूसरों के जीवन की व्यक्तिगत मामलों में 'ताक-झांक' है। मैंने अपने – आप से प्रश्न किया कि क्या हम अपने घरों में खिड़कियाँ इसलिए बनवाते हैं कि दूसरों के घरों में झाँक पांए या दूसरों को हमारे साथ ऐसा करने का अवसर दें पांए ? खिड़की खुली रहे तो लोग कहेंगे कि ये दिनभर हमें निहारता है और इसके विपरीत यदि खिड़की बंद रहे तो कहेंगे कि लगता है अंदर कुछ खिचड़ी पक रही है या दाल में कुछ काला है, फलाना – ढिकाना। समस्या तो हर हाल में है या यों कहें कि हम ही समस्याग्रस्त हैं।

श्री लोकेश चंद्र लाल,
महालेखाकार का कार्यालय (सा.एवं.सा.क्षे.ले.परि.

मन की बात

विचारों के गलियारे में,
भटकते हुए,
मैंने पाया
मैं एक बेबस लाचार और निरीह प्राणी हूँ।
हज़ारों बेटियों की लुट रही इज़्ज़त बचाना चाहती हूँ।
भ्रूण में उनकी हो रही हत्या के बदले जीवन-दान देना चाहती हूँ।
पर ऐसा कर नहीं सकती-
मैं चिल्ला – चिल्ला कर कहना चाहती हूँ, लोगों को याद दिलाना चाहती हूँ।
लड़कियाँ सृष्टि का एक रूप हैं।
इनकी इज़्ज़त करो, सम्मान करो, पर नहीं – मैं चुप हूँ
बेबस हूँ, क्योंकि मैं समाज का एक हिस्सा हूँ, और
समाज से प्रतिकार की क्षमता मुझमें नहीं,
सोचती हूँ- अगर बेटियाँ घर में ही सम्मान नहीं पाएंगी,
भ्रूण में ही मार दी जाएंगी तो-
घर की चार दीवारों से बाहर इज्ज़त कौन करेगा उनकी ?
जब हर गुनाह की है एक सज़ा,
तो इन गुनाहों की क्या हो सज़ा ?
जिसने गर्भ में ही ले ली नन्हीं की जान,
क्या उसके लिए नहीं, हो सज़ा का प्रावधान,
बार-बार सोचती हूँ-
जागरूकता ही है इसका समाधान
तभी मिलेगा नारी को सम्मान।
कन्या है धरती पर ईश्वर का वरदान,
नहीं है वह कलंक, है वो जगत का अभिमान,
आओ, सब मिलकर करें आह्वान,
"भ्रूण-हत्या-छोड़-आओ" चलाएँ ये अभियान,
तभी संभव है समाज का उत्थान,
होगा उन्नति का आगाज़ और बनेगा देश महान।
जय हिंद, जय भारत।

डॉ. मधुलिका, टी.जी.टी.,
केंद्रीय विद्यालय

अक्ल बाँटने लगा विधाता

अक्ल बाँटने लगे विधाता, लंबी लगी कतारें
सभी आदमी खड़े हुए थे कहीं नहीं थी नारी।
सभी नारियों कहाँ रह गई, था ये अचरज भारी।।

पता चला ब्यूटी पॉर्लर ने पहुँच गई थी सारी।
मेकअप की थी गहन प्रक्रिया एक-एक पर भारी।।

बैठी थीं कुछ इंतजार में कब आएगी बारी।
उधर विधाता ने पुरुषों में अक्ल बाँट दी सारी।।

ब्यूटी पार्लर से फुर्सत पाकर जब पहुँची सब नारी।
बोर्ड लगा था स्टॉक खत्म है नहीं अक्ल अब बाकी।।

रोने लगी सभी महिलाएं नींद खुली ब्रह्मा की
पूछा कैसा शोर हो रहा है ब्रह्मलोक के द्वारे।
पता चला कि स्टॉक अक्ल का पुरुष ले गए सारे।।

ब्रह्मा जी ने कहा देवियों बहुत देर कर दी हैं।
जितनी भी थी अक्ल वो मैंने पुरुषों में भर दी हैं। ।

लगी चीखने महिलाएं सब कैसा न्याय तुम्हारा।
कुछ भी करो हमें तो चाहिए आधार भाग हमारा।।

पुरुषों में शारीरिक बल है हम ठहरी अबलाएं।
अक्ल हमारे लिए जरुरी निज रक्षा कर पाएं।।

सोच-सोच कर दाढ़ी सहलाकर तब बोले ब्रह्मा जी।
एक वरदान तुम्हें देता हूँ अब हो जाओ राज़ी।।

थोड़ी सी भी हँसी तुम्हारी रहे पुरुष पर भारी।
कितनी भी वह अक्लमंद हो अक्ल जायेगी मारी।

एक औरत ने तर्क दिया मुश्किल बहुत होती है।
हँसने से ज्यादा महिलाएं जीवन भर रोती है।

ब्रह्मा बोले यहीं कार्य तब रोना भी कर देगा।
औरत का रोना भी नर की अक्ल हर लेगा।।

एक अधेड़ बोली बाबा हँसना रोनी नहीं आता।
झगड़े में है सिद्धहस्त हम खूब झगड़ना भाता।।

ब्रह्मा बोले चलो मान ली यह भी बात तुम्हारी।
झगड़े के आगे भी नर की अक्ल जाएगी मारी।

तब बुढ़िया तुनक उठी सुन यह तो न्याय नहीं हैं।
हँसने रोने और झगड़ने की अब अपनी उम्र नहीं है।।

ब्रह्मा बोले सुनो ध्यान से अंतिम वचन हमारा।
तीन शस्त्र अब तुम्हें दे दिए पूरा न्याय हमारा।।

इन अचूक शस्त्रों में भी जो मानव नहीं फँसेगा।
निश्चित समझो, उस पागल का घर भी नहीं बसेगा।।

कहे जीत कविमित्र ध्यान से सुन लो बात हमारी।
बिना अक्ल के भी होती है नर पर नारी भारी

श्री श्रीधर बारिक
उत्तम नाविक
भारतीय तटरक्षक अवस्थान,गोपालपुर

मेहनत

ऐ इस देश के नवजवान,
सुनो, बात मेरी ऐ किसान
बच्चे, बूढ़े, आप सबको मिले ज्ञान,
मेहनत है इसकी पहचान ॥

मेहनत से न घबराओ
मेहनत करके आगे बढ़ते जाओ
कठिन परेशानियों में भी मुस्कुराओं
सफलता की कुंजी है मेहनत
इससे है सबकी हसरत ॥

बहती हवा के संग लहराओ
मेहनत से न तुम घबराओ
जीते वही जो करे मेहनत
डरे नहीं जो है मेहनती
सफल होगी हर ये ज़मीं
जब मेहनत करे सभी ॥

कार्य नामुमकीन नहीं जब तुम हो जवाँ
दिल से, दिमाग से, न कि सिर्फ शरीर से
मेहनत का फल होवे मीठा
आम, अंगूर, नारियल, सेब पड़ जावे फ़ीका
मेहनती होवे हर कदम पर सफल
आलसी रोवे होकर असफल
तो, समझो मेरी बात भली
मेहनत कर सबका होवे भला ॥

राहुल राय (कक्षा- X 'B') केंद्रीय विद्यालय, एन.ए.डी

प्यारी माँ

होती है बड़ी प्यारी माँ

होती सबसे प्यारी माँ

सुख सारे देकर मुझको

दुःख सारे हर लेती है माँ

जब-जब कष्ट मुझे हुआ है

हृदय ने पुकारा है बस माँ।

ममता का सागर है माँ

कोमलता का विस्तार है माँ

त्याग की मूर्ति है माँ

धरती का सितारा है माँ

धरती से प्यारी है माँ

सदा प्यार देती है हमको

साथ दया दिखाती माँ

दुःख जरा भी मुझको होता

चिंता में डूब जाती माँ

माँ सा कोई न दूजा धरती पर

झरनों सा प्यार बहाती माँ

माँ की सेवा जो करता प्यार से

संसार भर देती उसे उपहार से

बच्चों पर जान लुटाती माँ

दुनिया में सबसे प्यारी है माँ

सबकी अपनी प्यारी माँ।

इलियास तिर्की,स.ले.प.अ
प्रधान महलेखाकार का कार्यालय
(आ एवं रा क्षे लेप)

भगवान जगन्नाथ की पतितपावन रथयात्रा

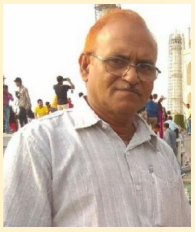

पुरुषोत्तम धाम पुरी में भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा आषाढ़ शुक्ल द्वितीय को आयोजित होती है। इस रथयात्रा के दौरान भगवान स्वयं भक्तों से मिलने मंदिर से बाहर आते हैं और इसका उद्देश्य ही पतित जनों का उद्धार करना है। इसलिए इस यात्रा का नाम पतितपावन यात्रा भी है। कई लोग इसे घोष यात्रा, तो कई महावेदी यात्रा, श्री गुण्डिचा यात्रा, दशावतार यात्रा कहते हैं लेकिन पतितपावन यात्रा नाम ही अधिक प्रचलित है। इस यात्रा के भले ही अलग-अलग नाम हो मगर अपने मंदिर से निकल कर ऱथारुढ़ हो भगवान गुण्डिचा मंदिर तक की यात्रा करते हैं इसलिए इसे रथयात्रा कहा जाता है। भगवान रथारुढ होकर पुरी के श्री मंदिर से 3 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित गुण्डिचा मंदिर जिसे यज्ञ वेदी भी कहा जाता है वहां तक जाते हैं। इसे महाप्रभु का जन्म स्थान भी कहते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार स्वयं विश्वकर्मा ने बढ़ई का वेश धारण कर यहीं पर भगवान की मूर्तियां बनाई थी। महाराजा इन्द्रद्युम्न की रानी गुण्डिचा के नाम पर इस मंदिर का नाम गुण्डिचा मंदिर पड़ा है। साल भर बंद रहने वाला यह मंदिर रथयात्रा के दौरान चल-चंचल हो उठता है।

आमतौर पर रथ यात्रा कहने से हम भगवान की आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होने वाली यात्रा को ही समझते हैं। मगर वास्तव में रथयात्रा के लिए तैयारी अक्षय तृतीया से हो जाती है जिस दिन रथ निर्माण का कार्य आरंभ होता है। हर साल भगवान की रथयात्रा के लिए नए रथ बनाए जाते हैं। इन रथों का निर्माण रथ संहिता के अनुसार किया जाता है। रथ निर्माण में सात श्रेणी के कारीगरों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। ये कारीगर हैं मुख्य रथाकार, बुणाकार, लौहकार, छन्दाकार, रुपकार,चित्रकार और सूचीकार। ये सभी कारीगर वंशानुक्रम से रथ निर्माण के काम में निपुण माने जाते हैं। श्रीमंदिर परिचालन कमेटी रथ निर्माण कार्य के लिए एक स्वतंत्र कमेटी भी बनाती है। जो रथ निर्माण कार्य की नियमित समीक्षा करती रहती है और समय पर रथ बनकर तैयार हो जाए इसके लिए सभी आवश्यक कदम उठाते हैं।

रथ परिचय

-नन्दिघोष –

भगवान जगन्नाथ के रथ का नाम है -नन्दिघोष – लाल-पीले रंग के इस रथ की ऊंचाई 33 हाथ 5 अंगुल यानी 44.2 फीट है। यह रथ सबसे बड़ा होता है। महाप्रभु श्री जगन्नाथ के नन्दिघोष रथ के पहियों की संख्या 16 होती है। इस रथ के निर्माण में कुल 832 लकडियों का प्रयोग किया जाता है। नन्दिघोष रथ के सारथी का नाम दारूक है। रथ में शंख, बालाहक, श्वेत हरिताश्व नामक 4 अश्व जोड़ें जाते हैं। पार्श्वदेवता के तौर पर हरिहर, पण्डु नृसिंह, गिरिगोवर्धनधारी, चिन्तामणी, कृष्ण नारायण, लक्ष्मण, पंचमुखी महावीर। द्वारपाल हैं जय बिजय एवं रथ की ध्वजा का नाम है त्रैलोक्यमोहीनी। रथ का रंग लाल व पीला होता है।

देवदलन

देवदलन रथ की ऊंचाई 31 हाथ यानी 42.3 फीट की होती है। रथ निर्माण में 553 लकड़ियों का उपयोग किया जाता है। रथ में 12 पहिये होते हैं, जयदुर्गा इस रथ की अधिपति कही जाती हैं। रथ की ध्वजा का नाम है त्रैपुरासुन्दरी सारथी का नाम है अर्जून। इस रथ में रोचिका, मोचिका, जीता, अपराजिता नाम से 4 अश्व जोड़े जाते हैं। देवी सुभद्रा के रथ में पार्श्व देवता के रूप में बिमला, मंगला, बाराही, भद्रकाली, उमा, वनदुर्गा, कात्यायनी, हरचण्डी, रामचण्डी की प्रतिमाएं स्थापित होती हैं तथा द्वार पाल गंगा व जमुना हैं। रथ को लाल व काले रंग के कपड़े से आच्छादित किया जाता है।

तालध्वज

महाप्रभु के अग्रज बलदेव जी के रथ तालध्वज की पहियों की संख्या 14 है। रथ का रंग हरा व लाल है। इस रथ की उँचाई 32 हाथ 10 अंगुल यानी 43.3 फीट की है। इस रथ के निर्माण में 763 लकड़ियों का उपयोग किया जाता है। इस

रथ के सारथी हैं मातली और द्वारपाल का नाम हैनन्द,सुनन्द। रथ की ध्वजा को उन्ननी कहा जाता है। रथ में तीव्र,घोर,दीर्घश्रम व स्वर्णनाभ नामक 4 घोड़े लगाए जाते हैं। इस रथ में प्रलंबारी महादेव, नृसिंह, नटवर, अंगद, नाटाम्बर, कार्तिकेश्वर, मधूकैटव, अनन्तवासुदेव, पार्शदेवता के रूप में विराजमान रहते हैं।

राज्य भर में रथयात्रा के दिन रथ खींचे जाने की परंपरा होने के बावजूद कोरापूट जिले के जयपुर में रथयात्रा के दूसरे दिन रथ खींचा जाता है। इसके पिछे कोई तार्किक सत्यता तो नहीं है मगर सुनने में आया है कि रथयात्रा के लिए पुरी से आज्ञामाल आने में विलंब होता था जिससे रथयात्रा के अगले दिन यहां रथ एक दिन बाद खिंचने की परंपरा है और कुछ मानते हैं कि पुरी राजा से मित्रता की वजह से यहां के राजा रथ के दिन पुरी जाते थे। अतः छेरा पँहरा आदि कार्य रथयात्रा के दिन नहीं हो पाता था जिससे रथयात्रा के दिन विगर्हों को रथा रुढ़ तो करवाया जाता था मगर राजा के आने के बाद अर्थात रथयात्रा के दूसरे दिन छेरापँहरा एवं रथ खींचने की प्रथा चल पड़ी है। तर्क चाहे कुछ भी हो मगर सत्य तो यही है कि समुचे राज्य में कोरापुट का जयपुर ही एक स्थान है जहां रथयात्रा के दूसरे दिन रथ खींचे जाते हैं। इसे स्थानीय भाषा में बासी रथयात्रा भी कहा जाता है।

स्नानयात्रा

ज्यैष्ठ शुक्ल पूर्णिमा के दिन लोकाचार के देवता कहे जाने वाले भगवान श्री जगन्नाथ जो को प्रत्यक्ष स्नान कराया जाता है। अन्य दिनों में भगवान का बिम्ब स्नान ही कराया जाता है अर्थात दर्पण पर महाप्रभु के बिम्ब को ही स्नान करवा कर हर दिन पूजा अर्चना की जाती है।

स्नान पूर्णिमा महाप्रभु के विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा का अग्र पर्व कहलाता है। स्नापूर्णिमा और रथयात्रा ये दो ऐसे अवसर होते हैं जब भक्त मंदिर के बाहर से भगवान श्री जगन्नाथ का दर्शन कर सकते हैं। श्री मंदिर के उत्तर-पूर्व पार्श्व में बने स्नान मंडप पर महाप्रभु को पहण्डि बीजे करवा कर लाया जाता है। रथयात्रा की तरह स्नान यात्रा में भी पुरी के गजपति महाराज स्वर्ण सम्मार्जनी (झाड़ु) लेकर छेरा पहँरा कार्य संपादित करते हैं। मंदिर परिसर में स्थित कूप से 108 कलश शीतल जल लाया जाता है और स्नान मंडप पर विग्रहों के सम्मुख सजा कर रखा जाता है। इन जलकुभों को अभिमंत्रीत किया जाता है। इसमें चुआ, चन्दन, कपूर, केशर आदि डाल कर विग्रहों का स्नान कराया जाता है। इस यात्रा को देखने के लिए भक्तों की भारी भीड़ जुटती है। स्नान के उपरांत विग्रहों को वेश धारण कराया जाता है। स्नान पूर्णिमा के अवसर पर पुरी में विग्रहों को गजानन(हाथी) वेश में सजाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। महाप्रभु के इस अलौकिक वेश को देख कर भक्त गदगद हो जाते है। एक कथा के अनुसार महाराष्ट्र के भक्त गणपति के वेश में भगवान का दर्शन करना चाहते थे जिनकी अभिलाषा पुरी करने के लिए भगवान गजानन वेश में सजते हैं।

परंपरा के अनुसार आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा से नेत्रोत्सव तक 15 दिन भगवान ज्वर से पीड़ित होते हैं और आयुर्वेद पद्धति से उनका उपचार किया जाता है। भगवान को दवा के रूप में दशमूल पाचन कराया जाता है। यह दश मूल सेवन करने के बाद भगवान संपूर्ण स्वस्थ्य हो जाते हैं और नव यौवन वेश में भक्तों को दर्शन देते हैं। भगवान की उपरोक्त बीमार पड़ने की अवधि को बोलचाल की भाषा में अणसर कहा जाता है। अणसर के समय प्रभु के दर्शन नहीं मिलते। केवल पटिदिअँ का दर्शन मिलता है। इस दौरान पुरी से कुछ दूरी पर स्थित अलारनाथ में भगवान का दर्शन करने से श्री मंदिर में दर्शन का लाभ मिलता है।

हेरा पंचमी

महाप्रभु श्री जगन्नाथ बड़े भाई एवं बहन सुभद्रा को रथयात्रा में साथ लेकर जाते हैं जबकि महालक्ष्मीजी को श्री मंदिर में छोड़ जाते हैं। भगवान के इस आचरण से व्यथित महालक्ष्मी अपने सेवकों के साथ पालकी में सवार होकर पंचमी की तिथी को गुण्डिचा मंदिर पहुँचती है और जगन्नाथ जी के नन्दीघोष रथ का टुकड़ा तोड़ कर वापस मंदिर लौट आती हैं। इसे स्थानीय भाषा में हेरा पंचमी कहा जाता है।

महाप्रभु श्री जगन्नाथ की बाहुड़ा रथयात्रा

भगवान की जन्म बेदी कहे जा रहे गुण्डिचा मंदिर से महाप्रभु के अपने श्री मंदिर वापस लौटने वाली रथ यात्रा बाहुडा यात्रा कहलाती है। निर्धारित नीति नियम के अनुसार महाप्ररभु के मंगल आरती, तड़पलागी, अवकाश, सूर्यपूजा, द्वारपाल पूजा के उपरांत गोपाल बल्लभ, सकालधूप और खिचड़ी भोग लगाया गया। इसके बाह पहणिड़ का आयोजन हुआ। भगवान बलभद्र जी सुबह 11.35 बजे नाकचणा द्वार होकर गुण्डिचा मंदिर से बाहर आए। इसके बाद देवी सुभद्रा की पहण्डि कराई गई। रथायात्रा की तरह सबसे आखिर में जगत के नाथ महाप्रभु श्री जगन्नाथ की पहण्डि हुई।

सोनावेश

बाहुड़ा यात्रा के बाद बलदेव व सुभद्रा सहित सिंहद्वार के सामने पहुँचे महाप्रभु श्री जगन्नाथ को रथ पर देखने भक्तों का उत्साह देखते ही बनता है। 7 दिन गुण्डिचा मंदिर में बिताकर लौटे महाप्रभु का पवित्र एकादशी तिथि में रथ पर स्वर्णाभुषणों से सोना वेश धारण कराया जाता है। श्रीपयर, श्रीहस्त, किरीट, पद पल्लब, बाहुटी, मेखला आदि 138 प्रकार के स्वर्ण अलंकारों से सजे महाप्रभु का यह कमनीय वेश राजाधिराज वेश के नाम से भी जाना जाता है। इस वेश में सजे श्री विग्रहों के दर्शन को लाखों की संख्या में श्रद्धालु पुरी पहुँचे। सोनावेश के लिए तीनों रथों की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। रथों के आसपास स्टील के बेरिकेड़ लगाए गये हैं । कई कुंटल सोने का उपयोग इस प्रसिद्ध वेश में होने के चलते अर्ध सैनिक बलों को सुरक्षा का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। यूं तो भगवान जगन्नाथ को 5 बार सोने के वेश से सजाया जाता है मगर रथा रुढ़ देवों का यह वेश सबसे अधिक आकर्षण का बिंदु होता है। प्राचीन उत्कलीय नरेशों द्वारा महाप्रभु की सेवा में समर्पित सोने के आभूषण शुद्ध व खालीस हैं। पारंपरिक शैली में बने ये आभूषण हर किसी का मन मोह लेते हैं। अपने आराध्य को आपद मस्तक सोने लदा देख कर भक्त भाव विह्वल हो जाता है। सोनावेश को देखते हुए पुरी शहर में ट्राफिक नियंत्रण के लिए विशेष कदम उठाए गये।

अधरपणा नीति

महाप्रभु श्री जगन्नाथ की रथ पर स्वर्ण आभुषणों वाले कमनीय वेश के बाद आज अधरपणा नीति आयोजित की गई। महाप्रभु के साथ रथ में जाने वाले पार्शदेवी देवताओं चण्डी, चामुण्डा एवं अशरीरी आत्माओं की संतुष्टि के लिए अधरपणा नीति संपादित की जाती है। दुध, केला, मलाई एवं छैने से बने सरबत जिसे स्थानीय भाषा में पणा कहा जाता है उसका भोग रथ पर ही लगाया जाता है। महाप्रभु के विग्रहों के होठों तक पहुँचने वाली मिट्टी के पात्र में भर कर यह सरबत अर्पित की जाती है। श्री मंदिर से जुड़े महासुआर सेवायत इस पणा को प्रस्तुत करते हैं। केला, छेना, मलाई, दुध, जायफल, गोल मिर्च, कपूर आदि से प्रस्तुत इस पणा को सबसे पहले भगवान को अर्पित किया जाता है । रिति नीति के अनुसार पूजा अर्चना के बाद उन पात्रों को फोड़ दिया जाता है। समझा जाता है कि रथयात्रा के दौरान महाप्रभु के साथ गये पार्शदेवी देवताओं चण्डी,चामुण्डा एवं अशरीरी आत्माओं को इस दिव्य प्रसाद पाने की ललक रहती है और वे इसे प्राप्त कर खुद को धन्य समझते हैं। रथ यात्रा की यह एक अनोखी परंपरा है जिसके बारे में लोगों को कम ही जानकारी है।

निलाद्री बिजय

रथयात्रा का अंतिम पर्व है महाप्रभु का श्रीमंदिर के अपने रत्न सिंहासन पर वापस लौटना। इसे स्थानीय भाषा में 'निलाद्री बिजय' या 'निलाद्री बिजे' के नाम से जाना जाता है। इस पर्व की विशेषता यह है कि अभिमानीनी महालक्ष्मी महाप्रभु की राह रोक लेती हैं। मंदिर आने से पहले महाप्रभु के सेवक और महालक्ष्मी के सेवकों के मध्य तर्क चलता है। आखिरकार भगवान महालक्ष्मी को रसगुल्ला खिलाकर संतुष्ट करते हैं और श्री मंदिर के अंदर दाखिल होते हैं। इस तरह रथयात्रा का पावन पर्व संपन्न होता है।

श्री नारायण दास मवतवाल
दूरदर्शन केंद्र

दहेज़ प्रथा

कहने को तो यह विषय पुराना हैं पर यह अभी भी हमारे समाज के लिए अभिशाप बना हुआ हैं। आज भी हमारे देश में कुछ ऐसे जगहों पर मनचाहा दहेज़ के लिए रुपये लिए जाते हैं। इसमें गलती केवल दहेज़ लेने वालो की नहीं हैं परंतु दहेज़ देने वालों की भी हैं । कुछ लोगों की यह सोच होती हैं कि हमने अपनी बेटी की शादी में दहेज़ दी हैं तो फिर हम अपने बेटे की शादी में दहेज़ क्यों नहीं ले? कुछ लोग तो दहेज़ की माँग को पूरा करने के लिए अपनी कुछ जमीन को भी बेंच देते हैं या अपने गहने गिरवी रख देते हैं ताकि उनकी घर की लक्ष्मी अपने ससुराल में खुशियों से अपनी ज़िन्दगी व्यतीत कर सके।

दहेज़ का कुछ अच्छा पहलू भी हैं जैसे कि शादीशुदा जोड़े को उनके नये घर को स्थापित करने में मदद करता हैं। अशिक्षित लड़की की शादी भी शिक्षित लड़के से हो जाती हैं लेकिन इसका बुरा प्रभाव तब पड़ता हैं जब लड़की वालों को अपनी- अपनी क्षमता से अधिक रकम देनी पड़ जाती हैं जिससे उनकी आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती हैं।

दहेज प्रथा भारतीय समाज पर बहुत बड़ा कलंक है। दहेज के इस दीमक को जन-जागरण द्वारा ही दूर किया जा सकता है। इसके निवारण के लिये सरकार ने बहुत सख्त कानून बनाये हैं ताकि लालची लोगों को कानून का भय हो। आज की युवा पीढ़ी भी अपनी संकल्प शक्ति से दहेज प्रथा को समाप्त कर सकती है। क्योंकि नारी नवपीढ़ी की जननी है, अतः उनका आदर, सम्मान आवश्यक है।

कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि अगर मैं अकेले दहेज़ न लूँ तो इससे क्या दहेज़ प्रथा समाप्त हो जायेगी लेकिन ऐसे सोचने वाले यह नहीं जानते कि अगर सारे लोग ऐसा सोचने लगे तो फिर इस समाज में कितना बदलाव आ सकता। किसी न किसी को तो आगे अपना कदम बढ़ना ही पड़ेगा। तो आइये हम सब मिलकर समाज के इस अभिशाप को जड़ से उखाड़ फेकें।

यहाँ नोटों पर होता मतदान है

सत्ता के कारण बिकता ईमान है।।

दहेज़ के कारण लड़की जाती श्मशान है

तो क्या यही हमारे सपनो का हिंदुस्तान है।।

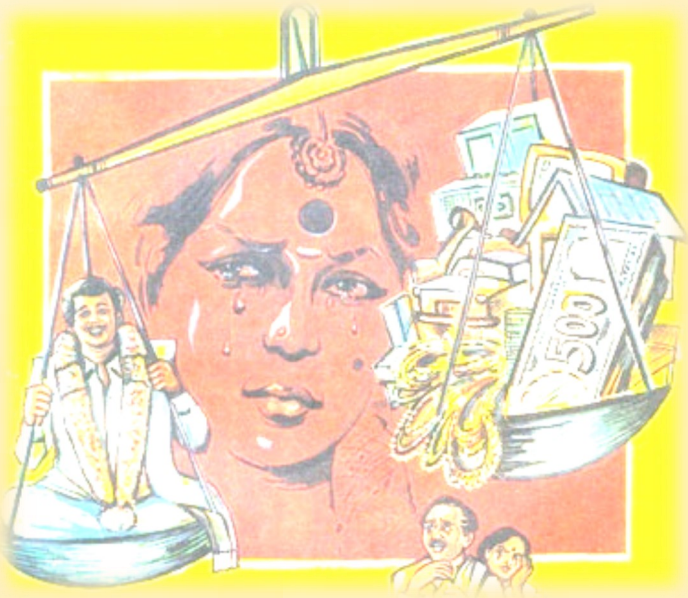

शशांक शेखर
बी.टेक छात्र, भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर

लैंगिक असमानता

आज हम 21वीं शताब्दी के भारतीय होने पर गर्व करते हैं जो एक तरफ बेटा पैदा होने पर खुशी का जश्न मनाते हैं और दूसरी ओर एक बेटी का जन्म हो जाये तो सिर पर हाथ रख कर बैठ जाते हैं। लड़कों के जन्म की चाह में हम प्राचीन काल से ही लड़कियों को जन्म के समय या जन्म से पहले ही मारते आ रहे हैं और यदि सौभाग्य से वो नहीं मारी जाती तो हम जीवनभर उनके साथ भेदभाव करने के अनेक तरीके ढूँढ लेते हैं।

भारत में लैंगिक असमानता का मुख्य कारण इसकी पितृसत्तात्मक व्यवस्था में निहित है। कभी धर्म के नाम पर तो कभी समाज में प्रचलित सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों के नाम पर उन्होंने पुरुषों के अधीन अपनी स्थिति को स्वीकार कर लिया हैं।

आज इस प्रकार का भेदभाव हम खुलेआम देख सकते है, वो चाहे खेल जगत हो या फिल्म उद्योग यह सब जगह व्याप्त है। यहाँ तक कि शिक्षा भी इससे अछूती नहीं है जब भी लड़कियों को शिक्षित करने की बात आती है, लोग नज़रे फेर लेते हैं क्योंकि ऐसा माना जाता है कि एक दिन उनकी शादी होगी और उन्हें पिता के घर को छोड़कर दूसरे घर जाना पड़ेगा। इसलिये अच्छी शिक्षा के अभाव में वर्तमान में नौकरियों तथा कौशल माँग की शर्तों को पूरा करने में वे असक्षम हो जाती हैं। गरीबी और शिक्षा की कमी के कारण बहुत सी महिलाएं कम वेतन पर घरेलू कार्य करने या मजदूरों के रूप में कार्य करने के लिये मजबूर होती हैं। महिलाओं को न केवल असमान वेतन या अधिक कार्य कराया जाता हैं बल्कि उनके लिये कम कौशल की नौकरियाँ पेश की जाती हैं। आज स्त्री को घर के बंधनों में जकड़ दिया गया है। उनका कार्य केवल खाना बनाना, कपड़े धुलना, घर को व्यवस्थित रखने तक ही सीमित रह गया है।

आजकल स्त्रियों पर अत्याचार भी बहुत बढ़ गये है। इस देश में कई जगह नारी आज भी अबला है। आज भी देश में नारी को सती करने वाली घटनाएं हो रही हैं। आज भी नारी को दहेज़ के नाम पर जिंदा जलाया जा रहा है। आज भी नारी को डायन का नाम देकर जिंदा मार दिया जाता है। आज भी नारी का व्यापार हमारा सभ्य समाज कर रहा है। आज भी नारी कई जगह पुरुषों के हाँथों की कठपुतली है।

हमें अपनी इस संकीर्ण मानसिकता को सुधारना होगा। किसी भी व्यक्ति के सर्वंगीण विकास के लिए उसकी माँ का शिक्षित होना जरुरी है। स्त्रियाँ किसी भी मामले में आज पुरुषों से पीछे नहीं हैं। इस बात को आज बड़े-बड़े विद्वान भी मानते हैं और बहुत अच्छे से जानते भी हैं। आज कई क्षेत्रों में नारी ने पुरुषों को पछाड़ दिया है। आज की नारी और उसकी शक्ति और महत्व को कम आँकना गलत होगा, स्त्रियों को खुद अपने अधिकारों के लिए सामने आना होगा पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलना होगा। तभी इस समाज का, इस देश का और सम्पूर्ण विश्व का विकास होगा।

श्री अमरेंद्र प्रताप
बी.टेक छात्र, भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर

भारतीय सेना

भारतीय सेना पर हर भारतीय को गर्व है और हो भी क्यों न? यह भारतीय सेना ही है जो भारत को हमेशा दुश्मनों से दूर रखती है। भारतीय सैनिक अपनी जान पर खेल कर हमारे वतन को सुरक्षित और स्वतन्त्र बनाये रखते है। उनकी वीरता और कर्तव्य भावना के लिए पूरा देश उन्हें सम्मान की नज़रों से देखता है।

एक ओर पाकिस्तान अपनी बचकानी हरकतों से बाज नहीं आता तो दूसरी ओर चीन अपनी शक्ति का डर दिखाते रहता है। आंतकवाद, परमाणु हथियार, प्राकृतिक आपदाएँ। फिर भी देश तेज़ी से विकास कर रहा है। हम रात को चैन की नींद सो रहे है। कौन है वो लोग जिनके कारण देश सुरक्षित है? वे कोई और नहीं बल्कि हमारे महान देश के वीर सपूत जो सेना में भर्ती हो कर दुश्मनों से लोहा ले रहे हैं। वे वैसे लोग हैं जो अपना सर भले ही कटा लें लेकिन सर झुका नहीं सकतें है, क्योंकि बात तिरंगा के आन, बान और शान की है |

भारतीय सेना सिर्फ हमें बाहरी आक्रमण से ही नहीं बचाती बल्कि शांति के समय में कई सामाजिक सेवाएँ भी करती है। प्राकृतिक आपदाओं जैसे उत्तराखंड की बाड़, कश्मीर में भूकंप, लद्दाख में मूसलधार बारिश के दौरान भारतीय सेना की भूमिका प्रशंसनीय के योग्य है।

अगर हमें कुछ सीखना है तो भारतीय सेना की तुलना में अधिक प्रेरणादायक कुछ भी नहीं है। हम अपनी सेना से बहुत कुछ सीख सकते हैं। भारतीय सेना अनुशासन का एक बहुत बड़ा उदाहरण है। वे एक बहुत ही सख्त दिनचर्या का पालन करते हैं। वे हमें किसी भी प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना सिखाते हैं। भारत में कितनी समस्याएं हैं परन्तु वे राष्ट्र की आलोचना नहीं करते। वे देश को अपनी जान से ज्यादा प्यार करते हैं। उनसे हमें देश के प्रति सम्मान और प्यार की सीख मिलती है।

तन समर्पित मन समर्पित और ये जीवन समर्पित,

चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ |

जितना प्यार हमें देश से मिला है हम उसे वापस कभी नहीं कर पाएंगे, हम देश के लिए जितना करे उतना भी कम है। भारतीय सेना इस बात को अच्छी तरह से समझती है। इसीलिए तो दुश्मनों से लड़ने को हमेशा तत्पर रहती है। यहाँ तक की युद्ध में शामिल होने को अपनी अच्छी किस्मत मानती है। मरना तो एक न एक दिन है ही सबको को ,क्यों न कुछ ऐसा कर के मरे की ज़माना हमें याद रखें |

जब भी भारत माता पर कोई आंख उठाता है या जब तिरंगे के शान पर खतरा मंडराता है तब एक ही बात इनके मन में रहती है—

"कंधों से मिलते हैं कंधे और कदमों से कदम मिलते हैं जब चलते हैं हम ऐसे तो दिल दुश्मन के हिलते हैं।"

भारतीय सेना के इतिहास की बात करें तो अब तक वे चार युद्ध पाकिस्तान के साथ और एक चीन के साथ लड़ चुकी है। ऑपरेशन विजय, ऑपरेशन मेघदूत और ऑपरेशन कैक्टस सेना द्वारा किए गए प्रमुख आपरेशनों में शामिल हैं। युद्ध के अलावा शांति के समय किए गए ऑपरेशन "ब्राससटैक्स" और "व्यायाम शूरवीर" भी सराहनीय योग्य हैं। कई संयुक्त राष्ट्रों जैसे साइप्रस, लेबनान, कांगो, अंगोला, कंबोडिया, वियतनाम, नामीबिया, साल्वाडोर, लाइबेरिया, मोजाम्बिक और सोमालिया द्वारा चलाए गए शांति अभियानों में भी हमारी सेना ने सक्रिय भागीदारी निभाई है।

हमारे सैनिकों ने कभी आत्मसमर्पण नहीं किया। हमारी सेना का आदर्श वाक्य है – "करो या मरो" । अक्टूबर से नवंबर 1962 के भारत चीन युद्ध में और बाद में 1965 में सितंबर के भारत पाक युद्ध में केवल एक भारतीय सैनिक ने कई बार विभिन्न मोर्चों पर अनेकों दुश्मनों को मारा।

सीयाचिन ग्लेशियर इस दुनिया का सबसे ऊँचाई पर स्थित रणक्षेत्र है जो कि समुद्र तल से 5000 मीटर की ऊंचाई पर है। यहाँ का तापमान– 50 डिग्री तक चला जाता है और इतने कठिन वातावरण में भारतीय सेना हर पल सीमा की सुरक्षा करती रहती है । भारतीय सेना चीन और अमेरिका के बाद विश्व की तीसरी सबसे बड़ी सेना है। भारत की पूरी सेना में 13 लाख 25 हजार सक्रिय सैनिक और 21 लाख 43 हजार से भी अधिक रिज़र्व सैनिक है ।

इन बहादुर बेटों की कितनी भी तारीफ करो कम है। तीन फरवरी को सियाचिन ग्लेशियर में एक जबर्दस्त हिस्खलन हुआ था जिसमें हनुमनथप्पा और नौ अन्य सैनिक लापता हो गए थे। सोमवार को करीब 35 फुट बर्फ के नीचे से हनुमनथप्पा जिंदा निकाले गए, वह तीन दिनों से कोमा में थे । हनुमनथप्पा अपने 13 साल की सेवा में 10 साल दुर्गम व चुनौतीपूर्ण जगहों पर तैनात रहे । वह आतंकवाद रोधी अभियानों में भी सक्रिय रूप से शामिल रहे। अगस्त, 2015 से सियाचिन ग्लेशियर के सबसे ऊंचाई वाले इलाकों में सेवा दे रहे थे।

देशवासी भी इन बहादुर बेटों को अत्याधिक सम्मान भरी निगाहों से देखती है। सरकार भी अपने वार्षिक बजट का खास हिस्सा सेना पर खर्च करती है। शहीद होने पर तिरंगा में लिपटने का सौभाग्य प्राप्त होता है। अंततः कुछ पंक्ति बहादुर बेटों के नाम—

नाज हमें है उन वीरों पर, जो मान बढ़ा कर आये हैं।
दुश्मन को घुसकर के मारा, शान बढ़ा कर आये हैं।
मोदी जी अब मान गये हम, छप्पन इंच का सीना है।
कुचल, मसल दो उन सब को अब, चैन जिन्होंने छीना है।
और आस अब बड़ी वतन की, अरमान बड़ा कर आये हैं।
नाज हमें है उन वीरों पर, जो शान बड़ा कर आये हैं।

श्री हिमांशु कुमार
बी.टेक छात्र, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

महिला सशक्तिकरण

भेदभाव जुल्म मिटाएंगे
दुनिया नई बसाएंगे
नया है सफर
अब, हम नारी, आगे बढ़ते जाएंगे।

महिला सशक्तिकरण का मतलब महिलाओं की उस क्षमता से है जिससे उनमें वे योग्यता आ जाती है जिससे वे अपने जीवन से जुड़ी सभी निर्णय ले सकती है। महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि महिलाएँ शक्तिशाली बनें जिससे कि वो अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकें तथा परिवार और समाज में अच्छी तरह से जीवन यापन कर सकें। भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरुरी है जैसे दहेज प्रथा, यौन हिंसा, अशिक्षा, भ्रूण हत्या, असमानता, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, कार्य स्थल पर यौन शोषण, बाल मजदूरी, मानव तस्करी और ऐसे ही कई अन्य विषय आदि। महिला सशक्तिकरण के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इसे हर एक परिवार में बचपन से प्रचारित व प्रसारित करना चाहिए। ये जरुरी है कि महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से मजबूत हों। आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों में माता-पिता की अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी की वजह से कम उम्र में विवाह और बच्चे पैदा करने का चलन है। महिलाओं को मजबूत बनाने के लिए महिलाओं के खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा आदि को रोकने के लिए सरकार कई सारे कदम उठा रही है।

महिलाओं की समस्याओं का उचित समाधान करने के लिए दूसरे क्षेत्रों में भी महिलाओं को सक्रिय रूप से भागीदार बनाने के लिए कुछ प्रतिशत सीटों को आरक्षित किया गया है। महिला सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिए लड़कियों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की जरुरत है। इसके साथ ही हमें महिलाओं के प्रति हमारी सोच को भी विकसित करना होगा।

महिलाओं को दो इतना मान
कि बढ़े हमारे देश की शान ॥

के. संगीता (कक्षा- X 'A')
केंद्रीय विद्यालय, एन.ए.डी

जिंदगी

जिंदगी यहीं कहीं पास घुम रही है,

इधर-उधर भटक रही है पागलों की तरह

बोल रही है कुछ न कुछ

जरा रुक जा, एक पल देख लूँ तुझे जी भर के

कहाँ सुनता है वह हँस देता है, मैं दौड़ रहा हूँ जान,

मेरा साथ दौड़ मुझे छूने की कोशिश मत कर,

मैं हूँ तेरे साथ बस और कुछ मत बोल

कुछ देर गुस्से में बोलती बंद हो गई

देखना भी भूल गई उसे, इतना कौन दौड़ेगा उसके साथ

वर्षों बीत गये

अपने आपको देखा पीछे रह गई मैं

जिंदगी भाग गई आगे से

चलो फिर दोस्ती कर लेते हैं

कहाँ दौड़ना आता है बुढ़ापा में, चलो छोड़ दे बस तू चल,

मैं देखता रहूँ तुझे

जिस पल से देखना शुरु कर दिया

देखा वह तो साथ ही है, कहीं गया ही नहीं।

मानसी राय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग,ओडी.डी.सी.

मनु की उलझन

अपनी उलझनों में उलझी मनु आज बहुत खुश थी। उसने अपने विद्यालय पत्रिका के लिए अपनी एक छोटी – सी सोच को आड़ा-तिरछा खींच लिया था। विद्यालय पहुँचते ही उसने अपनी क्लास टीचर को अपनी कृति पढ़ने के लिए दी।

विचारों की विभिन्नता देखते हुए मेरी समझ में नहीं आता कि किस तथ्य को अपनाऊँ और किस तथ्यको छोड़ूँ। तथ्यों में इतना contradiction है कि इस सुंदर रुपहली दुनिया में आकर मुझे बड़ा confusion है।

समय से तालमेल बैठाने के लिए – कुछ कहते हैं – सोच नई रखो, कुछ कहते हैं – Old is gold लिए दिल में कुछ है तो express it, कुछ कहते हैं – मन स्वीकार लक्षणं, कुछ कहते हैं – बड़े सपने देखो, think big, कुछ कहते हैं - उतने पैर पसारिए, जितनी लम्बी ठौर, कुछ कहते हैं – tit for tat, कुछ कहते हैं – कोई एक गाल में थप्पड़ मारे तो तुम दूसरा गाल बढ़ा दो, कुछ कहते हैं – मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता खुद होता है, कुछ कहते हैं – विधाता का लिखा कोई नहीं बदल सकता, कुछ कहते हैं – first impression is the last impression जबकि कुछ कहते हैं – अंत भला तो सब भला, कुछ कहते हैं – दुख दूसरों से बाँटने से कम हो जाता है जबकि कुछ कहते हैं – अपना दुख किसी से मत कहो, लोग सुनकर हँसेंगे, मदद नहीं करेंगे।

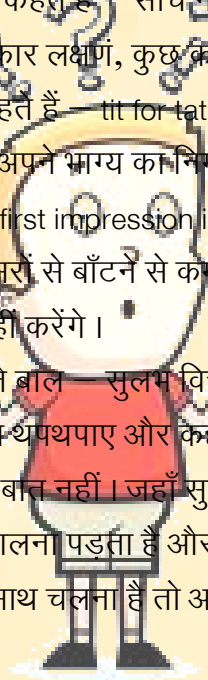

टीचर ने मनु की रचना पढ़ी इसमें उन्होंने बाल – सुलभ विचारों को पाया जो सच में पूरी तरह से अपने - आप में उलझी थी। टीचर ने मुस्कुराते हुए मनु के गाल थपथपाए और कहा, "बेटे, तुमने जो भी तथ्य लिखें हैं, वो अपनी – अपनी जगह सही हैं। इसमें confusion की कोई बात नहीं। जहाँ सुई का काम होता है वहाँ तलवार कुछ नहीं कर सकती। परिस्थिति के अनुसार अपने-आप को ढालना पड़ता है और जब जैसी जरुरत पड़ती है, वैसा ही करना पड़ता है, अपनाना पड़ता है। अगर जीवन में समय के साथ चलना है तो आशावादी बनना ही पड़ेगा, थोड़े – ज्यादा की सोच रखनी ही पड़ेगी।"

टीचर की इन बातों को सुन मनु अब पहले से ज्यादा खुश, संतुष्ट और आश्वस्त दिख रही थी। अब वह अपनी रचना हिंदी विभाग को सौंपने चल पड़ी थी।

डॉ. मधुलिका, टी.जी.टी.,
संस्कृत

** **विफलता से बचने की अपेक्षा उससे लाभ उठाएं।**

** **सकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति हर संकट को अवसर में परिवर्तित कर देते हैं।**

माँ "तेरी जैसी कोई नहीं"

श्रीमती चाँदनी जैन
धर्मपत्नी श्री दिलीप जैन
भारतीय खान ब्यूरो

26 जनवरी का वह दिन शायद मेरे जीवन का सबसे बहुमूल्य दिन रहा होगा। मेरे जीवन के इस महत्वपूर्ण दिन को चार चाँद लगाने मेरी माँ मेरे घर पहली बार आई थी। मैं भुवनेश्वर में सरकारी अधिकारी थी इसलिए मुझे यहीं के सबसे व्यस्तम इलाके में एक बड़ा सा घर मिला था। आज मुझे अपनी मेहनत का फल मिलने वाला था। आज मुझे सबसे कर्मठ अधिकारी का पुरस्कार मिलने वाला था, इसलिए मैंने माँ को यहाँ आने के लिए राज़ी कर लिया था। यूँ तो मैं जब दिल्ली में काम करती थी तब तो मैं अपनी माँ के साथ अपने छोटे से परिवार के साथ रहा करती थी। वैसे हमारा घर बहुत बड़ा तो नहीं था लेकिन छोटा भी नहीं था। वह घर हमारी सफलता की कहानी गाता था और गर्वामंडित होते हुए किसी बूढ़े वृक्ष की भाँति अपनी बाहें खोलकर सीधे खड़ा था जिसे अपनी शाखाओं पर लगे फल पर गर्व होता है। वह घर छोटा सा था पर हमारे लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं था।

आज सुबह हवा तेज़ होने के साथ-साथ ठंड का भी एहसास करा रही थी जिसके कारण मेरा बिस्तर छोड़ने का मन नहीं कर रहा था। माँ के कई बार उठाने पर भी मैं फिर से रजाई के अंदर दुबक जाया करती थी मानो जैसा कोई छोटा बच्चा स्कूल जाने की बात सुनकर ठंड के दिनों में रजाई में छिप जाता है।

माँ – उठ जा बैठा, वर्ना देर हो जाएगी। जल्दी उठ जा.....

मैं, जैसे ही माँ की आवाज़ सुनती वैसे ही डर के मारे रजाई में दुबक जाती और रजाई को कसके दबा लेती थी जिससे माँ आकर रजाई न खींच लें। स्कूल के दिनों में माँ अक्सर हमें उठाने के लिए इस तरह के कृत्य किया करती थी।

माँ – उठो बेटा वर्ना देर हो जाएगी.....। माँ के इस प्यार भरे स्नेह को मैं हमेशा याद किया करती थी !!!

किसी तरह मन पर संयम रखते हुए मैंने रजाई छोड़ने का संकल्प लिया और उठकर देखा कि माँ ने पहले से ही मेरे कपड़े आयरन कर तैयार कर दिए थे। आज नाश्ता भी मेरे पसंद का बना था। मैं उठकर बाहर बालकॉनी की ओर चली गई। बाहर का दृश्य कितना मनोरम सा लग रहा था। आज का मौसम मानों मेरे जीवन की तरह नई खुशियों की बौछारें मार रहा था। आज पूरा शहर कोहरे की चादर में लिपटा हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे प्रकृति ने कोहरे के अपने आँचल से पूरे शहर को ढक लिया हो और अपने मातृत्व भाव का प्रदर्शन कर रही हो। आज कार्यक्रम में जाना था इसलिए मैं जल्दी से तैयार हो गई और माँ के साथ समारोह स्थल की ओर निकल पड़ी।

भाग - 2

आज गणतंत्र दिवस है। सभी के लिए यह दिवस सामान्य दिन की तरह होगा परंतु मेरे और मेरी माँ के लिए आज का दिन जीवन के उन महत्वपूर्ण क्षणों में से एक था जिसकी कल्पना माँ हमेशा से किया करती थी। औपचारिक रूप से राष्ट्रगान, झंडारोहण भाषण इत्यादि होने के बाद बेहतरीन कार्य करने वाले अधिकारियों को आज पुरस्कृत किया जाना था। पुरस्कार वितरण की प्रक्रिया चलती रही और फिर मेरा नाम सम्मानपूर्वक पुकारा गया..... मैं मन ही मन गर्व महसूस करते हुए मंच की ओर बढ़ने लगी। मंच पर पहुँचते ही तालियों की गड़गड़ाहट से मेरा स्वागत हुआ जिसे सुनकर मेरा मन प्रफुल्लित हो रहा था। कितने महत्वपूर्ण होते है वे क्षण जब आपकी काबिलियत को तराशा जाए और सारे लोग आपकी तारीफें करते न थके। सबसे पहले मुझे वहाँ उपस्थित सभी सिपाहियों द्वारा सलामी दी गई और उसके बाद मुझे मेडल पहनाकर वो सम्मान दिया गया जिसे प्राप्त करने की आश सभी की होती है। पुरस्कार लेते समय मैं वहीं से अपनी

माँ को देख रही थी, खुशी के इस पल को उसकी आँखों से देखा जा सकता है जो उसे उसकी परवरिश पर गौरवान्वित होने को कह रहे थे।

आज मैं जहाँ भी हूँ अपनी माँ के समर्पण की बदौलत ही हूँ..... मैंने माइक पर यह बोलते हुए शुरुआत की, उसके बाद सभी सहयोगियों को धन्यावद देते हुए मैं मंच से उतर आई और माँ के पास जा पहुँची और फिर वहीं सभी के सामने अपनी माँ को वह मेडल पहनाकर सभी के मन में भी मैंने उसका कद और ऊँचा कर दिया। मेरे इस बच्चपन भरे अंदाज़ को देख वह थोड़ा शर्मा गई लेकिन मेरे स्नेह ने उनकी अश्रु गंगा के बांध पर दोबरा सेंध लगा दी। अक्सर जब भी मुझे स्कूल के दिनों में पुरस्कार मिला करता था तो सबसे अधिक माँ ही खुश हुआ करता थी और उसके बाद मेरी पीठ थप -थपाते हुए माथे को चूम लिया करती थी। आज भी कुछ ऐसा ही हुआ....!!

भाग - 3

शाम के समय मैं जब सो कर उठीं तो देखा कि वह अकले बरामदें मैं बैठकर बाहर देख कुछ गंभीर विचारों में खोई हुई थी। मैं भी चुप-चाप ड्राइंग रुम में जाकर बैठ गई और वहीं दूर से माँ को एक टक देखती रही। आज अनायस माँ की उदासीनता ने मुझे भी पुरानी यादों में धकेल दिया था। मैं भी बैठे-बैठे उन सभी पूरी यादों को कुरदने लगी जिसका प्रभाव न चाह कर भी कभी न कभी हावी होने लगता है। अचानक ही मेरे मन में वो सारी बातें यादें आने लगी जो माँ ने हमारे पालन पोषण के लिए सही। यह सारी पुरानी बातें पता नहीं अचानक एक फिल्म की भाँति दृश्यमान हो रही थी। सोचते-सोचते में उस धरातल तक जा पहुँची जिसने हमें खड़े होने का साहस भरा था। मन ही मन सोच रही थी कि माँ ने हमें पालने के लिए कितने संघर्ष किए थे, हमें एक कामयाबी दिलाने के लिए उसने कितना कुछ नहीं सहा था। किसी भी अकेली औरत के लिए इन सभी समस्याओं का सामना करना बड़ा कठिन होता है। समाज की रुढ़िवादिता और उनके विचारों को दर किनार करते हुए वह अपने पथ पर अग्रसर रही। माँ ने अपनी इच्छाओं तथा अपनी जिंदगी को दमन कर हमारी इच्छाओं को पहले पूरा किया था। तबियत खराब होने पर भी बैलों की तरह तपती हुई धूप, तेज़ बारिश में अपने आपको सींचती रहती थी जिससे उसके द्वारा सीचे गए पौधे एक दिन विशाल पेड़ की भांति अपना अस्तित्व बना सके और अपनी जड़े मजबूत कर सकें। मैं उन्हें जब भी देखती, मेरा मन मुझे बुरी तरह कचौड़ता रहता और बार-बार मन में यह बात आ जाती थी कि –

माँ बहुत हो गया अब, किस चीज़ की कमी है हमारे पास, तुम इतना मेहनत क्यों करती हो ? पूरा जीवन तो हमारे लिए समर्पित कर दिया पर अब तो तुम्हारे आराम करने के दिन है माँ, आराम किया करो माँ ! पर हमारे द्वारा लाख समझाने के बाद भी वह चींटी की भाँति अपने लक्ष्य की ओर केंद्रित रहती थी जैसे चींटी के सामने कोई भी अवरोध आ जाए पर वह रास्ते का दूसरा रुख अपनाकर अपनी मंज़िल की ओर बढ़ती चली जाती हैं उसी प्रकार माँ भी कुछ ऐसे ही थी। जीवन के इस पड़ाव में कितने ही अवरोध देखें थे माँ ने, लेकिन हमारे ऊपर उसकी परछाई भी पड़ने नहीं दी। वह हमेशा अपने आपको व्यस्त रखती थी शायद इसलिए भी कि कहीं यह अकेलापन उन्हें खा न जाए। जीवन भर पति से वह वो सम्मान तो मिल न सका जिसकी वह हमेशा से हकदारनी थी। दहेज़ के लालच में तीन बच्चों के साथ घर से निकाल देने वाले उस इंसान के लिए हमेशा से ही मन में एक क्रोध आता है और मन क्षुब्ध हो जाया करता है। दहेज़ की उस आग में कैसी जली थी माँ जिसके दाग अभी भी रह रह कर ऊभर आते हैं।

ऐसा नहीं था कि वह इंसान गरीब या हमारी जिम्मेदारियों को उठाने पर असक्षम था। करोड़ों की दौलत होने के बावजूद भी दहेज़ की उस आग ने मेरी माँ की आत्मा को रौंध कर रख दिया था। जिसके कारण वह लगभग टूट चुकी थी। हमारी उपस्थिति ने उसे एक नया ऐहसास दिया था और हमारे उज्ज्वल भविष्य की कल्पना लिए निकल पड़ी इस भागम-भाग वाली स्वार्थी जिंदगी में जिसे सिर्फ अपना ही फायदा नज़र आता है।

उस समय लड़कियों को जन्म देना भी एक पाप समझा जाता है, लड़कियाँ बोझ समझी जाती थी। समाज की इन पुरानी और रुढ़िवादी मान्यताओं ने देश में हमारे जैसे न जाने कितने ही परिवारों को देहज की आग में झोंक दिया था। अतः इन अत्याचारों को सहते-सहते एक दिन माँ ने अपनी मर्यादा को लांघ कर हम दो बहनों और छोटे भाई के साथ उस घर की दहलीज़ को हमेशा के लिए त्याग दिया ताकि हम बच्चों पर इन बातों का बुरा साया न पड़े और हमारा भविष्य उज्ज्वल हो सके।

भाग -4

रोजमर्रा के इन अत्याचारों से अंततः निज़ाद दिलाने के लिए नानाजी, माँ का हमेशा मनोबल बढ़ाते रहते थे और पुरानी बातों को भूलकर अपना और अपने बच्चों के भविष्य को संवारने की सलाह दिया करते थे। उस दौरान लड़कियों का विवाह जल्दी हो जाया करता था। जब माँ ने हम दोनों के जन्म के बाद छोटे भाई को जन्म दिया था तब वह महज़ 25 वर्ष की थी। इस छोटी सी उम्र में कितना कुछ नहीं सहा था उसने, सांस का शिकायतें, पति का अत्याचार और न जाने कितना कुछ.....

आखिरकार इन सभी चीज़ों को माँ ने सहजता के साथ स्वीकार किया था। उसने राजधानी की इस भागम भाग वाली जिंदगी को अपने अनुकूल कर लिया था। सुबह 04.00 बजे ऊठकर हम सभी के लिए खाना बनाना हम सभी को नाश्ता कराकर अपने काम पर निकल जाना फिर वापस लौटकर हम सभी को खाना खिलाना और उसके बाद हम सभी को बैठाकर पढ़ाना कितनी तपस्या की थी हमारी माँ ने फिर भी चेहरे में कोई खेद या किसी पर कोई क्रोध नहीं था।

भाग – 5

इतना सब सोच ही रही थी कि अचानक माँ मेरे सामने आकर खड़ी हो गई, शायद उसने मेरे मन के अंदर ऊफान मार रहे बवंडर को भाप लिया था। माँ आज भी हमारे मन में चल रही परेशानियों को बिना कुछ कहे भाप लेती थी। मेरी भींगी हुई पलकों ने पहले ही इस बात की पुष्टि कर दी थी शायद इसलिए उसने मुझे अपनी सीने से लगाकर मेरे मन में उफान मार रहे बवंडर को शांत कर दिया और प्यार से अपनी गोद में सुला लिया। उसके इस स्नेह ने मेरी शक्ति और बढ़ा दी थी। माँ तेरे प्रेम और समर्पण को सलाम। माँ तेरी जैसी कोई नहीं।

माँ

सुश्री पून्नप्रभा सेठी

जिंदगी बनाने के लिए
घर से दूर निकल आई हूँ
क्या, मैं अपने घर की यादों को
पूरी तरह भूल पाई हूँ ?

अपने परिवार के सपनों को
साकार करने बहुत दूर चली आई हूँ
क्या, मैं अपनी माँ की ममता को
पूरी तरह भूल पाई हूँ ?

नहीं, दुनिया में कोई नहीं आया
जो माँ की ममता भरी बातों को भूल पाए,
अगर भूल पाए कोई माँ की ममता
वही भूलने का ये दु:ख, सारी ज़िंदगी तड़पाए ।

माँ जैसी दुनिया में कोई नहीं
माँ को भूल पाना आसान नहीं
क्या लिखूँ अपनी लेखनी से माँ के बारे में
लिखने के लिए दुनिया में कागज़ ही नहीं ।

कैसे बनाऊँ अपनी ज़िंदगी
ज़िंदगी का मतलब कहीं ढूंढ नहीं पाई हूँ
ज़िंदगी बनाना चाहती थी
और ज़िंदगी से ही दूर चली आई हूँ ।

मेहनत

ऐ इस देश के नवजवान,
सुनो, बात मेरी ऐ किसान
बच्चें, बुढ़े, आप सबको मिले ज्ञान,
मेहनत है इसकी पहचान ॥

मेहनत से न घबराओ
मेहनत करके आगे बढ़ते जाओ
कठिन परेशानियों में भी मुस्कुराओ
सफलता की कुंजी है मेहनत
इससे है सबकी हसरत ॥

बहती हवा के संग लहराओ
मेहनत से न तुम घबराओ
जीते वहीं जो करे मेहनत
डरे नहीं जो है मेहनती
सफल होगी गर ये ज़मीं
जब मेहनत करे सभी ॥

कार्य नामुमकीन नहीं जब तुम हो जवां
दिल से, दिमाग से, न कि सिर्फ शरीर से
मेहनत का फल होवे मीठा
आम, अंगूर, नारियल, सेब पड़ जावे फीका
मेहनती होवे हर कदम पर सफल
आलसी रोवे होकर असफल
तो, समझो मेरी बात भलीं
मेहनत कर सबका होवे भला ॥

श्री राहुल राय (कक्षा- X 'B')
केंद्रीय विद्यालय, एन.ए.डी

भेदिए

बड़े सलीके से
कदम दर कदम
चलता हर शख्स
कमबख्त आहट
फिर भी हो ही जाती है।

सात सालों में
दबा दिए जाते
चुपचाप राज़ कई

भेदिए फिर भी
जग जाहिर इन्हें
कर ही जाते हैं।

बनाया गुप्तचर जिन्हें
गुप्त में वे चर गए
दुश्मनों से हाथ मिलाया
और घर अपना भर गये।

भेद दिया दूसरों को
सूचना हमें न देकर
राज़ जाहिर कर गये ।

हँसना मना है

- टूटा राम खाली पेपर को बार-बार चूम रहा था।
  फूटा राम- ये क्या है?
  टूटा राम- लव लेटर
  फूटा रामः- मगर ये तो खाली है,
  टूटा राम- आजकल बोलचाल बंद है।

- एक गंभीर आपरेशन के सफल होने के बाद डाक्टर मरीज से- आपरेशन तो सफल रहा पर भुलवश मेरे एक हाथ का ग्लब आपके पेट के अंदर ही छूट गया।
  मरीज- अरे साहब ये लो 20 रुपये दूसरा ग्लब ले लीजिएगा।

- एक आदमी को डांटते हुए पुलिस ने पूछाः- अरे तुमने टूटा राम के पीछे गाड़ी क्यो दौड़ा दी?
  फूटा रामः- अगर आपके सामने एक तरफ 10 आदमी और दूसरी तरफ 1 आदमी जा रहे हो और अचानक आपके गाड़ी का ब्रेक फेल हो गया हो तो आप गाड़ी किसके तरफ मोड़ेंगे।
  पुलिस – निश्चित है किसी एक आदमी के तरफ
  फूटा राम- मैंने भी वही किया, पर टूटा राम खेतों के तरफ दौड़ने लगा तो मैं क्या करता।

- पागल खाने से दो पागल चकमा देकर फरार हो गये।
  सूखे तालाब के बीच में एक नांव पर बैठकर दोनों नांव खेने लगे।
  टूटा राम पुलिस – साब देखों, इसीलिए पागल लोग बदनाम है।
  फूटा रामः- सही कहा , अगर मुझे तैरना आता तो दोनों को फौरन दबोच लेता।

- एक महिला पुलिस थाने में,
  महिलाः- साब! साब! मेरा पति कल शाम को बैगन लेने बाजार गया था, अभी तक वापस नही लौटा।
  टूटा राम पुलिस- तो आप दूसरी सब्जी पका लो न, बैगन के पीछें क्यों पड़ी हो।

- कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए पति की कमाई का आधा हिस्सा पर पत्नी का हक बताया।
  फूटा राम कर्मचारीः- चलो खुशी हुई कि अब आधा तनख्वाह तो हाथ में रहेगी।

- पत्नीः-तुम हर बात में मेरे मायके वालों को बीच में क्यों लाते हों? जो बोलना है मुझे डायरेक्ट बोलो।
  पतिः- देखो भई, अब टीवी में कोई खराबी आ जाये तो कोई टीवी को थोड़ी ही बोलता है, गाली तो कंपनी वाले ही खाते है न।

- पत्नी -सुनो जी लड़का बहुत पैसा उड़ाने लगा है, जहां भी छुपाती हूं , ढूंढ़ ही लेता हैं.
  पतिः- नालायक की किताब में रख दो, परीक्षा तक ढूंढ ही नहीं पायेगा।

- संपादन समिति

क्या कहती थी..... तेरी ये आँखें

हम गागर में सागर भर सकते हैं
सागर की तह तक जा सकते हैं
गगनचुंबी हिमालय को पार कर सकते हैं
नदी के उफान को रोक सकते हैं
हवा की सरसराहट समझ सकते हैं
किंतु नहीं जान सकते तेरी इन आँखों के मरम को
ये तन्हा हैं? बैचेन हैं? या इसे किसी का इंतजार है?
या ये सूचक है किसी असह्य पीड़ा का ????
यह राज हम नहीं जान सकें।
सुना है आँख दर्पण हैं मन का, किंतु मन नहीं है शीशे का।
तेरी ये छवि बैचेन करती है मुझे, कहती है..... मुझसे
पढ़ो-पढ़ो इनको सब समझ जाओगे तुम
कथन है कुछ अकथनीय मेरे।
पलकों की वह नमी, होठों का वह इंच मुस्कान बेचैन करता है
माँ.....
कहता है मुझसे क्या एक पल भी नहीं है मेरे लिए?????
तेरे ये शिथिल अंग कहते हैं मुझसे.....
तुझे इस काबिल बनाने हेतु, मैंने तो अपना सर्वस्व अर्पण किए
माना किसी आँकाक्षा या अपेक्षा से मैंने तुझे नहीं पाला,
किंतु विश्वास था.....
उस डोर का, जिसे तेरे जन्म से पहले ही मैंने तुझसे माना।
अब समझा हूँ मां..... क्या कहती थी..... तेरी ये आँखे।
गुनहगार हूँ तेरा,
वक्त की रफतार एवं समय की मांग के आगे तुझे भूल-सा गया था।
अर्द्धांगनी की पुकार तथा पुत्र स्नेह के मोह में ऐसा उलझा कि.....
तेरी ममतामयी शीतल छवि का भान न रहा मुझे।
कहते हैं घायल की गति घायल ही जाने
अब जाना है माँ मैंने तेरी आँखों के दर्द को
तेरी उस पीड़ा को..... अब समझ पाया हूँ मैं।

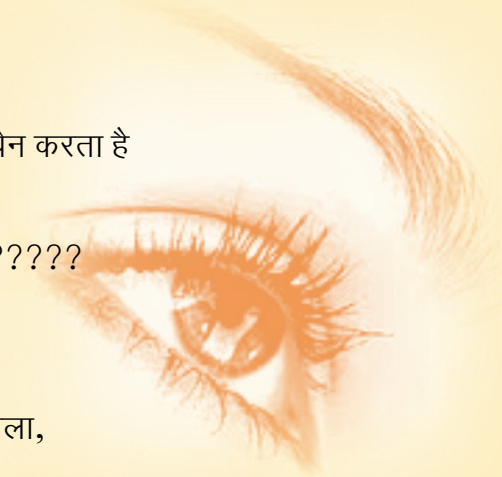

सुश्री कृष्ण तुलसी

दिल के करीब

लोपामुद्रा साहु,
नाईज़र, भुवनेश्वर

दिल के करीब आके अब कोई
रहने लगा
आँखों से प्यार की बातें
कहने लगा
महका दिया है उसने तन्हाइयों को मेरी
ख्वाब में आके मेरी
लड़खड़ाने लगा

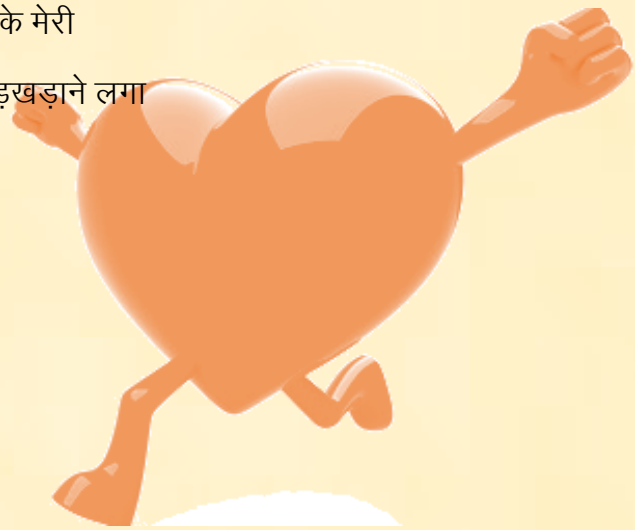

दिल के करीब रहके भी न अपना
बना सकता हूँ
अफसोस न उन्हें दिल की बात
बता सकता हूँ
न उम्मीद है कोई उसे पाने की
कहीं ऐसा न हो,
उनके वगैर हम मर न जाए।

तकनीकी शिक्षा

यमुना प्रसाद
भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर

बाप ने कहा बेटा से,
पढ़ो तुम तकनीकी शिक्षा
चाहे तुम्हारी कुछ भी हो इच्छा।
बेटा ने पूछा क्यों ?
तो बाप ने कहा,
बेटा ये है तकनीकी शिक्षा
पढ़ने से माँगनी नहीं पड़ती भिक्षा
इससे न रखो अपने को परहेज
पढ़ने से मिलेगा काफी दहेज

इस पर बेटा ने बोला
दे मुझे नोट लाता हूँ झोला
इससे मैं दूँगा डोनेशन
तब लूँगा एडमिशन।
क्योंकि मुझमें शक्ति नहीं की
फेस करुँ कम्पिटिशन
और तब जो मिलेगा दहेज
उसमें आपको भी दूँगा कमीशन

एहसास ए दर्द

बेटा की विदाई की बेला में,
मन बोझिल और,
साँसे थम सी गई थी।
शरीर शिथिल पड़ गया और
आँके नाम हो गई थी।
कुछ यादों को छोड़ और
कुछ सपनों को संजोए,
आज मेरी बेटी मुझसे जुदा हो,
एक नाय रिश्ता बनाने जा रही थी,
कि अचानक मुझे नारी के.....
"सहनशक्ति के मूर्ति रूप" का एहसास हो आया।
वर्षों पहले अपने घर में,
अपनी माँ और अपनी पत्नी को इस रूप में
पाया था।
कितना भी अत्याचार क्यों न किया गया,
पर उनके मुंह से उफ न निकला था,
मुझे तब उनके दर्द का एहसास भी न होता था
क्योंकि.....
तब मैं सिर्फ एक पुरुष और एक पति था।
आज मैं एक पिता भी हूँ,
बेटी के सुखद भविष्य की कामना करता हूँ,
"कोई उसका बाल भी बांका न कर पाए और
न ही कोई उसे " सहनशक्ति की मूर्ति" के रूप में देखे।"

क्या एक पिता के " एहसास- ए- दर्द" को
उसके ससुराल वाले या उसके पति,
कभी समझ पाएंगे।
आज एक पिता की इस
पुरुष प्रधान समाज से
यही गुजारिश है
कि स्त्रियों को कभी
सहनशक्ति की मूर्ति ने समझे
उसे बराबरी का दर्जा दे,
उसकी भावनाओं का सम्मान करे
क्योंकि तभी जिस दिन वे पिता बन
अपनी बेटी की विदाई करेंगे
मेरे जैसे "एहसास-ए-दर्द से न गुजरेंगे।

डॉ. मधुलिका
केंद्रीय विद्यालय

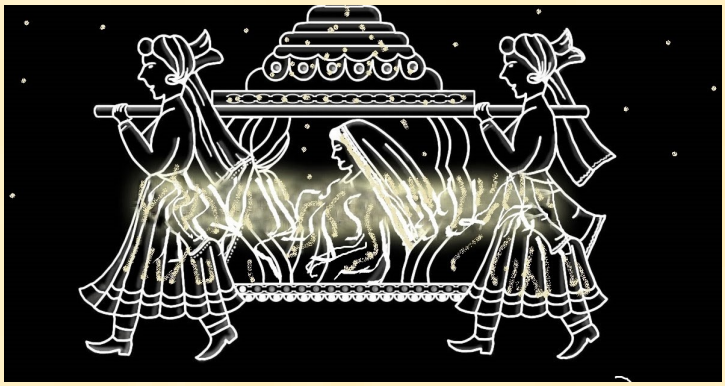

अस्तित्व की तलाश

श्री सुधीर कुमार मिश्र
केंद्रीय जल आयोग

अस्तित्व की तलाश, मैं तो करता गया
और गाँव से शहर, आता गया
शहर की खुशबु में तो खोता गया
सोंधी माटी की खुशबु, भी छोड़ता गया
और हकीकत से, दूर मैं तो होता गया।

आत्मा को अपनी, मैं तो बेंचता गया
और अंधेरों की तरफ, मैं तो बढ़ता गया
उजालों से दूर, मैं तो होता गया
और अंधेरों को गले से, लगाता गया।

शहर का हवा पानी, मुझे लगता गया
और गॉव का सब कुछ, भूलता गया
दिखने वाले उजालों की तरफ, भागता गया
और अपने अंदर का अँधेरा, बढ़ाता गया।

सही गलत का हिसाब सब लगाता गया
और गलत को सही समझाता गया
बिन आत्मा के, मैं तो चलता गया
एक मशीन सा बनता गया।

दिन रात के चक्रव्यूह में फसता गया
और जमीर बेंचकर पैसा कमाता गया
अपनी ही नज़रों में आदमी, कितना गिरता गया
फिर भी उठने का ढोंग मैं करता गया।

बंद माचिस की तीलियों की तरह रहता गया
अपना अस्तित्व तो खोता गया
तिल- तिल करके, हर वक्त जलता गया
और खाली माचिस की तरह ही, फिकता गया ।

बूंद

जिंदगी के हर लम्हें में
तुम आती हो
होली बनकर आती हो
रंगोली बनकर आती हो
जिंदगी बनकर आती हो,
सपने में आती हो
सोते जागते में आती हो
कोमल हृदय बनकर आती हो।
तुम्हारें आने से सारी धरती
मुस्कुराने लगती है
धरती वालों के होठों पर
तुम्हारा नाम गूंजने लगता है,
तुम आती हो
खुबसूरत चेहरों पर
गुलाल मल जाती हो और
रंग में रंग घोल जाती हो
तुम लज्ज्यावती की तरह
शर्मा कर आती हो,
अपने नाजूक और कोमल स्पर्श से
मजहबी दुश्मनों के दिलों में
मोहब्बत की शम्मा जला जाती हो।
तुम लचीले इंद्रधनुष की
सतरंगी बनकर आती हो
साथ में चांद से थोड़ी सी
चांदनी छिटककर लाती हो
दुश्मनी को भूलाकर दोस्ती का रिश्ता
फिर से बना जाती हो,
जैसा दरिया के दोनों छोरों को
साथ मिला जाती हो।
तुम सुरों की धून बनकर आती हो
घून की लहरों में
सबको नहला जाती हो
तुम धमाका बनकर आती हो,
दुश्मनों के बेड़े को तोड़कर
बुझदिलों में चेतना की चिंगारियां
जला जाती हो,
भटकी पीढ़ियों को बदलते मौसम का
संदेशा कानों कान कह जाती हो,
होली के बदले गोली से खेलने वाली
उंगलियों पर मिलन की पहचान
छोड़ जाती हो।
तुम सीया चीन की दीवार को
लांघ कर आती हो
क्रोध संतान की आग को
शीतल बना जाती हो,
तुम बूंदों में आती हो
सावन की तरह
उजड़े वतन को हरियाली बनाकर
एक मधुरिमा शाम बना जाती हो,
तुम कितनी सुंदर हो
बूंद बन कर आती हो
रंगों की फूहार छोड़ जाती हो।

श्री आर एन चाँद
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी)

ऐ इंसान तू किस ओर चला जा रहा है

ऐ इंसान तू किस ओर चला जा रहा है,

गुनाह - पे – गुनाह किए जा रहा है ।

क्यों बहा रहा है तू बेगुनाह लोगों का लहू,

जो है किसी की माँ, भाई, बहन या बहू ।

क्यों तू भाई से भाई को लड़ा रहा है

क्यों तू गुनाह - पे – गुनाह किए जा रहा है ।

ऐ इंसान तू किस ओर चला जा रहा है ।

क्यों तेरे दिल में औरों के लिए प्यार नहीं,

क्यों तेरे दिल में आज दया और जज्बात नहीं ।

क्यों मार कर किसी को तू बढ़ा जा रहा है

ऐ इंसान तू किस ओर चला जा रहा है ।

क्या पाने की चाह में,

यह सितम ढाह रहा है ।

कुछ लेकर न आया था,

न कुछ लेकर जाएगा ।

किस लिए यह किए जा रहा है

ऐ इंसान तू किस ओर चला जा रहा है ।

सुश्री रजनी बाला,व.ले.प
प्रधान महालेखाकार कार्यालय
(आ एवं रा क्षे लेप)

मृत्यु के बाद ?

मृत्यु के बाद आदमी कहां जाता होगा ?

हाँ, जानता हूँ, आदमी का शरीर श्मशान या कब्रिस्तान जाता है, जल जाता है या दफ्न हो जाता है।

पर, आत्मा का क्या होता होगा ?

क्या इसी जहाँ के जैसा कोई दूसरा जहाँ होता होगा ?

क्या उस जहाँ में अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा-जोखा होता होगा ?

क्या अमीरी-गरीबी, ऊँच-नीच, जाति-पाति के काले बादल वहाँ भी लोगों के मन को धुंधलाता होगा ?

क्या इस जहाँ की करह ही काम-क्रोध, लोभ-मोह, लोगों को सताता होगा ?

क्या यहाँ की गई गलतियों को वो वहाँ भी दुहराता होगा ?

क्या फिर कभी वो इस जहाँ में लौट कर आता होगा ?

सब कहते है कि स्वर्ग-नरक होता है, समझ नहीं आता वो यहीं है या कही और होता होगा ?

सोचता हूँ क्या मेरे ही जैसे सब के मन मे ऐसे विचारों का आना जाना होता होगा ?

शायद होता ही होगा !

जब अंत मृत्यु ही है तो प्यार से जिंदगी जीने में किसी को क्या हर्ज होता होगा ?

अभिषेक कुमार

प्रधान महालेखाकार कार्यालय (ले.एवं हक.)

पिता का संदेश

आज के व्यस्तता और विलासितापूर्ण जिंदगी की चाह ने अपनापन को दरकिनार कर दिया है। आज का युवा अच्छा मुकाम हासिल करने के बाद भुल जाता है कि उनकी इस उपलब्धि के लिए उनके पालन मे अपनी जिंदगी में कितने उतार-चढ़ाव देखने पर अपने पुत्र पर आँच भी न आने दिया। एक पिता को भी इस बात की शंका रहती है कि कहीं उनका भी पुत्र आज के युवाओं की तरह उन्हें भी पराया न कर दे। इसलिए वह इन पंक्तियों के माध्यम से अपने पुत्र के अलावा आज के सभी युवाओं को संबोधित करते हुए अपने संदेश कह रहा हैः-

जिंदगी के उस पड़ाव पर हरपल साथ रहना,

याद करना कि हमने पूरी जिंदगी कुर्बान कर दी है तुम्हारे लिए।

उस हाथ को कभी छोडना मत,

याद करना मेरे द्वारा सिखाया गया वह पहला शब्द।

कभी नींद न आये तो, अपना स्नेहिल हाथ मेरे सिर पर रख देना,

भुलना मत कि कभी तुम्हें सुलाने के लिए मैंने कई रात जाग कर गुजारी है।

इन आँखो में कभी पानी मत आने देना,

जिन आँखो ने तुम्हें सदा बिठा कर रखा है पल्लकों पर।

उस दिल को कभी ठोकर मत पहुँचाना,

जिसने सिने से लगाकर तुम्हें पाला है।

जितेन्द्र कुमार, व.ले.प
प्रधान महालेखाकार कार्यालय
(आ एवं रा क्षे लेप)

पाँच गठरियाँ

एक महात्मा रास्तें में कही जा रहे थे। उन्हें पाँच गधों पर बड़ी-बड़ी गठरियाँ लादे हुए एक सौदागर दिखायी दिया। गठरियों का बोझ इतना अधिक था कि बेचारे गधे उसे ढो नहीं पा रहे थे। महात्मा ने सौदागर से प्रश्न किया – सौदागर, इन गठरियों में तुमने ऐसी कौन सी चीजें रखी है, जिन्हें ये बेचारे गधे ढो नहीं पा रहे है ? इन गठरियों में मानव उपयोगी चीज़े भरी है। उनकी बिक्री के लिए मैं बाजार जा रहा हूँ। ये चिजें इतनी बहुमूल्य है कि गधों की ओर ध्यान देने में मैं असमर्थ हूँ। सौदागर ने जवाब दिया। अच्छा, कौन-कौन सी चीजें है, जरा मैं भी तो जानूँ? जिज्ञासावश महात्मा ने पूछा!! सौदागर ने जवाब दिया- यह जो पहला गधा आप देख रहे है इस पर अत्याचार की गठरी लदी है। क्या कहा, अत्याचार!! आश्चर्य से महात्मा ने पूछा – भला अत्याचार कौन खरीदेगा? इसके खरीददार है- राजा-महाराजा और सत्ताधारी लोग। काफी ऊँची दर पर बिक्री होती है इसकी।

अच्छा इस दूसरी गठरी में क्या है महात्मा ने फिर पूछा। यह गठरी अहंकार से लबालब भरी है और इसके खरीददार है पंडित और विद्वान लोग। तीसरे गधे में ईष्या की गठरी लदी है। इसके ग्राहक धनवान लोग जो एक दूसरे की प्रगति की आग में जलते है। इसे खरीदने के लिए इन लोगों का तांता लगा हुआ है। महात्मा ने पूछा अच्छा चौथी गठरी में क्या है सौदागर। इसमें बेईमानी भरी है और इसके ग्राहक है बाजारू लोग। बाजार में बेईमानी से की गई बिक्री से लोग काफी फायदा उठाते है। इसलिए बाजार में इसके खरीददार लोग इसे खरीदने के लिए तैयार खड़े है। महात्मा ने पूछा- अंतिम गधे पर क्या लदा है। सौदागर ने जवाब दिया- इस गधे पर छल-कपट से भरी गठरी है और इसकी मांग उन औरतों मे बहुत जयादा है, जो सदगुणी नहीं है। जिसके पास घर में कोई काम धंधा नहीं है, ऐसी औरते छल-कपट का सहारा लेकर दूसरों की लकीर छोटी कर अपनी लकीर बड़ी करने की कोशिश करती है। वे इसकी थोक के भाव खरीददार है। सौदागर की बात सुनकर महात्मा की समझ में आ गया कि दुनिया के बाजार में बुरी चीज़ों के बहुत खरीददार है जबकी अच्छी बात बहुत कम लोग ग्रहण करतें है।

मिथिलेश कुमार रजक, व.ले.प
(आ एवं रा क्षे लेप)

सोशल मीडिया एक अभिशाप या वरदान ?

सुबह पाँच बजे मोबाइल के अलार्म से आँख खुली और रोज़ की तरह चाय लेकर बाहर बॉलकनी में चाय पीने लगा। सुबह-सुबह बाहर की ताज़ी हवा, शांत वातावरण एवं हरियाली के बीच मन को बहुत सुकून का एहसास होता है । लेकिन आज रोज़ की तरह बाहर शांति नहीं थी । कॉलोनी के काफी सारे लोग हमारी गली में रहने वाली मिसेज शर्मा के घर पर इकट्ठा थे । किसी अनहोनी की आशंका से मन भयभीत होने लगा । चाय वैसे ही छोड़ कर मैं भी जल्दी से मिसेज शर्मा के घर पहुँच गया तो पता चला कि मिसेज शर्मा की 15 दिनों से लापाता इकलौती बेटी पूनम घर वापस आ गई थी तो मेरे मन को शांति मिली। लेकिन अगले ही पल पता चला की उसकी मानसिक संतुलन ठीक नहीं है। वह अजीब सी हरकतें कर रही थी। अपने आप से ही बांते कर रही थी।कोई शर्मा जी को झाड़ फूँक के लिए , कोई तांत्रिक बाबा के पास जाने की सलाह दे रहा था, तो कोई डॉक्टर के पास ले जाने के लिए बोल रहा था । सभी लोग शर्मा जी को दिलासा और अपनी-अपनी सलाह देकर कुछ देर में अपने-अपने घर चले गए ।

घर आकर मैं भी सोफे पर बैठकर पेपर पढ़ने लगा पर पेपर में मन नहीं लग रहा था । आँखो के सामने आज से लगभग चार साल पहले की घटनाक्रम घूम रही था । जब पूनम अपनी दसवीं कक्षा में 95 प्रतिशत अंको से उत्तीर्ण होने पर मिठाई लेकर आई थी। उसके दो साल बाद इनटर में 96 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण होकर अपने कॉलेज का नाम रोशन की थी । इसके बाद इंजीनियरिंग की तैयारी कर के पहले ही प्रयास में इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा में सफल हुई थी । अभी उसे इंजीनियरिंग में गए हुए लगभग एक साल ही हुआ था कि अचानक एक दिन वह कॉलेज जाते समय लापता हो गई । शर्माजी ने पुलिस में रिपोर्ट की और सब जगह ढूँढा पर कुछ नहीं पता चला । अचानक आज पूनम मिली भी तो इस हालत में ।

आखिरकार शर्माजी ने पूनम को एक साइकेट्रिस्ट को दिखाया और लगभग चार माह के इलाज के बाद पूनम कुछ बताने की हालत में हुई । उसने बताया की वह अपने इच्छा से एक लड़के के साथ गई थी । उस लड़के से उसकी जान पहचान एक सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक के द्वारा हुई थी। दोनों में दोस्ती हुई, मेल जोल हुआ और दोनों ने शादी करने का फैसला किया। माता-पिता को इस डर से नहीं बताया की वह अनुमति नहीं देगें । उस लड़के के साथ वह मुम्बई चली गई। वहाँ जाकर एक छोटे से मंदिर में उन्होंने शादी कर ली । उसके बाद वह लड़का उसे एक सुनसान सी जगह पर बने मकान पर ले गया । वह मकान उसने अपने किसी दोस्त का बताया । उस लड़के का व्यवहार अब उसके प्रति एकदम बदल गया था । वह उसे बात-बात पर पीटता था और शायद नींद की दवाई भी देता था । वह सारा दिन सोती रहती थी । एक दिन इसने फोन पर उस लड़के को किसी से बात करते हुए सुना की वह उसे 25,000 रुपय के लिए किसी को बेचने जा रहा है । तब उसे वास्तविकता का ज्ञान हुआ और मौका देख कर एक दिन वहाँ से भाग निकली और किसी तरह घर वापस आ पायी ।

यह केवल एक पूनम की ही कहानी नहीं है, आज हम अख़बार उठा कर देखे तो ऐसी कितने पूनम मिल जाएगीं जो सोशल नेटवर्किंग साइट का शिकार हो रही है । हमें इस प्रकार की समस्याओं का समाधान खोज़ना ही होगा जिससे हमारी युवा पीढ़ी इस प्रकार की गलती से अपना जीवन बर्बाद न करें । पूनम का भाग्य अच्छा था की वह घर वापस आ गई और उसके माता-पिता ने उसे अपना भी लिया। पूनम जैसी कितनी ही लड़कियाँ तो घर वापस ही नहीं आपाती और अगर आ भी जाती है तो उनके माता-पिता समाज के डर से उनको अपना नहीं पाते ।

मुझे समझ में नहीं आता कि ये छोटे-छोटे बच्चे इतने बड़े कैसे हो जाते हैं कि अपने जीवन के इतने बड़े-बड़े निर्णय माता-पिता को बताये बिना अपने आप लेने लगते है । शायद यह टी.वी. और इंटरनेट द्वारा दी जाने वाली सूचनाओ का ही परिणाम है। इनका उपयोग करते – करते बच्चे यथार्थ से दूर अपनी एक अलग सपनों की दुनिया बना लेते हैं जहाँ सब कुछ उनकी इच्छा के अनुरूप ही होता है ।

हमें युवाओं को वास्तविकता और स्वपनलोक में अच्छे और बुरे में अंतर बताना चाहिए और साथ ही युवाओ को भी अपनी परिवक्ता का परिचय देना चाहिए। युवाओं को समझाना चाहिए कि जिन माता-पिता को वह आज शत्रु समझ रहे है, उन्होंने ही उन्हें इतना प्यार से पाल पोश कर इतना बड़ा किया है तो उनके भी अपने माता-पिता के प्रति कुछ कर्तव्य है । शायद तभी इस समस्या का समाधान संभव हो सकेगा ।

महेश दास,व.ले.प
प्रधान महालेखाकार कार्यालय
(आ एवं रा क्षे लेप)

****करने योग्य कार्य हेतु कठिन परिश्रम कर पाना ही जीवन में सबसे उत्तम पुरस्कार है ।**

**** जो बाधाओं को अवसरों में परिवर्तित करते हैं, वे ही सच्चे नेता हैं ।**

**** भाग्य की प्रवृत्ति है कि वह उनके पक्ष में होता है जो उस पर निर्भर नहीं होते । अत: स्वयं पर विश्वास रखें और लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास करें ।**

**** मुस्कान चेहरे पर तेज, मस्तिष्क को शीतलता और मन को आनंद देती है ।**

जनता

होशियार बड़ी है ये अपने देश की जनता
सुनती है ये सबकी, पर करती अपने मन का।।
भूल करो न कोई जो इसको बुद्धु मानो
जनता है जनार्दन, इस बात को जानो।।
ठेंगा दिखातें जो इन्हें, फायदा हैं उठाते
खबर लेती है उनका, चुनाव में धुल चटाके।।
होशियार बड़ी है ये अपने देश की जनता
सुनती है ये सबकी पर करती अपने मन का।।
रहो न गफलत में तुम की ये मुर्ख बड़े हैं
चाणक्य, विवेकानंद इनमें भरे पड़े हैं।।
आगाज़ करेगी जब ये अपने इंसाफ का
भूल जाओगे गद्दारों नाम अपने बाप का।।
सभी क्रांतियों की जननी होती है जनता
बाहर भीतर हर मुद्दों पर लड़ती जनता।।
होशियार बड़ी है ये अपने देश की जनता
सुनती है ये सबकी पर करती अपने मन का।।

ये मत समझना लोक लुभावन वादों से बहका लोगे
पैंसो के लालच में इनसे वोट डलवा लोगे।।
किया जिन्होंने ऐसा हर बार मुहँ की खाई है
परिणाम आने के बाद उनको अक्ल ये आई है।।
होशियार बड़ी है ये अपने देश की जनता
सुनती है ये सबकी पर करती अपने मन का।।
जाति – धर्म पर इनको लड़ाकर अपने को अगर शेर समझते हो
जनता जब-जब जागती है गिदर की मौत मरते हो।।
भाग गये विदेशी सारे यहाँ से मुहँ की खा के
भ्रम में मत रहना रख लोगे इनको दबाके।।
होशियार बड़ी है ये अपने देश की जनता
सुनती है ये सबकी पर करती अपने मन का।।

राजीव कुमार,स.ले.प.अ
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय
(आ एवं रा क्षे लेप)

राजभाषा प्रश्नमंच

1. संविधान के किस भाग में संसद में कामकाज़ की भाषा के बारे में उल्लेख है। **उ. भाग** -5 **धारा**-120

2. संविधान के किस भाग में राज्य की विधान सभाओं में कामकाज़ की भाषा के बारे में उल्लेख है।

उ. **भाग** -6 **धारा**-210

3. संविधान के किस भाग में राजभाषा के बारे में उल्लेख किया गया है। उ. **भाग** -17

4. इस भाग में कितने अध्याय हैं। उ. 4 **अध्याय**

5. इस भाग में कुल कितनी धाराएं हैं। उ. **कुल** 9 **धाराएं**

6. पहले अध्याय में कौन-2 सी धाराएं हैं।

धारा-343 **एवं** 344

7. तीसरे अध्याय में कौन-2 सी धाराएं हैं।

उ. **धारा**-348 **एवं** 349

8. दूसरे अध्याय में कौन-2 सी धाराएं हैं।

उ. **धारा**-345, 346 **एवं** 346

9. चौथे अध्याय में कौन-2 सी धाराएं हैं।

उ. **धारा**-350 **एवं** 351

10.संविधान सभा ने कब राजभाषा संबंधी उपबंधों को मंजूरी दी। उ. 14.09.1949

11.कौन-2 सी धाराओं में संघ की राजभाषा के बारे में उपबंध हैं। उ. **धारा**-343 **एवं** 344

12. अदालतों में प्रयोग की जाने वाली भाषा के बारे में किन-किन धाराओं में उल्लेख किया गया है।

उ. **धारा**-348 **एवं** 349

13. राज्य की राजभाषाओं का उल्लेख किस धारा में किया गया है। उ. **धारा**-345

14. कौन सी अनुसूची में भारतीय भाषाओं को रखा गया है।

उ. **आठवीं अनुसूची**

15. इस अनुसूची में कुल कितनी भाषाएं हैं।

उ. **कुल**-22 **भाषाएं**

16. संविधान में प्रथमतः कितनी भाषाएं थीं।

उ. 14 **भाषाएं**

17. अभी तक इसमें कितनी बार नई भाषाएं जोड़ी गई हैं।

उ. 3 **बार**

18. पहली बार इसमें कितनी भाषाएं जोड़ी गई।

उ. **मात्र सिंधी भाषा**

19. पहली भाषा कौन से वर्ष में जोड़ी गई।

उ. 1967 **में**

20. दूसरी बार किस वर्ष में अन्य भाषाएं जोड़ी गई।

उ. 1992 **में**

21. कितनी भाषाएं जोड़ी गई।

उ. **कुल** 3 **भाषाएं**

22. इन भाषाओं के नाम।

उ. **नेपाली, कोंकणी एवं मणिपुरी**

23. कब भाषाएं जोड़ी गई।

उ. **वर्ष**-2003 **में**

24. कुल कितनी भाषाएं जोड़ीं गई।

उ. **कुल** 4 **भाषाएं**

25. इन भाषाओं के नाम।

उ. **बोडो, डोगरी, मैथिली एवं संथाली**

26. धारा-343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा की लिपि क्या है।

उ. **देवनागरी**

27. संविधान के अनुसार हिंदी को राजभाषा का स्थान कब मिल जाना चाहिए था।

उ. 26.01.1965

28. राजभाषा आयोग के गठन के बारे में किस धारा में बताया गया है।

उ. **धारा**-344

29. पहला आयोग कब गठित किया गया।

उ. 1955 **में**

30. इस आयोग के अध्यक्ष।

उ. **बाल गंगाधर खेर**

31. आठवीं अनुसूची का उल्लेख किन-किन धाराओं में किया गया है।

उ. धारा-344 **एवं** 351

32. राजभाषा संसदीय समिति का गठन कब किया गया।

उ. 1957 **में**

33. इस समिति का अध्यक्ष कौन था।

उ. **गोविंद वल्लभ पंत**

34. राजभाषा अधिनियम कब बनाया गया।

उ. 1963 **में**

35. किस पहले प्रधानमंत्री ने संसद में बहस के समय यह आश्वासन दिया कि अहिंदी भाषियों पर हिंदी थोपी नहीं जाएगी।

उ. **जवाहर लाल नेहरु**

36. दूसरे कौन थे।

उ. **लाल बहादुर शास्त्री**

37. तीसरे कौन थे।

उ. **इंदिरा गाँधी**

38. राजभाषा अधिनियम-1963 में कितनी धाराएं हैं ।

उ. **कुल**-9

39. इस अधिनियम के कुछ खंड किस राज्य/राज्यों को लागू नहीं होते ।

उ. **जम्मू और कश्मीर**

40. राजभाषा संकल्प कब जारी किया गया ।

उ. 1968 **में**

41. राजभाषा संबंधी वार्षिक कार्यक्रम किस मंत्रालय एवं विभाग द्वारा जारी किए जाते हैं ।

उ. **राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय**

42. राजभाषा नियम कब जारी किए गए ।

उ. 1976

43. राजभाषा नियम-1976 में कितने खंड हैं ।

उ. **कुल**-12

44. इस नियम के कुछ खंड किस राज्य/राज्यों को लागू नहीं होते ।

उ. **तमिलनाडु**

45. राजभाषा नियम/अधिनियमों के अनुपालन का दायित्व किस पर होता है।

उ. प्रशासनिक प्रधान

46. राजभाषा नियम के किस खंड में इस दायित्व के बारे में बताया गया है ।

उ. खंड-12

47. अंग्रेजी का प्रयोग हिंदी के साथ चलता रहेगा, ऐसा किस नियम या अधिनियम में कहा गया है ।

उ. राजभाषा अधिनियम-1963

48.नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक वर्ष में कितने बार होनी चाहिए।

उ. 2 **बार**

49.राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक साल में कितने बार होनी चाहिए।

उ. 4 **बार**

50.राजभाषा सलाहकार समिति की बैठक साल में कितने बार होती है ।

उ. 4 **बार**

51. राजभाषा नियम 1976 के अनुसार देश को कितने भागों में बाँटा गया है ।

उ. 3 **भागों में**

52. उनके नाम –

उ. **क, ख और ग**

53. क क्षेत्र में कितने राज्य आते है-

उ. 11 **राज्य**

54. ख क्षेत्र में कितने राज्य आते है-

उ. 06 **राज्य**

55. अंडमान निकोबार किस क्षेत्र में आता है।

उ. **क क्षेत्र**

56. अधिनियम की धारा-3(3) के अंतर्गत कितने कागज़ात द्विभाषी जारी किए जाते हैं।

उ. **कुल**-14

57.नोटिस बोर्ड आदि में कितनी भाषाओं का प्रयोग होता है

उ. 3 **भाषाएं**

58. भाषाओं का क्रम बताएं।

उ. क्षेत्रीय, हिंदी एवं अंग्रेजी

59. क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग और कहां पर होता है।

उ. प्रपत्र, स्टेशन उद्घोषणाओं में

60.हिंदी और अंग्रेजी का साथ-साथ प्रयोग कार्यालयों में और कहाँ होता है।

उ. **मुहर,फाइल, रजिस्टरों के शीर्षकों में**

61. भारत सरकार हिंदी प्रशिक्षण के कौन-कौन से पाठ्यक्रम चलाती है।

उ. **प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत**

62. कार्यालयों में प्रयोग होने वाली कौन सी भाषा 8वीं अनुसूची में नहीं है।

उ. **अंग्रेजी**

63. रक्षा मंत्रालय द्वारा की गई संधियाँ व करार द्विभाषी होने चाहिए।

उ. **सही**

64. कौन सी विदेशी भाषा 8वीं अनुसूची में है ।

उ. **नेपाली**

65. कितने % कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान प्राप्त होने पर कार्यालय को राजपत्र में अधिसूचित करवाना होता है।

उ. 80 %

66. इस विशेष दर्जे के कार्यालय को राजभाषा के संदर्भ में क्या संज्ञा दी जाती है ।

उ. **अधिसूचित कार्यालय**

67. अधिसूचना के बारे मे राजभाषा नियम के किस उपनियम में बताया गया है।

उ. **नियम**-10(4)

68. यदि किसी ने हिंदी माध्यम से मैट्रिक या उच्चतर परीक्षा पास की है, उसे हिंदी का कौन सा ज्ञान प्राप्त है ।

उ. **प्रवीण**

69. यदि किसी ने हिंदी विषय से मैट्रिक या उच्चतर परीक्षा पास की है, उसे हिंदी का कौन सा ज्ञान प्राप्त है ।

उ. **कार्यसाधक**

70. हिंदीं जबरन नहीं थोपी जाएगी, ऐसा कहाँ बताया गया है।
उ. **अधिनियम**-3(5)
71. संविधान में अंको के किस रूप को मान्यता दी गई है।
उ. **भारतीय अंको का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप**
72. राष्ट्रपति का राजभाषा संबंधी पहला आदेश कब जारी किया गया। **उ.** 1952
73. इस आदेश में क्या बताया गया।
उ. **राज्यपाल / उच्चतम / उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के नियुक्तियों के अधिपत्र में अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी का प्रयोग,**
74. इस आदेश में और क्या बताया गया।
उ. इन अधिपत्रों में देवनागरी के अंकों का प्रयोग भी किया जाएगा
75. हिंदी शिक्षण योजना कब आरंभ हुई।
उ. 1955
76. राष्ट्रपति का राजभाषा संबंधी दूसरा आदेश कब जारी किया गया।
उ. 1955
77. इस आदेश में क्या बताया गया।
उ. संघ के कुछ अन्य कार्यो में अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी का प्रयोग
78. राजभाषा आयोग का गठन किस अनुच्छेद के तहत किया जाता है।
उ. धारा-344
79. इस आयोग में कौन सदस्य होते हैं।
उ. 8 वी अनुसूची की भाषाओं के प्रतिनिधि
80. संविधान के अनुसार इस आयोग का गठन कितने वर्षों में किया जाता है।
उ. 10 **वर्ष**
81. आयोग अपनी रिपोर्ट किसे प्रस्तुत करता है।
उ. राष्ट्रपति महोदय को
82. राजभाषा समिति का गठन किस अनुच्छेद के तहत किया जाता है।
उ. धारा-344
83. समिति में कितने सदस्य होते हैं।
उ. 30 **सदस्य**
84. ये सदस्य कहाँ से लिए जाते हैं।
उ. 20 **लोक सभा और** 10 **राज्य सभा**
85. इस समिति का क्या कार्य है।
उ. आयोग के रिपोर्ट की समीक्षा कर रिपोर्ट प्रस्तुत करना
86. खेर आयोग ने अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को कब प्रस्तुत की।
उ. 1956
87. पंत समिति ने अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को कब प्रस्तुत की। **उ.** 1959
88. यह समिति अपनी रिपोर्ट के कितने खंड प्रस्तुत कर चुकी है। **उ.** 8 **खंडों में**
89. इस रिपोर्ट पर संसद में बहस पर नेहरु जी ने क्या आश्वासन दिया।
उ. अंग्रेजी का उपयोग बिना किसी समय सीमा के सहभाषा के रूप में होता रहेगा।
90. राष्ट्रपति का राजभाषा संबंधी तीसरा आदेश कब जारी किया गया। **उ.** 1960 **में**
91. इस आदेश की मुख्य बातें क्या थी।
उ. **शब्दावली निर्माण, हिंदी प्रशिक्षण, अनुवाद, विधेयकों की भाषा आदि**
92. अंग्रेजी को सहभाषा का रूप देने के लिए संविधान ने क्या कानूनी व्यवस्था की।
उ. अधिनियम 1963
93. राजभाषा संबंधी दिशा-निर्देश देने वाली सर्वोच्च संस्था का नाम।
उ. केंद्रीय हिंदी समिति
94. इस समिति का गठन कब हुआ।
उ. 1967
95. इस समिति का अध्यक्ष कौन होता है।
उ. प्रधानमंत्री
96. संसद का राजभाषा नीति संकल्प कब जारी किया गया।
उ. 1968
97. इसमें कितने संकल्प लिए गए।
उ. कुल-4
98. संयुक्त राष्ट्र महासंघ की सभा को पहली बार किसने हिंदी में संबोधित किया।
उ. अटल बिहारी बाजपेयी
99. उस समय वे किस पद पर थे।
उ. विदेश मंत्री
100. ये घटना किस वर्ष की है।
उ. 1977
101. किस शिक्षा आयोग ने क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा की वकालत की।
उ. कोठारी

102. राजभाषा नियम-1976 में कब संशोधन हुआ।

उ. 1987

103. किस राज्य की राजभाषा अंग्रेजी है।

उ. नागालैंड

104. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना किस राजभाषा नियम के अंतर्गत अनिवार्य है।

उ. नियम -5

105. स्नातक परीक्षा में हिंदी एक वैकल्पिक विषय के रूप में लेने वाले कर्मचारी के हिंदी ज्ञान का स्तर क्या माना जाएगा।

उ. प्रवीण

106. वार्षिक कार्यक्रम 2016-17 में ग क्षेत्र का मूल पत्राचार का लक्ष्य क्या है।

उ. 55 %

107. कार्यालय में लेखन सामग्री का द्विभाषी होना किस राजभाषा नियम के अंतर्गत है।

उ. नियम-11

108. राजभाषा नियम-8(4) के अंतर्गत किस कर्मचारी को हिंदी में कार्य करने का आदेश दिए जाने का प्रावधान है।

उ. हिंदी में प्रवीण

109. भारत सरकार का राजभाषा विभाग किस मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है।

उ. गृह मंत्रालय

110. ओडिशा किस भाषिक क्षेत्र में आता है।

उ. ग क्षेत्र

111. चंडीगढ़ किस भाषिक क्षेत्र में आता है।

उ. ख क्षेत्र

112. भुवनेश्वर शहर के कार्यालयों में हिंदी डिक्टेशन का % वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार कितना होना चाहिए।

उ. 20 %

113. शिक्षा के क्षेत्र में त्रिभाषा के प्रयोग का उल्लेख कहाँ किया गया है।

उ. राजभाषा संकल्प

114. भुवनेश्वर शहर के कार्यालयों में हिंदी टिप्पण का % वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार कितना होना चाहिए।

उ. 30 %

115. आपके कार्यालय में पुस्तकें खरीदने के बजट का कितना % हिंदी पुस्तकों पर व्यय किया जाना चाहिए।

उ. 50 %

116. आपके कार्यालय के कितने % कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान होना चाहिए।

उ. 100 %

117. राजीव गांधी पुस्तक लेखन प्रोत्साहन योजना में लेख किस विषय से संबंधित होना चाहिए।

उ. ज्ञान विज्ञान एवं समसामयिक

118. यह योजना कब आरंभ की गई थी। **उ.** 2005

119. इस योजना में भारत का कोई भी नागरिक भाग ले सकता हैं सही या गलत। **उ. सही**

120. प्रथम पुरस्कार पर कितनी राशि दी जाती है।

उ. दो लाख रुपए

121. संयुक्त राष्ट्र महासंघ की सभा को अटल बिहारी वाजपेई के बाद पुनः किसने हिंदी में संबोधित किया।

उ. श्री पी.वी. नरसिम्हा राव

122. उस समय वे किस पद पर थे।

उ. विदेश मंत्री

123. यह घटना किस वर्ष की है।

उ. 1988

124. इंदिरा गांधी पुस्तक लेखन प्रोत्साहन योजना में लेख किस विषय से संबंधित होना चाहिए।

उ. कर्मचारियों द्वारा किए गए कार्य से संबंधित

125. इस योजना में सेवारत कर्मचारी ही भाग ले सकते है।

उ. सही या गलत गलत

126. प्रथम पुरस्कार पर कितनी राशि दी जाती है।

उ. चालीस हज़ार रुपए

127. सभी कर्मचारियों को हिंदी में प्रशिक्षित कर लिए जाने का लक्ष्य किस वर्ष तक रखा गया।

उ. 2015 तक

128.राजभाषा विभाग ने वेबसाइट के माध्यम से प्रबोध,प्रवीण,प्राज्ञ प्रशिक्षण के लिए किस कंप्यूटर प्रोग्राम का उपयोग किया है।

उ. लीला

129. राजभाषा विभाग ने अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद के लिए कौन सा सॉफ्टवेयर बनाया है।

उ. मंत्र

130. हिंदी स्पीच से हिंदी टेक्स्ट में टाइप करने के लिए राजभाषा विभाग ने कौन सा सॉफ्टवेयर बनाया है।

उ. श्रुत लेखन

आप क्या कर सकते हैं

- उपस्थिति पंजिका में हस्ताक्षर हिंदी में कर सकते हैं।
- सभी प्रकार की छुट्टियों का आवेदन हिंदी में कर सकते हैं।
- डाक रजिस्टर में प्रविष्टियाँ हिंदी में कर सकते हैं।
- लिफ़ाफों पर पते हिंदी में या द्विभाषी में लिख सकते हैं।
- फ़ाइलों, रजिस्टरों, फोल्डरों आदि पर विषय हिंदी में लिख सकते हैं।
- फ़ाइलों पर टिप्पणी हिंदी में लिख सकते हैं।
- सभी कार्यालयीन दस्तावेज़ों पर हिंदी में हस्ताक्षर कर सकते हैं।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में देना अनिवार्य हैं।
- धारा 3(3) के अंतर्गत सभी पत्राचार द्विभाषी में जारी करना अनिवार्य हैं।
- रबड़ की मोहरें, बोर्ड, नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्र शीर्ष (लैटर हैड), विजिटिंग कार्ड आदि द्विभाषी हों।
- कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, व्याख्यानों आदि के बोर्ड एवं बैनर, निमंत्रण पत्र, पोस्टर आदि सामग्री द्विभाषी हों।
- जिन स्थानों पर द्विभाषी सूचनाएं लगाई जाएं उन सभी स्थानों पर हिंदी ऊपर और अंग्रेजी नीचे लिखी होनी नियमतः अनिवार्य है।
- सभी फार्मों का द्विभाषी रूप ही प्रयोग करें।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में प्रशासनिक प्रधान अवश्य हिस्सा लें।
- कार्यालयों में आयोजित हिंदी पखवाड़ा, हिंदी सप्ताह एवं हिंदी दिवस के दौरान आयोजित गतिविधियों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लें।

- संपादन समिति